# the चिरकुट्स

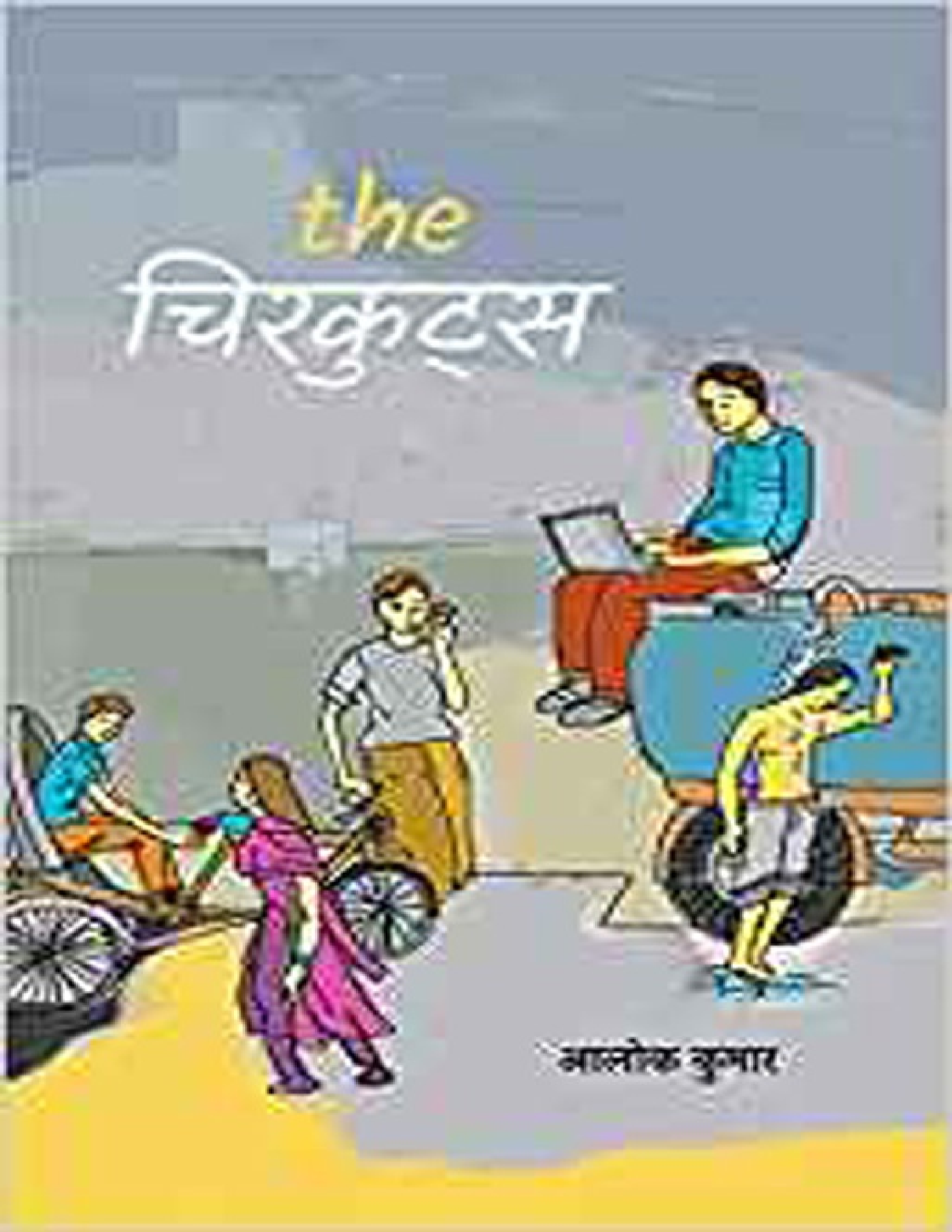

आलोक कुमार

VISIT…

# the चिरकुट्स

(उपन्यास)

# the चिरकुट्स

आलोक कुमार

**ISBN :** 978-93-84419-75-2

**प्रकाशक :**
हिन्द-युग्म
201 बी, पॉकेट ए, मयूर विहार फ़ेस-2, दिल्ली-110091
मो.- 9873734046, 9968755908

**आवरण-चित्र:** मिठाई लाल
**कला-निर्देशन :** विजेंद्र एस विज

**पहला संस्करण : 2017**

© आलोक कुमार

The Chirkuts
(A novel by Alok Kumar)

Published By
Hind Yugm
201 B, Pocket A, Mayur Vihar Phase 2, Delhi-110091
Mob : 9873734046, 9968755908
Email : sampadak@hindyugm.com

Website : www.hindyugm.com

**First Edition : 2017**

माँ के लिए
जिन्होंने ‘क’ बोलना सिखाया

पापा के लिए
जिन्होंने ‘क से कलम’ पकड़ाई

दोस्तों के लिए
जिन्होंने ‘क से कहानियाँ’ दिखाईं

# घर वापसी

...तो होंठों को कर के गोल, सीटी बजा के बोल, आल इज वेल...

“हैलो!”

“अबे अभी तक सो रहा है। जल्दी से मेरे कमरे पर पहुँच, तुझे कुछ बताना है। बहुत urgent है।”

“अब क्या हो गया? फिर कुछ problem हुई है क्या?”

“नहीं यार। चिन्ता की कोई बात नहीं है। बस तू जल्दी से आ जा।”

“ठीक है, मैं अभी पहुँचता हूँ।”

“और हाँ, एक बात और, रिंगटोन बड़ी अच्छी है। motivating है। कब लगाई?”

“बस यार, इतना सब होने के बाद सोचा कि अब motivation की जरूरत है तो यह रिंगटोन लगा ली। चल अब फोन रख, मैं फटाफट निकलता हूँ।”

इतना कहकर अमित ने फोन रख दिया। मैंने भी सामने रखी नाश्ते की प्लेट पर नजर दौड़ाई। आज नाश्ते में हलवा-पूड़ी थी। मैं जानता था कि माला जब खुश होती है, तब हलवा-पूड़ी बनाती है। कल रात को जब पहली बार घर से फोन आया था, तब से ही माला बहुत खुश थी। खुशी तो मुझे भी थी, लेकिन उसकी खुशी का लेवल अलग ही था। वह सुबह जल्दी उठकर मंदिर भी गई थी। शायद वह भगवान को शुक्रिया कहने गई हो, क्योंकि पिछले कुछ दिनों में जो भी हुआ था, वह तो किसी ने भी नहीं सोचा होगा। मेरा मन भी आज बहुत हल्का लग रहा था। कई दिनों बाद आज मुझे नाश्ता करने का मन कर रहा था। ऐसा लग रहा था कि बहुत दिनों से मैंने कुछ भी नहीं खाया है। पिछले कुछ दिनों में तो मैं बस इसलिए खा रहा था कि जो कुछ भी हो रहा है, उसे झेलने की थोड़ी ताकत मिल सके। मैं यह भी जानता था कि माला तो उतना भी नहीं खाती है। वह तो बस मेरा मन रखने के लिए थोड़ा-बहुत कुछ मुँह में डाल लेती थी। हमने जो कुछ भी किया था, उसका उसे बहुत अफसोस था।

माला मेरे सामने खड़ी थी। मैंने एक निवाला तोड़कर अपने मुँह में डाल लिया। आज मुझे नाश्ता बहुत अच्छा लग रहा था। ऐसा लग रहा था कि कई दिनों की भूख आज पूरी हो रही है। माला के चेहरे पर भी निश्चिंतता के भाव थे। मुझे तसल्ली से खाता हुआ देखकर वह मेरी बगल में बैठ गई। मैंने भी उसका हाथ अपने हाथों में ले लिया। उसके होंठ मुस्करा रहे थे, पर उसकी आँखों से लग रहा था कि वह अभी थोड़ी देर पहले ही रो रही थी। वह यह जानती थी कि जब भी मैं उसे रोता हुआ देखता हूँ, तो मुझे ऐसा लगता हैं कि मैंने जो कुछ भी किया वह गलत किया। इसलिए उसे जब भी रोने का मन होता था, वह बाथरूम में छुपकर रोती थी। अपने कॉलेज के दिनों में जब मैं किसी मूवी में हीरोइन को बाथरूम में रोते हुए देखता था, तब मुझे यह एक बेवकूफी लगती थी। पर अब मैं इसका मतलब समझने लगा था। शायद मैं बहुत सारी बातें समझने लगा था।

माला मेरी बगल में बैठी हुई थी। उसने अपना सिर मेरे कंधे पर रख दिया था। शायद वह अपनी आँखें मुझसे छुपाना चाहती थी, जो बहुत अधिक रोने के कारण लाल हो गई थीं। मैंने उसके बालों को सहलाते हुए पूछा— "अब क्यों रो रही थी? अब तो सबकुछ खत्म होने वाला है।"

"ये खुशी के आँसू हैं।" उसने अपना सिर मेरे कंधे पर से उठाया और मेरी आँखों में देखकर कहा।

मैं नाश्ता खत्म कर चुका था। माला प्लेट लेकर किचन में चली गई और मैं बैग में से लैपटॉप निकालकर उसे ऑन कर रहा था कि तभी माला मेरे पास आई और बोली— "मैं जरा बाहर से आती हूँ। कुछ काम है।"

इससे पहले कि मैं कुछ पूछता, वह दरवाजा खोलकर बाहर निकल गई।

थोड़ी देर बाद अमित मेरे सामने बैठा था। वह परेशान लग रहा था। शायद वह यह सोच रहा था कि फिर से कुछ नया घटा है और कोई समस्या खड़ी हो गई है। अब उसे फिर से कोई नया प्लान बनाना होगा। वैसे पिछले कुछ दिनों में मैंने जो कुछ भी किया था, उसने सबको परेशान करके रख दिया था। पर सच बताऊँ, मैं अपने दोस्तों का एहसानमंद था, क्योंकि उन्होंने मेरा साथ तब दिया, जब मेरे अपनों ने किनारा कर लिया।

अमित ने मुझ से पूछा— "क्या बात है, बता, कुछ सीरियस तो नहीं है?"

"हम घर जा रहे हैं।" मैंने कहा।

यह सुनकर जैसे उसे झटका लगा।

"अबे, तबियत तो ठीक है तेरी!" उसने मेरे माथे पर हाथ रखते हुए पूछा।

मैंने उसका हाथ अपने सिर पर से हटाया और बोला— "चल, अब ओवर एक्टिंग मत कर और मेरी पूरी बात सुन। कल रात घर से फोन आया था। मम्मी की तबियत ठीक नहीं है।

हमें घर वापस बुलाया है। सब लोग मान गए हैं।"

यह सुनकर अमित की शक्ल ऐसी हो गई, जैसे कॉलेज में उसके HOD ने बुलाया हो। वह सोच में पड़ गया। मैंने उसके सिर पर हौले से चपत लगाकर उसे जगाया और कहा— "क्या हुआ, कुछ बोलेगा भी?"

"पता नहीं यार, पर मुझे डर लग रहा है। जब मैंने उस दिन तेरे पापा से बात की थी, तब तो ऐसा नहीं लगा था कि वे इतनी जल्दी मान जाएँगे।"

"घबराने की कोई बात नहीं है यार। कितना भी गुस्सा हों, पर हैं तो मेरे पापा ही ना। मैं जानता था कि कुछ दिनों में सब ठीक हो जाएगा। अब भागने के दिन खत्म हो गए हैं।" मैंने उसे समझाया।

यह सुनकर उसके चेहरे पर आई रिलैक्स्ड फीलिंग मैं साफ-साफ देख सकता था। पिछली दिनों में मैंने उसे काफी परेशान जो कर दिया था।

उसने अपने फेफड़ों में ऐसे साँस भरी, जैसे 'मशीन डिजाइन' का असाइनमेंट पूरा कर लिया हो। उसके बाद वह खुशी से बोला— "ठीक है यार। तू कहता है कि सब ठीक है, तो मान लेता हूँ। फिर तो यह खुशखबरी है। सैंडी और ऐडी को बताया कि नहीं? वे भी बहुत परेशान थे।"

"नहीं, अभी किसी को नहीं बताया है।" मैंने ना में सिर हिलाकर कहा। अंदर-अंदर यह ख्याल भी आया कि उन्हें भी इन्फॉर्म कर देना चाहिए था। इस सबमें वे भी तो मेरे साथ थे। अभी कुछ दिनों के लिए वे चंडीगढ़ गए हुए थे। मैंने फोन उठाते हुए कहा— "मैं तो टिकट बुक कर रहा था, इसलिए टाइम नहीं मिला। अभी बता देता हूँ।"

"रहने दे, मैं बता दूँगा।" अमित ने मेरे हाथ से मोबाइल लेकर नीचे रख दिया और मुझसे पूछा— "टिकट भी बुक कर लिया। लगता है जितनी जल्दी घर से आने की थी, उतनी ही जल्दी जाने की भी है। अच्छा है। चल ये बता कि कब जा रहा है?"

मैंनें कहा— "बस आज ही। शाम की ट्रेन है।"

यह सुनकर वह बेफिक्री से बोला— "एक perfect love story की perfect ending।" कोई और हेल्प चाहिए तो बोल दे।"

मैंने गहरी साँस लेते हुए कहा— "नहीं यार। वैसे भी तुम सब ने जो किया है, वह तो मेरे अपने भी नहीं करते। thank you दोस्त।"

"अबे कर दी न गैरों वाली बात! साले, हम तेरे अपने नहीं हैं क्या? शाहरुख चचा कितनी बार बोले हैं, पर तुम लोग हो कि समझते ही नहीं हो— friendship में no sorry, no thank you। चल अब तैयारी कर। शाम की ट्रेन है ना। हम ऑटो लेकर आ जाएँगे। सैंडी और ऐडी भी आज पहुँचने वाले हैं। उनसे भी मिल लेगा।" यह कहकर अमित खड़ा हो

गया और जाने लगा। दरवाजे पर पहुँचकर वह रुक गया, जैसे उसे कुछ याद आया हो और मेरी तरफ मुड़कर पूछा— “दीदी कहाँ हैं? जब से आया हूँ, दिखाई नहीं दीं?”

“वह बाहर किसी काम से गई है। आती ही होगी।” मैंने बताया।

“ठीक है, फिर शाम को मिलते हैं।” यह कहकर वह बाहर चला गया।

मैं अंदर आकर बैठ गया और सोचने लगा कि आज से चार साल पहले तक हम एक-दूसरे को जानते भी नहीं थे और आज मेरे ये दोस्त मेरे अपनों से बढ़कर हैं। कॉलेज कुछ और दे न दे, जिंदगीभर के लिए दोस्त जरूर देता है।

# आई भिल डाई टुडे...

“प्यार तो बस फिल्मों में ही होता है। असल में ऐसा कुछ नहीं होता। इसलिए मेरी बात मान मेरे दोस्त और कॉलेज में पढ़ाई कर। लड़की पटाने का सपना देखना बंद कर दे।”

“देख, मैं तुझे सच बताता हूँ। मुझे तो एक गर्लफ्रेंड बनानी ही है। मैं यही सपना लेकर कॉलेज में आया हूँ और मैं यह करके रहूँगा। तू पढ़ाई कर और बाद में मुझे भी पढ़ा देना।”

फर्स्ट ईयर में मेरे रूम पार्टनर संदीप, जिसे हम प्यार से सैंडी कहते थे, ने अपने कॉलेज आने का motive मुझे बता दिया था। उसका शायद हमेशा से एक ही सपना था कि शाहरुख खान की फिल्मों की तरह वह भी लड़कियों से घिरा रहे। पर उसके इस सपने पर उसके पापा ने मि. इंडिया के अमरीश पुरी बनकर तब पानी फेर दिया, जब उसका एडमिशन को-एड में कराने के बजाय लड़कों के स्कूल में करा दिया। अब जब उसका सपना स्कूल में पूरा ना हो सका, तो उस सपने को अपने कंधे पर बैठाकर वह कॉलेज में ले आया था। वह यह जानता था कि अगर वह कॉलेज में भी घर पर ही रहा, तो उसका यह सपना उसके पुरी साहब कभी पूरा नहीं होने देंगे। इसलिए उसने एडमिशन के लिए हो रही काउंसिलिंग में जान-बूझ कर अपने घर से दूर के कॉलेज का ऑप्शन दिया, ताकि उसे हॉस्टल में रहने का मौका मिले और वह अपने सपने को पूरा करने की कोशिश कर सके।

आज तो हम चारों— मैं, सैंडी, ऐडी उर्फ आदिल और अमित बहुत अच्छे दोस्त थे, पर एक टाइम वह भी था जब हम पहली बार मिले थे। मुझे अब भी याद है, जब मैं एडमिशन के दो दिन बाद हॉस्टल में रहने आया था। कमरे में दाखिल होते ही मैं सैंडी, ऐडी और अमित से मिला। तीनों के बाल इस प्रकार से कटे हुए थे, जैसे किसी ने सिर पर उल्टा कटोरा रखकर बाल साफ किए हों। मैं इन तीनों में से किसी को भी नहीं जानता था। मैंने उन्हें ‘हैलो’ कहा और बिस्तर पर अपना बैग रख दिया। ऐडी और अमित मेरे साथ वाले कमरे में रहते थे। उन सबके बालों का यह हश्र कॉलेज में सीनियर द्वारा बनाए गए नियमों के कारण हुआ था। रैगिंग के आतंक से भयभीत, पहली बार हॉस्टल में घुसते ही मेरी नजर सबसे पहले दीवार

पर लिखे हुए उस वाक्य पर पड़ी थी—

'रैगिंग एक दंडनीय अपराध है। – माननीय उच्चतम न्यायालय'

उसे पढ़ने के बाद डर थोड़ी देर के लिए बाहर निकलकर शायद क्रिकेट देखने चला गया था। पर जैसे ही मैंने अपने कमरे में बैठे हुए उन तीन लड़कों को देखा, मैं समझ गया कि रैगिंग को खत्म किया जा सकता है, पर उसके आतंक को नहीं। उसी समय मेरा डर फिर से मेरे मन के अपने कमरे में आकर पसर गया।

उन तीनों ने मुझे नियम बताए, जो माँ के कंगन की तरह साल-दर-साल फर्स्ट ईयर के स्टूडेंट्स को बताए जाते थे। इन नियमों को 'Declaration of independence' कहा जाता था। अगर कॉलेज में आजादी से घूमना है, तो इनका पालन करना पड़ेगा। वरना कोई भी सीनियर, जब चाहे, जहाँ चाहे आपको अपना पंचिंग बैग मानकर दो-चार लात-घूँसे बरसा सकता है।

वे नियम थे—

- सिर के बाल इतने छोटे होने चाहिए कि हाथ में न आ सकें।
- दाढ़ी-मूँछें एकदम सफाचट होनी चाहिए।
- सिर्फ सफेद शर्ट जिसका तीसरा बटन लाल रंग का हो और काली पैंट ही पहन सकते हैं (इसके अलावा अगर कुछ और पहना, तो फिर सबकुछ उतरवा दिया जाएगा)।
- स्पोर्टस शूज पर बैन है।
- पैंट की दाहिनी जेब में एक डायरी होनी चाहिए, जिस पर आपके सीनियर्स के बारे में पूरी जानकारी हो (यह जानकारी सिर्फ एक बार आपको सीनियर्स द्वारा दी जाएगी) और बाईं जेब में एक कंडोम का पैकेट होना चाहिए।

हॉस्टल में सिक्युरिटी के कारण तो सीनियर्स अंदर नहीं आ सकते थे, पर कॉलेज जाते समय रास्ते में उस ट्रैफिक पुलिस वाले की तरह मिल जाते थे, जो वैसे तो आपको कहीं भी नहीं दिखाई देगा, पर जैसे ही आप सिग्नल तोड़ेंगे, आपके सामने प्रकट हो जाएगा। वही कुछ मिनटों का समय होता था, जब वे अपने साथ हुई रैगिंग की भड़ास हम बेचारे जूनियर्स पर निकाल सकते थे। हम तो कॉलेज में यह सोचकर आए थे कि वहाँ पर इंजीनियर बनेंगे, पर ये स्साले सीनियर्स हमें कुछ और ही बनाने पर तुले होते थे।

कुछ दिनों तक तो हम उन भूतिया सीनियर्स से बचते रहे। पर गब्बर के अड्डे पर बसंती कितने दिन बिना नाचे रह सकती थी। एक न एक दिन तो उसे इन कुत्तों के सामने नाचना ही था। शायद वही दिन हमारा भी आया, जब हमें NCC और NSS में सलेक्शन के नाम पर कॉलेज ग्राउंड में ले जाया जाने लगा। हम सब लाइन बनाकर हॉस्टल के गेट से बाहर निकले, तभी मेस में काम करने वाले एक लड़के ने कहा— "जाइए सर। आज आप

लोगों के सारे 'फंडे क्लियर' हो जाएँगे।" हम चारों में से किसी की समझ में नहीं आया कि ग्राउंड में कौन-से और कैसे फंडे क्लियर होंगे। हम तो बस सिर झुकाए लाइन बनाकर कॉलेज ग्राउंड की तरफ चले जा रहे थे।

चटाक। चटाक। चटाक।

जैसे ही हम कॉलेज ग्राउंड में पहुँचे, किसी जूनियर के गाल पर पड़े तीन थप्पड़ों की गूँज ने हमारा स्वागत किया। वहाँ का माहौल ही एकदम अलग था। ऐसा लग रहा था, जैसे हम हिटलर के सैनिकों के बीच में खड़े हों। हर तरफ चार-चार, पाँच-पाँच सीनियर्स के झुंड थे और उनके बीच में एक जूनियर सिर झुकाए खड़ा था। यह NCC और NSS में सेलेक्शन के नाम पर होने वाली official रैगिंग थी। इस रैगिंग के बारे में कॉलेज का हर प्रोफेसर जानता था और इसका समर्थन भी करता था। प्रोफेसर्स का यह मानना था कि रैगिंग कॉलेज में डिसीप्लिन बनाए रखने का सबसे असरदार साधन है। इसलिए रैगिंग पर रोक होने के बावजूद हमारे 'फंडे क्लियर' हो रहे थे। हर कॉलेज की अपनी एक डिक्शनरी होती है, जिसमें ऐसे शब्द होते हैं जिन्हें उस कॉलेज में पढ़ने वाले ही समझ सकते हैं। और हमारे कॉलेज की डिक्शनरी के हिसाब से 'फंडे क्लियर' करने का मतलब होता था— जूनियर के गाल पर पड़ने वाले सीनियर के तमाचे। सीनियर थप्पड़ मारता रहता था और जूनियर को गिनना होता था। बीच-बीच में जब सीनियर यह पूछे कि कितने 'फंडे क्लियर' हुए, तब जूनियर को यह बताना होता था कि उसे कितने थप्पड़ पड़े हैं।

यह सब देखकर हमारे पसीने छूट गए। अमित ने जब यह सुना कि अभी-अभी किसी जूनियर के डेढ़ सौ 'फंडे क्लियर' हुए हैं, तब वह लगभग गिड़गिड़ाती हुई आवाज में ऐडी से बोला— "अबे हम तो मर जाएँगे बे। आई भिल डाई टुडे।"

अमित अँग्रेजी सीखने की कोशिश में लगा रहता था। उसके माँ-बाप के मन में यह ख्वाहिश थी कि उनका बेटा प्राइवेट स्कूल के बच्चों की तरह फर्राटेदार अँग्रेजी बोले। पर उनकी जेब में इतने पैसे नहीं थे कि उसका दाखिला प्राइवेट स्कूल में करा पाते। वे बस इतना ही कर सकते थे कि उसके लिए हर बसस्टैंड और रेलवे स्टेशन पर आसानी से मिलने वाली 'रैपिडेक्स इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स' की किताब खरीद दें। अमित कुछ समय तक तो उन किताबों से 'हाउ आर यू' और 'हू आर यू' में अंतर सीखने की कोशिश करता रहा, पर बहुत जल्द उसे यह बात समझ में आ गई कि अगर किताब पढ़ने से ही अँग्रेजी बोली जा सकती, तो हमारे देश में चाय की दुकान पर बैठकर पूरा-पूरा दिन अखबार पढ़ने वाले लोग कबका अँग्रेजी न्यूज चैनल के ऐंकर बन गए होते। इसलिए उसने किताब का सहारा छोड़ दिया था और इस रास्ते पर चल पड़ा था कि अगर अँग्रेजी बोलना सीखना है, तो उसे बोलना पड़ेगा। जो आता है, जितना आता है, बोलो। बस एक समस्या थी, वह 'बिहारी इंग्लिश' बोलता था, जिसे सुनकर कभी-कभी तो अँग्रेज भी चकरा जाएँ। उसकी इंग्लिश में 'वी' नहीं, 'भी' होता

था। जब कभी हम उसकी अँग्रेजी सुनकर हँस देते, तब वह गुस्से में कहता— "नाव यू लाफ भट वन डे यू भिल अंडरस्टैंड।"

"आई भिल पक्का डाई टुडे।" अमित ने फिर कहा।

कोई और दिन होता, तो ऐडी उसकी बात सुनकर जरूर हँस दिया होता। पर आज हमारी हँसी पसीने की उस बूँद के रूप में निकली थी, जो सिर से शुरू होती है और गले से नीचे उतरकर, पीठ पर गुदगुदी करते हुए अंडरवियर में घुस जाती है। हमारी हँसी भी अंडरवियर में घुस गई थी।

उसकी यह बात सुनकर मुझे एक आइडिया आया। मैंने उन तीनों से कहा— "कुछ नहीं होगा। तुम लोग बस मेरे साथ रहना और मुझे रूम तक ले जाना..." और मैंने उन्हें अपना प्लान बताना शुरू किया।

"आओ अंकल।" अभी मैं अपना प्लान समझा पाता, उससे पहले ही एक मरियल-सी आवाज सुनाई दी। यह हमारा कोई सीनियर था जो मुझे बुला रहा था। मैं कुछ सोचता, उसके पहले फिर से उसकी आवाज आई, जो वैसे तो चूहे की चिंचियाहट जैसी थी, पर उस समय शेर की दहाड़ लग रही थी—"लगता है तेरे 'फंडे क्लियर' नहीं हैं, तभी ये मूँछें बचा रखी हैं।" वह मेरी मूँछों की तरफ इशारा करके बोला।

बात तो उसकी सही थी। मैंने अभी तक अपनी मूँछों को साफ नहीं किया था। मेरे घर के रिवाज के मुताबिक बाप के मरने के बाद ही मूँछें कटती हैं, इसलिए मैं इन्हें काट नहीं सकता था। पर कॉलेज में घर के रिवाज नहीं चलते हैं। यहां तो 'Declaration of independence' ही रिवाज था और रीति भी।

मैंने 'Declaration of independence' का वॉयलेशन किया था और उसके पहरेदार, यानी सीनियर ने मुझे पकड़ भी लिया था। मेरी मूँछें ही आज मुझे मरवाने वाली थीं। मैं तो यह सोच रहा था कि अच्छा हुआ जो मैंने श्री अमिताभ बच्चन जी की वह बात नहीं मानी थी, जिसमें उन्होंने यह कहा था कि मूँछें हों तो नत्थूलाल जी जैसी, वरना ना हों। यह गनीमत थी, जो मैंने वैसी मूँछें नहीं रखी थीं। आज जब मेरी मूँछों का साइज राजपाल यादव जितना है, तब यह इतने गुस्से में है। अगर कहीं इनका आकार खली जितना होता, तब यह मेरा क्या हाल करता!

"क्यों बे अंकल! 'Declaration of independence' नहीं पढ़ा क्या?" मेरे कानों में उस चूहे टाइप शेर, सीनियर की आवाज फिर से सुनाई दी। मैंने कुछ कहने कि लिए मुँह खोला ही था कि मेरे कान के नीचे उसी सीनियर का एक थप्पड़ पड़ा और फिर थोड़ी देर के लिए कुछ भी सुनाई देना बंद हो गया।

मेरा एक 'फंडा क्लियर' हो गया था।

मैंने अमित को देखा और सोचा 'ही भिल नाट डाई टुडे' और तुरंत ही अपना प्लान एक्टिवेट कर दिया।

अगले ही पल मैं जमीन पर पड़ा था। सैंडी मेरे चेहरे पर अपने रुमाल से हवा कर रहा था और उस मरियल सीनियर के चेहरे की हवाइयाँ उड़ी हुई थीं। शायद वह भी यह जानता था कि चाहे प्रोफेसर कितना भी साथ दें, पर रैगिंग अब भी एक दंडनीय अपराध ही है।

थोड़ी देर में कई सीनियर्स मेरे आस-पास इकट्ठा हो गए। अमित और ऐडी भी सैंडी के पास खड़े थे। और मैं इन सबके बीच में बेहोशी का नाटक करते हुए चुपचाप पड़ा था। तभी एक सीनियर ने अमित से कहा— "तू खड़ा-खड़ा क्या देख रहा है, थोड़ी हवा मार इसके मुँह पर।"

अमित ने तुरंत अपनी बाईं जेब में हाथ डाला, तो कंडोम का एक पैकेट बाहर आया। अभी वह उस पैकेट को वापस जेब में रखता, उसके पहले ही वह सीनियर उस पर चिल्लाया — "स्साले, कंडोम से हवा करेगा...।"

"आई... सारी... सर।" कहकर अमित ने फटाफट वह पैकेट वापस जेब के हवाले किया और दाईं जेब में रखी डायरी में से एक पन्ना फाड़कर मेरे चेहरे पर उससे हवा करने की कोशिश करने लगा।

कुछ सीनियर उस मरियल सीनियर से बातें कर रहे थे। शायद वो 'क्या हुआ है' यह जानना चाहते थे। उसके चेहरे पर हवाइयाँ अब भी उड़ रही थीं। पूरे ग्राउंड में फंडे क्लियर करने का जो कार्यक्रम चल रहा था, वह समाप्त हो चुका था। कुछ फट्टू टाइप के सीनियर खिसक चुके थे। तभी फाइनल ईयर के छात्रों का एक गुट, जिन्हें 'सुप्रीम सीनियर्स' कहा जाता है, वहाँ आया। वो लोग 'The Taj' (हमारे कॉलेज की कैंटीन) में बैठकर चाय पी रहे थे और शायद दूर से इस सारे 'कार्यक्रम' का मजा ले रहे थे। आखिर उन लोगों ने भी यह सबकुछ सहा और किया होगा। जैसे कुछ बुद्धिजीवी बुढ़ापे में संन्यास ले लेते हैं, वैसे ही सीनियर्स भी 'सुप्रीम सीनियर्स' बनने के बाद रैगिंग से संन्यास ले लेते हैं। वे तो बस दूर से ही सीनियर्स के इस कार्यक्रम और जूनियर्स के क्रियाकर्म का आनंद उठाते हैं। ग्राउंड में अचानक बदले हुए दृश्य को देखकर शायद उन्हें यह लगा होगा कि कुछ गड़बड़ है, इसलिए वो देखने चले आए थे।

जैसे ही उन्हें यह पता लगा कि यहाँ पर क्या 'रायता फैला है', उन्होंने तुरंत ही इस रायते को फैलाने वाले उस 'कुक' यानी कि उस सीनियर को वहाँ से रवाना कर दिया। अब वे इस सिचुएशन को संभालने में लग गए। उनमें से एक ने सभी जूनियर्स को एक तरफ लाइन में खड़ा करवा लिया। दो लोग मेरे पास आए और मुझे देखने लगे। उन्होंने सैंडी, अमित और ऐडी, जो मेरे पास ही थे, को ऑर्डर दिया— "इसे तुरंत ही इसके कमरे में ले जाओ और किसी को भी कुछ बताने की गलती मत करना। अगर कोई पूछे, तो कहना कि अपने आप

ही बेहोश हो गया।" उन तीनों ने अपनी गरदन में लगी हुई स्प्रिंग को हाँ में हिलाया। यह स्प्रिंग सभी फर्स्ट ईयर के स्टूडेंट्स की गरदन में लगी होती है, जो सीनियर की सभी बातों पर हाँ में ही रिएक्ट करती है।

वो तीनों तुरंत ही मुझे शहीद हुए बकरे की तरह टाँगकर हॉस्टल की तरफ चल पड़े। अमित और ऐडी ने मेरे हाथ पकड़ रखे थे और सैंडी ने मुझे पैरों से उठा रखा था।

जब वो मुझे लेकर ग्राउंड से इतनी दूरी आ गए कि अब कोई सीनियर हमें नहीं देख सकता था, तब मेरे लिए हँसी रोक पाना मुश्किल हो गया और मैं ठहाके मारकर हँसने लगा। मुझे अचानक हँसता हुआ देखकर उन बेचारों को कुछ समझ ही नहीं आया। शायद उन्हें लगा कि अब कोई नई मुसीबत आई है।

"देखा, मैंने कहा था ना कि कुछ नहीं होगा। चलो अब मुझे नीचे उतारो।" मैंने उन तीनों से कहा। वे अब भी अजीब-सी नजरों से कभी मुझे, तो कभी एक-दूसरे को देख रहे थे। इससे पहले कि मैं दुबारा कुछ कहता, अचानक सैंडी ने मेरे पाँव जमीन पर पटक दिए और जोर से कहा— "अबे इसको कुछ नहीं हुआ है। स्साला नाटक कर रहा था। चिरकुट कहीं का।"

"हाँ, पर इसी चिरकुट के नाटक की वजह से ही आज तुम्हारे फंडे क्लियर होने से बचे हैं।" मैंने अपने शरीर पर से मिट्टी झाड़ते हुए कहा। अब ऐडी और अमित ने भी मुझे छोड़ दिया था। उन्हें भी सारी बात समझ आ गई थी कि मैं बेहोश नहीं हुआ था, बल्कि नाटक कर रहा था।

"ठीक है, पर थोड़ा पहले उठ गया होता। साला कमर टूट गई। क्या खाता है बे!" ऐडी ने कहा।

"बेटा, अभी तो मुझे हॉस्टल तक उठाकर ही ले जाना होगा। कहीं किसी ने देख लिया कि मैं बिल्कुल ठीक हूँ, तो जानते हो ना कि सीनियर मेरा क्या हाल करेंगे?" और यह कहकर मैं फिर से सड़क पर लेट गया।

"ही इझ राइट।" कहकर अमित दुबारा मुझे कंधे से उठाने की कोशिश करने लगा और सैंडी से बोला— "बात तो यह ठीक कह रहा है। आज इसने हमें बचा लिया। अब हमारा इतना तो फर्ज बनता है कि हम इसे कमरे तक पहुँचा दें। चलो उठाओ।" चारों ने फिर से मुझे लाद लिया और 'राम नाम सत्य है' का जाप करते हुए मुझे हॉस्टल की तरफ ले चले। उसके बाद हमारी दोस्ती इतनी गहरी हो गई कि हमने अपने ग्रुप का एक नाम रख लिया— द चिरकुट्स।

# वेन मिल्क कमिटेड सुसाइड

जिंदगी कट नहीं रही थी, बल्कि बहुत अच्छी बीत रही थी। जब जिंदगी में कुछ मजा ना हो तब वह 'कटती' है और हमें 'काटती' है, पर जैसे ही उसमें कुछ अच्छे दोस्त आ जाएँ, वह 'बीतने' लगती है। ऐसा लगता है, जैसे जिंदगी बीतना is directaly proportional to अच्छे दोस्त। इसलिए शायद जिंदगी में जितने अधिक अच्छे दोस्त होते हैं, वह उतनी ही तेजी से निकलती है।

हम अब सीनियर हो गए थे। मेरी उस नौटंकी के बाद NSS और NCC में सेलेक्शन के नाम पर जूनियर्स के फंडे क्लियर करने की परंपरा समाप्त हो चुकी थी।

अब हमें सिंगल रूम मिले थे। हम चारों के कमरे एक ही कतार में थे और हर दरवाजे के बाहर नेमप्लेट की जगह 'द चिरकुट्स' की पर्ची लगी थी।

अमित की अँग्रेजी सीखने की कोशिश चालू थी और सैंडी कोई लड़की पटाने की फिराक में था।

ऐडी ज्यादा बात नहीं करता था और अपने लैपटॉप में ही व्यस्त रहता था। एक बार उसने बताया था कि उसकी एक गर्लफ्रेंड हुआ करती थी। किसी दिन जब वे दोनों पार्क में बैठे थे, तो उस लड़की के भाई ने उन्हें देख लिया। तब उसने अपने दोस्तों के साथ मिलकर ऐडी की इतनी पिटाई की कि वह दो महीने तक अस्पताल में ही पड़ा रहा। उसके बाद उसने अपनी गर्लफ्रेंड को फिर कभी दुबारा नहीं देखा। उसका कहना था कि उस लड़की के घर वालों ने ही गला दबाकर उसे मार दिया था, क्योंकि उनके हिसाब से उसने उनकी इज्जत मिट्टी में मिलाने की कोशिश जो की थी। वह तो यह भी कहता था कि उन लोगों ने उसे भी मारने की धमकी दी थी। इसी के चलते उसके पापा ने उसे अपने गाँव से दूर, इस कॉलेज में भेज दिया। वह कभी घर नहीं जाता था, बल्कि उसके पापा ही उससे मिलने आते थे। अब उसे लड़कियों में कोई खास इंटरेस्ट नहीं था। उसका एक ही सपना था कि वह इंजीनियर बनकर गूगल में नौकरी करे और अपने माँ-बाप को लेकर विदेश चला जाए। जब उसे

कंप्यूटर ब्रांच नहीं मिली, तो वह बहुत दुखी हो गया था। हालाँकि बाद में यह पता लगने के बाद कि गूगल में नौकरी करने के लिए कंप्यूटर ब्रांच नहीं, कंप्यूटर नॉलेज जरूरी है, वह हमेशा ही कंप्यूटर में कुछ-न-कुछ सीखता रहता था। वह हमारे ग्रुप का 'टेक मास्टर' था।

ऐडी की ही तरह मुझे भी लड़कियों में कोई खास इंटरेस्ट नहीं था। मुझमें और उसमें बस एक अंतर था— ऐडी ने कभी प्यार किया था और मैं यह मानता था कि प्यार बेकार होता है। मेरी नजर में प्यार कोई ऐसी चीज नहीं थी, जो अपने आप हो जाए। मुझे लगता था कि प्यार करना पड़ता है। इसलिए मैं ऐसी बेकार की चीज करने में अपनी एनर्जी बर्बाद नहीं करना चाहता था।

एक दिन शाम को क्लासेस खत्म होने के बाद हम 'द ओबेरॉय ढाबा' के सामने बैठकर चाय पी रहे थे। 'द ओबेरॉय ढाबा' हमारे कॉलेज के कैंपस में ही एक छोटी-सी दुकान थी, जहाँ चाय, समोसे, पेटीज आदि के अलावा कुछ रोजमर्रा के सामान भी मिल जाते थे। हम लोग THE TAJ में चाय पीने नहीं जाते थे, क्योंकि सैंडी हमें वहाँ जाने नहीं देता था। वह हमें हमेशा यहीं पर लाता था, क्योंकि यह जगह गर्ल्स हॉस्टल के पास थी और हमारे कॉलेज में पढ़ने वाली लड़कियाँ यहीं आती थीं। उसके लड़की पटाने के मिशन का यह कंट्रोल रूम था।

हम एक पेड़ के नीचे बैठकर चाय का मजा ले रहे थे। ऐडी सामने की कुर्सी पर पैर फैलाकर बैठा था और कुछ सोच रहा था। अमित के हाथ में अँग्रेजी सिखाने वाली किताब 'तीस दिन में कैसे बोलें फर्राटेदार अँग्रेजी' की एक कॉपी थी। अभी कुछ दिन पहले जब उसके पापा उससे मिलने आए थे, तब उन्होंने उसे यह किताब दी थी। वह उसी में उलझा हुआ था।

ऐसा नहीं है कि कॉलेज में लड़के पढ़ने की कोशिश नहीं करते हैं। वे खूब कोशिश करते हैं, पर उनके कुछ दोस्त उनकी इस कोशिश पर अपनी 'दोस्ती का वास्ता' फेर देते हैं। बस उसी दोस्ती को निभाने के चक्कर में 90% लड़कों के 70% नंबर भी नहीं आ पाते और फिर सारा दोष कॉलेज के सिर पर मढ़ दिया जाता है।

अमित को पढ़ता हुआ देखकर मेरे अंदर भी उस 'दोस्ती के वास्ते' ने कुलबुलाना शुरू कर दिया। बस फिर क्या था, मैंने तुरंत ही उसे तंग करने का प्रोग्राम बना लिया और भोली सूरत बनाते हुए उससे पूछा— "यार, यह कौन-सी नई किताब है? मुझे भी दिखा।" और इतना कहकर मैंने उसके हाथ से किताब छीनी और बंद कर दी।

"तंग मत कर बे। ला मेरी किताब वापस कर। इस साल मुझे अँग्रेजी पर कमांड करनी ही है।" अमित ने झुँझलाकर कहा।

"हाँ... तो इस किताब से करेगा?" मैंने किताब के टाइटल की तरफ इशारा करते हुए कहा— "देख, इस किताब को लिखने वाला तो खुद ही पूछ रहा है 'तीस दिन में कैसे बोलें फर्राटेदार अंग्रेजी?' अब जब इसे ही नहीं पता, तो तू कैसे कमांड हासिल करेगा, मेरे अँग्रेजी

के सिपाही!"

"सी, डोंट इरिटेट मी, अदर भाइझ आई भिल फक यू।" अब अमित को गुस्सा आ गया था।

"बस बेटा, तुझे हो गई कमांड हासिल। अब तू पूरी तरह अँग्रेजी सीख चुका है।" अमित की बात सुनकर ऐडी ने उसे कंप्लीमेंट देते हुए कहा। मैं भी समझ गया कि अमित अपने yield point पर आ चुका है और अब अगर उसे अधिक तंग किया, तो मामला बिगड़ जाएगा। मैंने चुपचाप किताब उसे वापस कर दी।

"देखा अँग्रेजी का पावर।" अमित ने किताब लेकर हँसते हुए कहा— "स्साला इतनी देर से हिंदी में समझा रहा था, तो तुझे बात समझ में ही नहीं आई। और जैसे ही मैंने एक लाइन अँग्रेजी की बोली, तो तू लाइन पर आ गया! आई एम सारी फार माई भर्डस।" उसने तुरंत ही अँग्रेजी में माफी भी माँग ली। वह नॉर्मल हो चुका था

हमारी इन बातों से बेखबर सैंडी दुकान पर आई हुई लड़कियों को ताड़ रहा था। जब किसी लड़की को सिर्फ एक बार देख लिया जाए, तो उसे 'देखना' कहते हैं, पर जब देखने की यह प्रक्रिया घूरने में बदल जाए, तो उसे 'ताड़ना' कहते हैं। इससे पहले कि मैं सैंडी की इस 'ताड़न क्रिया' के बारे में कुछ कहता, वह अचानक मेरी तरफ मुड़ा और मुझसे पूछा— "यार, ये विस्पर के ऐड वाली लड़की 'उन' दिनों में सफेद पैंट ही क्यों पहनती है?"

"ओह शिट..."

इससे पहले कि सैंडी के इस गंभीर प्रश्न पर मैं कुछ प्रतिक्रिया देता, किसी लड़की के मुँह से 'ओह शिट' सुनकर हम चारों उधर ही देखने लगे। कोई लड़की ऐसे भी बोलती है, यह हमारे लिए अचरज वाली बात थी। क्योंकि हमारे हिसाब से कॉलेज में आने वाली लड़कियाँ 'अच्छी' होती हैं और अच्छी लड़कियाँ ऐसे नहीं बोलतीं।

वह लड़की दुकान पर कुछ नहीं, बहुत कुछ लेने आई थी। उसकी सामानों की थैली ज्यादा वजन होने के कारण फट गई थी और सारी चीजें बिखर गई थीं। ऐसा होने पर ही हमें उस लड़की के श्रीमुख से यह 'शिट भजन' सुनने की कृपा प्राप्त हुई थी। अपनी आदत से मजबूर दुकानवाले पैसा बचाने के लिए पतली थैली रखते हैं, जो शायद रूई से भी फट जाए। उसका सामान बिखरा पड़ा था और वह उसे बटोरने की कोशिश कर रही थी। सामान क्या था, स्टेशनरी की पूरी दुकान ही थी। सड़क पर कई रंगों के पेन, रंग-बिरंगी पेंसिलें, रबर, स्केल, चार-पाँच नोटबुक के अलावा कुछ चॉकलेट और 'उन' दिनों में इस्तेमाल होने वाला एक पैकेट भी था। शायद वह पैकेट बाहर गिर जाने के कारण ही उसे और गुस्सा आया था। वह पैकेट देखकर ही शायद सैंडी के बाल मन में वह गंभीर प्रश्न उमड़ा होगा।

"यार, ये लड़कियाँ इतने सारे रंगों के पेन-पेंसिल का क्या करती हैं? अपना तो एक नीला पेन भी खत्म नहीं होता है।" मैंने यह सवाल पूछा तो सैंडी से था, पर जवाब अमित के

मुँह से निकला— "ही भिल टेल, भेन कम बैक।"

मैं उसकी बात नहीं समझा था। तभी ऐडी ने इशारा किया और मैंने देखा कि सैंडी उस लड़की के पास बैठा हुआ उसका सामान उठाने में मदद कर रहा था।

"ये वहाँ कब पहुँचा?" अमित की बात का मतलब समझने पर मैंने हैरानी से पूछा।

"लड़की के मामले में यह शक्तिमान से भी तेज है।" ऐडी ने हँसते हुए कहा।

सैंडी ने दुकानदार से दूसरी थैली माँगी और सारा सामान उसमें रखवा दिया। लड़कों के स्कूल में पढ़ने के बावजूद उसमें लड़कियों से बात करने का टैलेंट कूट-कूट कर भरा हुआ था। उसने सामान उठाने में मदद तो कम ही की थी, पर उस लड़की को इंप्रेस करने में सफल हो गया था। उसने थैली में सामान रखने के बाद हमें इशारे से कहा कि वह उसे छोड़ने जा रहा है और उस लड़की के साथ-साथ गर्ल्स हॉस्टल की तरफ रवाना हो गया।

हम भी चाय पीने में मशगूल हो गए, क्योंकि हम यह जानते थे कि जब तक सैंडी लड़की के साथ है, वह हमें पहचानेगा भी नहीं।

चाय खत्म करने के बाद हम लोग भी अपने हॉस्टल की तरफ चल दिए।

हॉस्टल में पहुँचकर हमनें कंप्यूटर पर कोई फिल्म देखने के प्रोग्राम बनाया। ज्यादातर लड़कों के माँ-बाप यह सोचकर उन्हें कंप्यूटर देते हैं कि उनका लड़का शायद एक दिन स्टीव जॉब्स बन जाए। पर कॉलेज में आने के बाद कंप्यूटर का उपयोग अधिकतर counter strike खेलने में ही होता है और उसके बाद भी अगर कुछ समय बच जाए, तो हिंदी में डब अँग्रेजी फिल्में देखी जाती हैं। हम भी ऐसा ही कुछ करते थे। इस बीच अमित को कहीं से यह पता लग गया कि अगर अँग्रेजी फिल्में अँग्रेजी में ही देखी जाएँ, तो आसानी से अँग्रेजी सीखी जा सकती है। बस फिर क्या था, उसने हिंदी में डब फिल्में छोड़कर अँग्रेजी सबटाइटल वाली फिल्में देखना शुरू कर दिया। अभी कुछ दो-चार फिल्में ही देखी होंगी कि एक दिन वह भड़क गया और उसने कंप्यूटर बंद करते हुए कहा— "यार, ये स्साले अँग्रेज भी अजब होते हैं। तलवार को ब्लेड कहते हैं और साइकिल को बाइक। अगर मैं इनकी अँग्रेजी सीखने बैठा तो स्साली अपनी भी भूल जाऊँगा।" यह कहकर वह बाहर चला गया और उस दिन के बाद हम भी हॉस्टल की परंपरा को निभाते हुए अँग्रेजी फिल्में अपनी मातृभाषा में ही देखने लगे।

हम सीधे ऐडी के रूम में गए और 'लॉर्ड ऑफ द रिंग्स' का दूसरा पार्ट देखने लगे। लगभग दो घंटे बाद सैंडी भी आ गया। पूछने पर उसने बताया कि वह किसी काम से किसी और के रूम में बैठा हुआ था। हमने भी उसकी तरफ ज्यादा ध्यान न देकर अपने आप को मूवी में ही कन्संट्रेट किए रखा।

लड़कियाँ जब अपने घर से कॉलेज के हॉस्टल में आती हैं, तब का तो पता नहीं पर जब लड़के कॉलेज के लिए अपने घर से निकलते हैं, तब उनकी मम्मियाँ यह जरूर कहती हैं

कि बेटा, खाने-पीने पर ध्यान दिया करो। देखो तो कितने दुबले हो गए हो। चाहे उनका बेटा डील-डौल में अरनॉल्ड को भी मात देता हो, पर मम्मी के लिए वह हर बार दुबला ही होता रहता है। खाने की बात पर लड़के शायद ध्यान न देते हों, पर 'पीने' को बहुत सीरियसली लेते हैं। शायद यही कारण है कि किसी भी इंजीनियरिंग कॉलेज के अंदर या बाहर किसी भी दुकान पर आपको सिगरेट के सभी ब्रांड मिल जाएँगे। यह हो सकता है कि कभी आपको पेन खरीदने के लिए चार दुकानों में जाना पड़े, पर सिगरेट यत्र-तत्र-सर्वत्र उपलब्ध होती है।

ऐसा नहीं है कि हमारे कॉलेज के सभी भावी इंजीनियर अच्छे ही थे, कुछ खराब बालकों ने अपनी माँ की बात सुनकर उस पर अमल करने की सोची और पास के गाँव से दूध मँगवाने लगे। हम भी ऐसे ही छात्रों की जमात में शामिल थे। हर रोज रात को आठ बजे पड़ोस के गाँव से दूधवाला दूध दे जाता था। उसको गर्म करने के लिए हमने एक हीटर खरीदा था, जो सैंडी के रूम में रखा हुआ था। सैंडी की जिम्मेदारी थी कि वह उस दूध को गर्म करेगा और हमें बुलाएगा।

वैसे तो वह अपना काम पूरी ईमानदारी से करता था, पर उस दिन वह देर से आया और दूध गर्म नहीं कर पाया। हम भी 'लॉर्ड ऑफ द रिंग्स' का दूसरा पार्ट खत्म करने के बाद तीसरा पार्ट देखने लगे और दूध के बारे में भूल ही गए। सुबह जब उसकी याद आई, तब तक वह दूध, दूध न रहकर पनीर बन चुका था।

और एक दिन...

लगातार गोलियाँ बरस रही थीं। आगे वाली कार का ड्राइवर इन गोलियों की बौछार से बचने की पूरी कोशिश करते हुए अपनी कार को कभी दाएँ, तो कभी बाएँ घुमा रहा था। कार के पीछे लगी हुई शिल्ड के कारण वह अब तक सुरक्षित था। तभी अचानक पीछे वाली कार की स्पीड बढ़ने लगी। अपनी गोलियों को बेअसर देखकर शायद पीछे वाली कार के ड्राइवर ने अपनी रणनीति बदल दी थी। वह अब आगे वाली कार के करीब आ रहा था। फिर अचानक ही उस कार की बगल में आ गया और उसे किनारे से टक्कर मारी। उस कार का बैलेंस बिगड़ गया और वह डिवाइडर से जा टकराई। सड़क पर तीन-चार बार पलटी मारने के बाद उसका दरवाजा खुल गया और ड्राइवर बाहर सड़क पर आ गिरा। पीछे वाली कार के ड्राइवर ने थोड़ा आगे जाकर अपनी कार रोकी और बाहर निकला। उसने नकाब पहन रखा था। धीरे-धीरे वह सड़क पर गिरे उस ड्राइवर के पास आया और उसकी गरदन अपने हाथों में जकड़ ली और कैमरे की तरफ देख कर बोला—...

"भैया दूध ले लीजिए।"

दूधवाले की आवाज सुनकर हम लोग 'डेथ रेस' से बाहर आए। मूवी के क्लाइमैक्स में अचानक हुए इस डिस्टर्बेंस से चिढ़कर अमित बोला— "सैंडी को दो यार।"

"पहले वहीं गए थे, पर भैया का रूम बंद है।" दूधवाले ने सफाई दी।

“आजकल यह सैंडी कहाँ गायब रहने लगा है?” अमित ने ऐडी से पूछा—“भेयर ही इझ गोइंग।”

ऐडी ने ना में अपने कंधे उचका दिए।

“लाओ, इस पतीले में दूध दे दो।” मैंने अमित की बात को अनसुना करते हुए दूधवाले को पतीला थमाया।

मैं जल्दी से ‘दूध की महाभारत’ खत्म करके ‘डेथ रेस’ कंटीन्यु करना चाहता था। और साथ ही साथ यह भी सोच रहा था कि आखिर उस नकाबवाले ने उस कार के ड्राइवर से क्या कहा होगा।

“फोन कर यार सैंडी को, पूछ तो कहाँ है...।” मैंने पतीला कोने में रखते हुए ऐडी से कहा।

ऐडी ने सैंडी का नंबर मिलाया और फोन का स्पीकर चालू कर दिया। कुछ बीप के बाद एक लड़की की प्यारी-सी आवाज आई— ‘जिस नंबर पर आप कॉल कर रहे हैं, वह अभी व्यस्त है। कृपया कुछ देर बाद कोशिश करें।’

“यार, इस लड़की की आवाज इतनी मीठी है, तो यह खुद कितनी सुंदर होगी!” अमित ने ऐडी का फोन ले लिया और फिर से कॉल बटन दबा दिया।

“मेरी बात मान, तू अपनी अँग्रेजी पर ही कन्संट्रेट कर। ये लड़की-वड़की के चक्कर से दूर ही रह।” ऐडी ने अपना फोन वापस ले लिया। फोन से वह मधुर-सी आवाज अब भी आ रही थी। ऐडी ने फोन काट दिया और जेब में रख लिया।

तभी मुझे कुछ याद आया तो मैंने कहा— “आजकल सैंडी अपने फोन के साथ कुछ ज्यादा ही बिजी नहीं हो गया है?”

कोई कुछ कहता, तब तक सैंडी कमरे में आ चुका था। उसे देखकर अमित ने कमेंट किया— “लो भाई, आ गए साहब। दोस्त को दूध मिले ना मिले इन्हें क्या चिंता है।”

“अबे बाथरूम में था। चिंता थी तभी आया हूँ।” सैंडी ने सफाई दी।

“अरे बेटा, साइंस इतनी तरक्की कर गया और हमें पता ही नहीं है!” अमित ने फिर छेड़ा— “ब्रेकिंग न्यूज! अब पानी की कमी होने पर धोने के लिए फोन का इस्तेमाल करें। बस फोन बिजी बताएगा, पर धुलाई पूरी करेगा।”

सैंडी समझ गया कि अमित क्या कह रहा है, पर उसने उसकी बात को इग्नोर करते हुए दूध का पतीला उठाया और अपने कमरे में जाने लगा। मैंने उससे पूछा— “मूवी देखने आ रहा है?”

“नहीं यार। तुम लोग देखो। मैं जरा दोस्तों के लिए दूध गर्म करूँ। अमित भाई कमजोर लग रहे हैं। उनकी मम्मी को मैं क्या जवाब दूँगा।” इतना कहकर वह पतीला लेकर अपने

कमरे में चला गया और हम उस नकाबपोश की बातें सुनने लगे।

मूवी खत्म होने के बाद हम सब सीधे बाथरूम की तरफ भागे और बहुत देर से जो प्रेशर बना हुआ था, उसका निष्कासन किया। किडनी पर लोड कम होने के बाद बाकी सेंसर्स ने अपना काम शुरू किया और मुझे एक अजीब-सी महक आई। मैं उस महक को पहचानता तो था, पर अभी समझ में नहीं आ रहा था। तभी अमित बोल पड़ा— "किसी का दूध जल रहा है।"

"अबे किसी का नहीं, यह अपना ही है। यह महक सैंडी के कमरे से आ रही है।" ऐडी, सैंडी के कमरे की तरफ भागते हुए बोला।

हम जल्दी से उसके कमरे तक पहुँचे और जैसे ही हम ने दरवाजा खोला, जले हुए दूध की एक तीखी महक हमारे नथुनों से होती हुई फेफड़ों में घुस गई। उसके बाद एक काले धुएँ के बादल ने हमारी आँखों के सामने अँधेरा कर दिया। जब वह धुआँ छँटा और हमारी आँखें कुछ देखने के काबिल हुईं, तब हमें उस कमरे में हुई बर्बादी का एहसास हुआ। दूध का बर्तन काला पड़ चुका था। उसमें दूध का नामोनिशान तक नहीं था। जो कुछ थोड़ा-बहुत दूध बचा था, वह उस हीटर को स्नान कराते हुए, पलंग के नीचे से यात्रा करने के बाद, जूतों के सोल के नीचे से होकर दरवाजे तक आ गया था। अब वह बाहर की दुनिया में प्रवेश करने ही वाला था कि उसकी महक हमारे नथुनों तक पहुँच गई और उस दूध के विश्व भ्रमण का प्रोग्राम कैंसल हो गया। उस कमरे की हर एक चीज से जले हुए दूध की महक आ रही थी और मेरा अनुमान था कि वह महक अभी कुछ हफ्तों तक उस कमरे में ही रहने वाली थी।

"सैंडी इझ किडनैप्ड। उसका अपहरण हो गया है।" अमित ने चीखते हुए कहा।

"चुप कर। वो रहा सैंडी।" ऐडी ने सीढ़ियों की तरफ इशारा करते हुए कहा।

सैंडी छत की सीढ़ियों से नीचे उतर रहा था। उसके चेहरे पर खुशी साफ दिख रही थी।

"चलो यार, अच्छा हुआ इसका किडनैप नहीं हुआ है। वरना मैं तो डर ही गया था कि अब दूध कौन गर्म करेगा।" अमित रिलैक्स होते हुए बोला। उसका मसखरापन कभी भी नहीं जाता था।

सैंडी हमारे पास आया और हमें गले से लगा लिया।

"सैंडी का किडनैप हो चुका है और यह उसका क्लोन है।" अमित ने फिर घोषणा की।

"बस भाई बहुत हो गया। ऐडी तू इसका मुँह बंद कर।" मैंने ऐडी से कहा और फिर सैंडी की तरफ देखकर पूछा— "क्या हुआ?"

"वो भी मुझसे प्यार करती है।" सैंडी ने खुशी से कहा— "अपना सपना पूरा हो गया।"

हम सब भौंचक्के रह गए। ये शॉकिंग न्यूज थी।

"वी आर शाकिंग एंड ही इझ लाफिंग।" अमित की अँग्रेजी।

“पूरी बात बताएगा। कौन है, कब मिली, कैसे हुआ? या फिर तुझे भी इस अमित की तरह कोई मजाक सूझा है?” मैंने सैंडी से पूछा।

“उस दिन ‘द ओबेरॉय ढाबा’ में वह लड़की मिली थी, जिसे मैं उसके हॉस्टल तक छोड़ने गया था, याद है?” सैंडी ने बताना शुरू किया— “उसका नाम लता है। वह सिविल इंजीनियरिंग की स्टूडेंट है। जूनियर है अपनी। उस दिन मैंने झूठ बोला था कि दो घंटे तक मैं किसी और के कमरे में था। असल में मैं और लता गर्ल्स हॉस्टल के बाहर बैठकर बात कर रहे थे। उसी दिन उसने अपना नंबर मुझे दिया था। तब से हम लगातार बातें कर रहे थे। हम दोनों ही एक-दूसरे को पसंद करने लगे हैं। आज जब मैंने उसे प्रपोज किया, तो उसने ‘हाँ’ कर दी।” सैंडी ने एक ही साँस में सारी बात बता दी।

मैं अभी इस न्यूज को पचाने की कोशिश कर रहा था, तब तक ऐडी ने आगे बढ़कर सैंडी को गले लगा लिया और मुबारकबाद दी।

तभी सैंडी का ध्यान अपने कमरे में हुई दुर्घटना पर गया। इससे पहले कि वह कुछ कहे, अमित ने अपना तीर छोड़ दिया— “तुझे प्यार हो गया यह सुनने से पहले ही दूध ने आत्मदाह कर लिया। मिल्क कमिटेड सुसाइड।”

हम सब हँस पड़े। एक चिरकुट ने अपना सपना पूरा कर लिया था।

# बैचलर बकरा

सेकंड ईयर भी खत्म हो गया था। इस साल की सबसे बड़ी कामयाबी यह थी कि सैंडी को उसका प्यार मिल चुका था। जब से उसको प्यार हुआ था, तब से उसका ज्यादातर टाइम फोन पर ही बीतता। संडे को दोनों मार्केट घूमने जाया करते थे। यह बात मुझे तब ही पता चली थी कि अगर आप किसी लड़की के साथ बाहर जा रहे हैं, तो उसके किराए से लेकर उसका खाना और अगर वह कुछ खरीदती है तो उसके पैसे भी आप को ही देने होते हैं। सैंडी ने उसके जन्मदिन पर एक टाइटन की घड़ी गिफ्ट दी थी। जाने वह कौन-सी अशुभ घड़ी थी, जब उस घड़ी को खरीदने के लिए मैं सैंडी के साथ जाने को तैयार हो गया था। कितना तंग किया था यार सैंडी ने मुझे। कभी कलर पसंद नहीं है, तो कभी डिजाइन ठीक नहीं है। आठ दुकानों में खोजने और सात हजार रुपए खर्चने के बाद वह घड़ी मिली थी। जब अमित को यह बात पता चली, तो उसने अपने ही अंदाज में कहा— "लव इझ टाइम कंज्युमिंग एज वेल एज एक्सपेंसिव।"

अमित की अँग्रेजी सुधर रही थी और सैंडी प्यार कर रहा था। इन सबके बीच हम आधे इंजीनियर बनकर घर को रवाना हुए।

छुट्टियाँ बीतने के बाद जैसे ही मैंने हॉस्टल में पैर रखा, मेरे तीनों दोस्त कम भाइयों नें मुझे घेर लिया। वे तीनों पिछली रात ही हॉस्टल में आ गए थे। मैं थोड़ा लेट हो गया था— थैंक्स टु इंडियन रेलवेज।

अमित ने मेरा बैग मुझसे लेते हुए कहा— "बहुत भारी होगा ना। ला मैं हल्का कर देता हूँ।" उसका निशाना मेरे बैग में रखी खाने की चीजों की तरफ था। जब भी मैं घर से आता, मम्मी एक बैग में सिर्फ खाने के ही सामान पैक कर देती थीं। उनका यह मानना था कि मैं हॉस्टल में ठीक से नहीं खाता हूँ, इसलिए लगातार कमजोर हो रहा हूँ। मैं और अधिक कमजोर न हो जाऊँ, इसलिए वे काजू, बादाम और किशमिश के पैकेट रखना नहीं भूलती थीं। इसके साथ ही ठेकुआ, चिउड़ा, नमकीन, मिठाई आदि के पैकेट भी होते थे। जब मैं

उनसे यह कहता कि ठेकुआ खाने से ताकत नहीं आती है इसलिए मैं इसे साथ नहीं ले जाऊँगा, तो वे धीरे से मेरी पीठ पर धौल जमा देती थीं। अमित ठेकुआ के उस पैकेट का वजन ही सबसे पहले कम करता था।

उसने मेरे कंधे से बैग उतार लिया और बाहर ही उसे खोलने लगा। तभी ऐडी ने मेरे बालों की तरफ इशारा करते हुए कहा— "यार, तेरे बालों को क्या हुआ?"

"मत पूछो यार, क्या हो गया।" मैंने कहा और सबको कमरे में चलने का इशारा किया।

कुछ देर के बाद हम चारों मेरे बिस्तर पर बैठे हुए थे। सामने मेरा बैग पड़ा था। मम्मी ने जो मिठाई यह सोचकर रखी थी कि मै दस दिनों तक खाऊँगा, वह हॉस्टल में दस मिनट भी न बच पाई। दरअसल हॉस्टल में हम हमेशा ही भूखे होते हैं। अगर मेस से निकलने के बाद भी कोई कहे कि चलो यार कैंटीन पर चलकर आलू के पराठे खाते हैं, तब भी हमें कोई प्रॉब्लम नहीं होती है। शायद इसीलिए हम मम्मी को कमजोर लगते हैं। अब उन्हें क्या मालूम कि हम खाते तो बहुत कुछ हैं, पर लेक्चरर के दिए हुए असाइनमेंट पूरे करते-करते हम दुबले हो जाते हैं।

"अब तो बता तेरे बालों का यह हाल कैसे हुआ?" ऐडी ने फिर पूछा।

"कुछ खास बात नहीं है यार, पापा ने मेरे लिए लड़की ढूंढ ली है। शायद मेरी शादी ऑलमोस्ट फाइनल हो गई है।" मैंने कारण बताया।

"मुबारक हो।" मेरी बात सुनते ही यह शोर गूँज पड़ा। इसकी इन्टेंसिटी इतनी अधिक थी कि बाहर के पेड़ों पर बैठी हुई चिड़ियाँ भी डरकर उड़ गईं।

मैंने उन सबको चुप कराया और बोला— "अभी सिर्फ बात चल रही है। फाइनल नहीं हुआ है।"

पर इससे उन यमदूतों को क्या फर्क पड़ने वाला था। उन तीनों ने मुझे हाथ और पैर पकड़कर उठा लिया और लगभग पंद्रह-बीस मुबारकबाद तो मेरी तशरीफ पर दे ही दीं। वैसे तो यह तरीका हॉस्टल में 'जन्मदिन मुबारक' बोलने का होता है, पर 'शादी मुबारक' बोलने का कोई मेथड इन्वेंट ना होने के कारण चिरकुट्स ने इसी से काम चला लिया।

मुबारकबाद देने के बाद जब उन्होंने मुझे नीचे उतारा, तो पहले दो मिनट मैंने अपनी तशरीफ को बराबर करने में लगाए।

"ट्रीट?" अमित ने अब अपने मतलब की बात कही।

हॉस्टल में अगर आप सबसे पहले नहा लें, तब भी आपको ट्रीट देनी पड़ सकती है। यहाँ तो मेरा तो रिश्ता तय हुआ था, पार्टी न देने का सवाल ही नहीं था। फिर भी मैंने चांस मारा— "ट्रीट किस बात की? अभी कुछ फाइनल नहीं है।"

"तो ठीक है, जब फाइनल हो जाए तब मत देना।" यह सैंडी का आइडिया था।

मैं भी समझ गया कि बचना तो नामुमकिन है, इसलिए हथियार डाल दिए और हारे हुए सैनिक की तरह कोने में खड़ा हो गया।

पार्टी देनी है यह फाइनल था, इसलिए यह कोई समस्या नहीं थी। समस्या यह थी कि पार्टी कहाँ होगी, कब होगी और मेन्यु क्या होगा? करीब दो घंटे तक ब्रेन स्टॉर्मिंग करने और अमित के इस डायलॉग कि 'एक्साइटमेंट भिल डाई, इफ वी डिले' को सुनने के बाद यह तय हुआ कि पार्टी आज शाम को ही होगी, वरना इस खबर के बासी होने का खतरा है। पार्टी ऐसे होटल में होनी थी, जहाँ खाने के साथ-साथ पीने की व्यवस्था भी हो। गलत मत समझिए, मेरे दोस्त रेगुलर ड्रिंकर नहीं हैं— ओकेजनल हैं।

होस्ट से पूछने का रिवाज तो होता नहीं है, अतः मुझसे किसी ने पूछा नहीं। वो अलग बात है कि अगर मैं कुछ कहता, तब भी कोई सुनता नहीं, उल्टे तशरीफ पर दो-चार मुबारकबाद जरूर मिल जातीं। इसलिए मैंने चुप रहना ही बेहतर समझा। इस पार्टी को 'बैचलर बकरा पार्टी' की संज्ञा दे दी गई थी। यहाँ पर 'बैचलर' तो हम सभी थे, पर 'बकरा' बनने का सौभाग्य मुझे ही प्राप्त हुआ था।

शाम को हम सब नहा-धोकर, मतलब तैयार होकर प्री-प्लानिंग के साथ ऐसे होटल में पहुँचे, जिसके बारे में फीडबैक यह था कि यहाँ पर खाना कैसा भी मिलता हो, पर पीने के साथ चखना बहुत मस्त होता है। अब क्योंकि फीडबैक में 'मस्त' शब्द था, तो शंका की कोई बात ही नहीं थी। सैंडी सबको गाइड करते हुए उस होटल की तरफ ले जा रहा था। मैं सबसे पीछे-पीछे यह सोचता हुआ चल रहा था कि न जाने कितने का बिल बनेगा और इसके पैसे मैं पापा से कैसे माँगूँगा। हॉस्टल में रहने पर मंथली खर्च तो फिक्स होता है, जो सीधे बैंक एकाउंट में आता है।

हम सब अपना-अपना ऑर्डर वेटर को लिखवा चुके थे। साथ में तीन बीयर और एक लिम्का का भी ऑर्डर था। बीयर मेरे दोस्तों के लिए और लिम्का मेरे लिए। मैंने अपने दोस्तों के कहने पर एक बार बीयर ट्राई करने की हिम्मत की थी, पर उसके एक घूँट के बाद जो उल्टी होनी शुरू हुई कि फिर कभी किसी ने मुझे कुछ ट्राई करने को नहीं कहा। जिस प्रकार समाज में बहुत सारे काम सामाजिक प्रेशर के कारण करने पड़ते हैं, उसी प्रकार कॉलेज में 'पीने' की शुरुआत भी दोस्तों के प्रेशर के कारण ही होती है।

हमारा खाना और 'पीना' हमारे सामने था।

सैंडी ने तीन गिलास में बीयर डाली और एक को लिम्का से भरा। वह यह जानता था कि मैं अब किसी भी कीमत पर बीयर तो पीने से रहा।

सबने गिलास हाथों में लेकर एक साथ 'चियर्स' कहा।

"एक 'कटने वाले बकरे' के नाम।" अमित ने यह लाइन भी बोली।

“अब नहीं रुका जाता है बे। अब तो बता दे क्या-क्या हुआ?” सैंडी ने बियर का एक घूँट लेते हुए पूछा।

“हाँ यार, लड़की देखी? कैसी हैं भाभी जी?” ऐडी ने पूछा।

कॉलेज में कुछ नॉन रिटेन रूल होते हैं, जिनका पालन सबको करना पड़ता है। उसी नियम के अनुसार अगर आपने किसी लड़की को घूरकर भी देख लिया तो बस, दोस्त लोगों के लिए वो उनकी भाभी— जब तक कि वो किसी दूसरे लड़के के साथ घूमती हुई न दिखे।

मैं ऐडी के सवाल का कोई जवाब देता, उसके पहले ही सैंडी ने उसे डाँटते हुए कहा— “ये कैसा सवाल है कि कैसी हैं भाभी जी? लड़कियाँ सिर्फ दो प्रकार की होती हैं—ब्यूटीफुल और वेरी ब्यूटीफुल। कोई भी लड़की खराब नहीं होती है। समझा।”

“हाँ भाई समझ गया।” ऐडी ने सैंडी के सामने हाथ जोड़ते हुए कहा और फिर मुझसे पूछा— “देखा है क्या भाभी जी को?”

“नहीं यार। लड़की देखने का तो रिवाज ही नहीं है मेरे घर में। और वैसे भी, अभी सिर्फ बात ही चल रही है। उसके पापा मेरे घर आए थे, मुझे देखने के लिए।” मैंने लिम्का का एक घूँट गले के नीचे उतारते हुए कहा।

“ओ हो, तभी बालों में काला रंग निखर आया है।” अमित बोला। वह अब तक अपनी बीयर खत्म करने के बाद पनीर-कोफ्ता और कुलचे पर हमला बोल चुका था।

“हाँ भाई, जिस दिन उसके पापा मुझे देखने आने वाले थे, उस दिन सवेरे ही मेरे पापा ने मुझसे कहा कि तुम्हारे भी दो-चार बाल सफेद हो गए हैं, उन्हें डाई कर लो।”

“तब तूने पापा से पूछा नहीं कि क्यों?” सैंडी ने सवाल किया।

“पूछना क्या था। जिस दिन से मैं घर पहुँचा था, वहाँ बड़ी हलचल थी। फोन पर बातें होती थीं। मैंने सुन लिया था और वैसे भी तैयारी तो पिछले साल से ही थी। मम्मी भी हमेशा कहती रहती थीं कि अब मुझसे घर का काम नहीं होता, तेरी शादी करवानी पड़ेगी।” मैंने कहा।

“मेरी एक बात आज ही गाँठ बाँध कर रख ले। ये बात अपनी बीवी को कभी मत बताना कि मम्मी से घर का काम नहीं होता था, इसलिए मेरी शादी की। नहीं तो वह उसी दिन घर पर एक नौकर रख देगी और तुझे तलाक दे देगी। समझे।” अमित ने मुझे समझाया और एक और कुलचा अपनी प्लेट में रखा।

“ऐसा कुछ नहीं है। अगर वह समझदार होगी, तब यह बात जरूर जानती होगी कि किसी भी पत्नी का रूप परिवार के हर सदस्य के लिए अलग-अलग होता है।” ऐडी ने राजकचौरी खत्म करते हुए अमित से कहा।

“हुँह। लड़की और समझदार!” अमित मुँह बनाकर बोला। मैं यह नहीं समझ पाया कि

उसने ऐसा मुँह लड़की की बात सुनकर बनाया था या फिर मिर्च लगने की वजह से।

"अबे तुझे लड़कियों से इतनी प्रॉब्लम क्यों है?" सैंडी ने अमित से पूछा।

शायद सैंडी उसके ऐसे मुँह का कारण समझ गया था।

अमित कुछ कहता, इसके पहले ही ऐडी बोल पड़ा— "इसको कभी मिली नहीं न। जिस दिन किसी से प्यार हुआ न, सबकुछ भूल जाएगा। यह पनीर-कोफ्ता भी।"

ऐडी जानता था कि पनीर-कोफ्ता अमित का फेवरेट है।

"देख कोफ्ते को बीच में मत ला... और तू तो ऐसे कह रहा है, जैसे तूने प्यार में पीएचडी कर रखी है!" अमित ने एक कौर मुँह में भरते हुए जवाब दिया।

यह सुनकर ऐडी के चेहरे पर उदासी छा गई। अमित भी समझ गया कि उसे ऐसा नहीं बोलना चाहिए था। ऐडी अपना प्यार खो चुका था।

बात कोई और मोड़ लेती, उसके पहले ही सैंडी ने सिचुएशन सँभालते हुए ऐडी से कहा — "ये अमित तो पागल है, कुछ भी बोलता रहता है।" और उसकी प्लेट में रोस्टेड चिकन के दो लेग पीस रख दिए।

ऐडी ने भी चेहरे पर मुस्कराहट की एक लकीर खींची और मुझसे बोला— "तू अपनी बात बता यार। ये सब तो बकवास कर रहे हैं। तेरे लिए तो पिछले साल भी एक लड़की देखी थी न अंकल-आंटी ने, उसका क्या हुआ?"

शायद लेग पीस अपना इफेक्ट दिखा चुके थे।

"पता नहीं यार, मम्मी कहती हैं कि वह रिश्ता जमा नहीं।" मैंने बताया और मिक्स वेज अपनी प्लेट में भर लिया। यह मैंने ऑर्डर किया था, क्योंकि यह उन सभी डिश से सस्ता था, जो उस समय हमारी टेबल पर थीं। आखिर बजट का भी तो ध्यान रखना था।

"तो फ्रिज में रख देते। रिश्ता फौरन जम जाता।" अमित ने पेट पर हाथ फेरते हुए कहा।

वह फिर से मजाक के मूड में आ गया। उसकी यही खासियत थी कि वह कभी भी टेंशन में नहीं आता था। हम भी यह जानते थे कि वह अधिकांश बातें बस यूँ ही हँसने के लिए कह देता है। उसका इन्टेंशन कभी भी खराब नहीं होता। इसलिए हम दोस्त भी उससे नाराज नहीं होते थे। अगर हमारा कभी मन भारी होता, तो दस मिनट के लिए उससे मिल लेते— और सब टेंशन खत्म! जिंदादिल था अमित।

"ये रिश्ता पहले ही जम गया है। मम्मी लड़की को देख चुकी हैं और पसंद भी कर चुकी हैं। सबसे अच्छी बात जो उन्हें लगी, वो यह है कि लड़की जींस नहीं पहनती है। सिर्फ सलवार-कमीज पहनती है और इतने से ही मम्मी इंप्रेस हो गई हैं।" मैंने पूरी बात समझाई और बजट का ध्यान रखते हुए एक रोटी अपनी प्लेट में रखी।

“ऐसा क्या है भाई? अगर ऐसा हुआ तब मेरी वाली को सब रिजेक्ट ही कर देंगे, क्योंकि वो सलवार-कमीज सपने में भी नहीं पहनती है।” सैंडी ने घबराते हुए कहा। इस घबराहट में वह एक गिलास बीयर फिर से पी गया।

“पता नहीं यार, सबके अपने-अपने फंडे होते हैं। पापा को बस इसलिए यह रिश्ता पसंद है कि वो हमारी ही कास्ट के हैं। अरेंज मैरिज की सबसे बड़ी बात यही है कि लड़का-लड़की बेशक एक-दूसरे को पसंद न हों, पर वो दोनों बाकी सबको पसंद होते हैं।” मैंने कहा।

“वाह यार, अभी शादी हुई नहीं और तू एक्सपर्ट हो गया!” ऐडी ने दूसरा लेग पीस भी खत्म करते हुए कहा।

“भाई सेलेक्ट हो के आ रहा हूँ और वो भी लड़की ने पापा सेलेक्ट किया है, कोई ऐसी-वैसी बात थोड़े न है।” मैंने भी लिम्का का गिलास हवा में उठा कर स्टाइल मारा।

“तो उसके पापा तुझे देखने आए थे?” सैंडी ने पूछा। वह अभी भी बीयर पर ही कन्संट्रेटेड था। शायद घबराहट ज्यादा ही थी।

मेरे कुछ कहने से पहले ही अमित फिर शुरू हो गया— “तब तो पूछा होगा कि बेटा खाना बनाना आता है कि नहीं? रोटियाँ गोल बना लेते हो न? सबसे जरूरी बात— बेटा, कटहल की सब्जी बनानी आती है कि नहीं...”

“कटहल कहाँ से बीच में आ गया?” ऐडी ने अजीब-सा मुँह बनाते हुए कहा। शायद उसे कटहल पसंद नहीं था।

“देखो, ऐसा है कि रोटी मेकर आने से अब तो ये भी गोल रोटियाँ बना लेगा।” अमित ने सैंडी की तरफ इशारा करते हुए कहा— “पर मेन टैलेंट तो कटहल की सब्जी बनाने में है इसलिए...।”

“कभी तो चुप रहा कर।” सैंडी ने उसे डाँटकर चुप करा दिया और मुझसे पूछा— “... फिर आगे क्या हुआ?”

“बस, अब मैं और कुछ नहीं बोलूँगा। साला कोई इज्जत ही नहीं है। नाव माई माउथ इझ क्लोज्ड।” अमित ने जवाब दिया और होंठों पर बाएँ से दाएँ ऐसे हाथ फेरा जैसे जिप बंद करने के बाद उस पर ताला लगा रहा हो। उसके बाद उस ताले की इमेजनरी चाबी ऐडी की जेब में रख दी।

“तब तो दुनिया में शांति ही हो जाएगी...।” ऐडी ने ताना मारा। वह आगे कुछ और कहता, इसके पहले अमित फिर बोल पड़ा— “...बस दो मिनट तक।” इतना कहकर वह खुद ही हँसने लगा और गुलाबजामुन के कटोरे में आइसक्रीम डालने लगा।

“हाँ, तू उससे ज्यादा चुप भी नहीं रह सकता है।” सैंडी ने भी टाँग खींची।

अमित ने इशारे में कुछ कहा और एक उँगली मुँह पर रखी। दूसरे हाथ से एक चम्मच से गर्म गुलाबजामुन और ठंडी आइसक्रीम के उस मिश्रण को मिलाने लगा।

“यार, इसका तो चलता ही रहता है, इसकी बात पर ध्यान मत दो।” सैंडी ने मुझसे कहा— “और तू क्या बार-बार चुप हो जाता है। कंप्लीट कर ना।”

“बस हो गया। मैं बाल डाई करके अच्छे से तैयार होकर बैठ गया। उसके पापा आए, तो मैंने उन्हें नमस्ते कहा और अपने कमरे में चला गया। उन्होंने मम्मी-पापा से बात की और थोड़ी देर बाद चले गए।” मैंने अपनी कहानी पूरी की। साथ ही साथ अपना हाथ भी टिश्यु पेपर में पोंछने लगा।

“वाह यार, तूने हम चिरकुट्स का नाम रोशन कर दिया। बिना इंटरव्यू के ही सेलेक्ट हो गया।” ऐडी ने मेरी पीठ थपथपाकर कहा।

उसकी देखा-देखी सैंडी और अमित ने भी मेरी पीठ थपथपाई। किसी ने इसी बहाने एक धौल भी जमा दी, जो शायद अमित ही रहा होगा।

“इस बार मुझे पता चला कि हमारे छोटे शहरों में एक इंजीनियर की कितनी डिमांड है और वो जिसकी नौकरी लग गई हो, उसकी तो बात ही क्या! हर लड़की का पिता ऐसा लड़का खोज रहा है, जो सेटल्ड हो। मुझे तो अभी पता लगा कि जब से मेरा ऐडमिशन हुआ है, तभी से मैं सबकी नजरों में था।” मैंने अपने ज्ञान से सबको अवगत कराया।

“जय चिरकुटदेव।” कहकर अमित ने मेरे आगे हाथ जोड़कर सिर झुका लिया। उसने दो मिनट तक चुप रहने की अपनी कसम पूरी कर ली थी।

इसके साथ ही इस ‘बकरे’ की ‘बैचलर पार्टी’ भी खत्म हो गई।

# पानी रे पानी

अगर तीसरा विश्व युद्ध हुआ तो वह पानी के लिए ही होगा, यह बात मैंने सुनी तो थी पर इसका एहसास मुझे कॉलेज में आने के बाद ही हुआ।

हमारा कॉलेज भारत के उस भूभाग में था, जहाँ पर पानी का ऐसा स्रोत मिलना, जो बारहों महीने चलता रहे, उतना ही कठिन था जितना कठिन अमित के लिए अँग्रेजी बोलना था।

फिर भी दोनों कोशिश में लगे रहते थे— हमारा कॉलेज और अमित।

जैसे अमित ने अँग्रेजी में थोड़ी सफलता हासिल की थी, वैसे ही हमारे कॉलेज में एक-दो बोरवेल ऐसे थे जिनसे हमेशा पानी निकलता था।

वे एक-दो बोरवेल ही गर्मी के मौसम में हर हॉस्टल में पानी पहुँचाने वाले टैंकरों को भरने के काम आते थे। हमारे कॉलेज में अलग-अलग ईयर्स के स्टूडेंट्स के हॉस्टल अलग-अलग थे। अगर फाइनल ईयर के हॉस्टल को छोड़ दें, तो पानी की समस्या बाकी सभी हॉस्टल में कमोबेश एक जैसी ही थी। फाइनल ईयर के हॉस्टल का बोरवेल 'कामधेनु' था, जिसमें पानी की कमी नहीं थी।

'रैगिंग एक दंडनीय अपराध है— माननीय उच्च न्यायालय'

इस एक लाइन ने फर्स्ट ईयर में हमें पानी के संकट से बचा लिया था। सीन यह था कि हम बाहर जा नहीं सकते थे, क्योंकि अगर हम बाहर गए और किसी सीनियर ने जो आदत से मजबूर होते हैं, हमारी रैगिंग ले ली तो यह दंडनीय अपराध हो जाएगा। ऐसी कोई समस्या न हो, इसके लिए दो टैंकर हमेशा हमारी सेवा में उपलब्ध रहते थे।

इसलिए फर्स्ट ईयर में हमें इस ग्लोबल प्रॉब्लम से नहीं जूझना पड़ा था। सेकंड ईयर में हमने पानी के कुछ मानव-निर्मित स्रोत खोज निकाले थे, जिनसे हमारा जीवन-यापन संभव हो सका। ये स्रोत थे : हमारे हॉस्टल के पीछे बने गार्ड रूम्स, जहाँ रहने वाले गार्ड अपने लिए

कुछ बड़े-बड़े ड्रमों में हमेशा पानी भरकर रखते थे। उनकी अनुपस्थिति में वह पानी कहाँ जाता था, इस बात का पता जब तक उन्हें लगा और वे पानी पर ताला लगाने लगे, तब तक हमारा आधा साल निकल गया था।

बाकी के बचे हुए आधे साल में हमने कभी मेस में से पानी लिया, तो कभी ग्राउंड के नल से।

आखिर के कुछ दिन हमने छत पर बनी हुई पानी की टंकियों की पेंदी में बचे रहने वाले थोड़े-से पानी को बाल्टी में कपड़े सुखाने वाली रस्सी बाँधकर निकालते हुए गुजारे। तब हमें पता लगा कि कुएँ से पानी निकालना कितना कठिन काम होता है। शायद इसीलिए मेरे गाँव के कुओं को लोगों ने इस्तेमाल करना बंद कर दिया था। इसकी वजह से वे धीरे-धीरे भरकर मर गए।

जैसे-तैसे वह साल भी गुजर गया। इसके बाद हम यह कहने लगे थे कि अब हम दुनिया की किसी भी खराब से खराब परिस्थिति में रह सकते हैं।

जीवन में जब भी हमें यह लगता है कि हम सबकुछ देख चुके हैं, जिंदगी कुछ नया सामने रख देती है और हमें हमारे जिंदा होने का एहसास करा देती है।

जब हमें लगा कि हम एक बाल्टी पानी के महत्व को समझ चुके हैं, तब हम थर्ड ईयर में पहुँच गए और हमें एक मग पानी की कीमत पता चली।

थर्ड ईयर का हॉस्टल पानी के किसी भी स्रोत से दूर था। वहाँ पर हम वाटर टैंकर के सहारे ही थे। रोज सवेरे तीन टैंकर पानी आता था। पहले टैंकर को खाली होने में कुछ सेकंड ही लगते थे। उस समय पानी की लूट होती थी। कुछ एथलीट टाइप के छात्र टैंकर के ऊपर ही चढ़ जाते और सीधा उसमें से ही पानी निकालना शुरू कर देते थे। साधन वही— बाल्टी और कपड़े सुखाने वाली रस्सी। यह वह दौर था, जब हमने दो बाल्टियाँ रखनी शुरू कर दी थीं। पानी की इस बंदरबाँट में अमित और सैंडी हमारे चिरकुट गैंग के एथलीट थे। वे आधुनिक युग के कुएँ यानी टैंकर में से पानी निकालते थे और मैं और ऐडी उससे अपनी आठों बाल्टियाँ भरते थे। उतना पानी ही हमारे पूरे दिन का सहारा होता था। कई बार मुझे असमय आए हुए 'नेचर्स बिग कॉल' को पूरा करने के लिए पानी उधार भी लेना पड़ा था।

ऐसा नहीं है कि हमारे हॉस्टल में कभी पानी आता ही नहीं था। पानी आता था, पर वह सुबह उठने वाले लोगों को ही मिल पाता था। जो लोग सुबह उठ पाते थे, उन्हें टैंकर की भीड़ में धक्के खाने का सौभाग्य प्राप्त नहीं होता था। वे तो बस नल में से गिर रहे पानी से ही गुजारा करते थे। ऐसे लोग अपनी नींद खराब करके सुबह जल्दी उठकर पानी का इस्तेमाल भी कर लेते थे और एक बाल्टी पानी भरकर भी रख लेते थे। हम चारों में ऐसा नसीब वाला कोई नहीं था। हमें सोने के चक्कर में कभी भी नल में से निकलते हुए पानी को देखने का मौका नहीं मिला था। हम तो सीधा टैंकर से पानी निकालते थे और कभी-कभी वहीं पर नहा

भी लेते थे।

थर्ड ईयर के 'सुनहरे दिन' चल रहे थे। वो दिन सुनहरे इसलिए थे, क्योंकि गर्मी के कारण हर जगह घास जलकर सुनहरी हो चुकी थी। उस समय हम मैक्सिमम वाटर क्राइसिस से जूझ रहे थे। एक दिन शाम को मैं अपने रूम में बैठा अप्लायड थर्मोडायनेमिक्स के नाग में उलझा हुआ था। तभी सैंडी अपनी खाली बाल्टी लेकर मेरे कमरे में घुसा और पूछा— "तेरे पास थोड़ा पानी है क्या?"

मैंने अपनी बाल्टी की तरफ इशारा किया, जो जमीन पर नशे में धुत देवदास की तरह लेटी हुई थी।

"ऐडी और अमित के पास भी पानी नहीं है। स्सालो, पानी से नहाते हो क्या?" सैंडी ने गुस्से में कहा।

"हाँ।" मैंने भी सीधा-सा जवाब दे दिया।

यह सुनकर उसकी आँखें 'शाकाल' की आँखों से भी बड़ी हो गईं। वह झल्लाकर बोला — "यहाँ मैंने तीन दिनों से ब्रश भी नहीं किया है, माउथ फ्रेशनर से काम चला रहा हूँ और इन लाट साहेब ने नहाने में पानी बर्बाद कर दिया!"

उसकी आवाज सुनकर ऐडी और अमित भी मेरे कमरे में आ गए।

सैंडी मेरी कुर्सी पर मुँह लटकाकर बैठ गया था। ऐसा लग रहा था कि वह बस रोने ही वाला है। वह बड़बड़ा रहा था— "स्साला, जान पे खेल के टैंकर में से पानी निकालो और ये व्हेल मछली बने हैं, जो बिना नहाए रह नहीं सकते। आज जब मुझे नहाने की जरूरत है, तो कहते हैं पानी नहीं है।"

"इसको क्या हो गया आज! यह नहाने के लिए क्यों मरा जा रहा है?" मैंने ऐडी से पूछा।

उसने ना में कंधे उचका दिए।

इससे पहले कि मेरी प्रश्नवाचक निगाहें अमित तक पहुँचतीं, वह बताने लगा— "आज लता के पैरेंट्स आने वाले हैं। लता ने इसे उन्हें स्टेशन से लाने के लिए कहा है। अब यह तो आखिरी बार पिछले हफ्ते ही नहाया था। नाव 'एक्स' और 'वाइल्ड स्टोन' हैव लेफ्ट हिम। अब कोई भी डियोड्रेंट इस पर अपना असर नहीं दिखा पा रहा है। यह पहली बार लता के पैरेंट्स से मिलने जा रहा है और इस हालत में गया, तो वो इसे कुली भी नहीं समझेंगे। इसकी गाड़ी तो यार्ड में से निकलने से पहले ही डीरेल हो जाएगी..."

"...इसलिए यह पानी की इतनी खोज कर रहा है, ताकि अपने आप को प्रेजेंटेबल बना सके।" मैंने सारी कहानी समझने के बाद अमित की बात पूरी की। "तुम्हें नहीं लगता कि यह लता नाम का इंजन इससे कुछ ज्यादा ही माल ढुलाई करवा रहा है?" मैंने अमित और ऐडी

की तरफ देखकर कहा।

धड़ाम!!!

तभी जोर से कुर्सी पटकने की आवाज आई। सैंडी कुर्सी को लात मारकर गिरा चुका था और मेरे सामने खड़ा था। उसे देखकर मैं 'आँखों से निकलने वाली चिंगारियों' का मतलब समझा था। कुल मिलाकर कहूँ, तो वह बहुत गुस्से में था।

"देख दोस्त, मेरी बात समझ..." मैंने उसे समझाते हुए कहा— "...तुझे नहीं लगता कि कुछ ज्यादा ही हो रहा है। तू उसके लिए गिफ्ट खरीदता है, उसे खाना खिलाने अच्छे होटल में ले जाता है, उसकी शॉपिंग के पैसे भी तू ही देता है। पिछली बार जब उसका भाई यहाँ दस दिनों के लिए कोई कोर्स करने आया था, तब उसे तूने बिना परमिशन अपने हॉस्टल में रखा था। तू जानता है ना कि अगर यह बात वार्डन को पता चल गई होती, तो तुझे हॉस्टल से निकाल सकते थे..."

"बस रहने दे..." अभी मैं कुछ और कहता इसके पहले सैंडी चीखा— "...लता के बारे में अब कुछ मत बोलना।"

यह कहकर वह अपने कमरे में चला गया और इतनी जोर से दरवाजा बंद किया कि उसकी आवाज पूरे हॉस्टल में गूँज गई।

हम तीनों हैरान-परेशान अपनी-अपनी जगह पर ही खड़े रह गए। कुछ सेकंड तक कोई कुछ भी नहीं बोला। फिर धीरे से ऐडी ने कहा— "अब इसे पक्का वाला प्यार हो गया है।"

अमित भी कमरे से बाहर जा चुका था। मैं और ऐडी बिना कुछ बोले चुपचाप बैठे हुए थे। मैं समझ नहीं पा रहा था कि क्या करूँ।

तभी अमित कमरे में आया और उसने धीरे से दरवाजा बंद किया।

"यार, आज ये सब ऐसा अजीब-सा बिहेव क्यों कर रहे हैं?" उसकी इस हरकत को देखकर मेरे मुँह से निकला।

"आई हैभ फाउंड सम भाटर।" अमित ने हमसे कहा— "पानी का इंतजाम हो गया है। अपना दूसरा वाला फोन दो और मैं जैसा कहता हूँ वैसा करो।" अमित ने चुपके से हमारे पास बैठते हुए कहा।

मेरे पास दो फोन थे। एक फोन घर पर बात करने के लिए और दूसरा फॉर द अदर परपज्ड।

मैंने घर बात करने वाला फोन अमित को थमा दिया और उससे पूछा— "अब तू क्या फोन में से पानी निकालने वाला है?"

यह सुनकर ऐडी हँसने ही वाला था कि अमित ने उसे रोका— "पहले मेरी बात सुन ले, फिर क्लोज-अप का ऐड करना, ऐडी।" ऐडी की हँसी बाहर निकलने से पहले ही रुक गई।

अमित मेरी बगल में बैठ गया और एक सवाल किया— "तुम लोगों ने कभी विपुल को पानी के टैंकर के पास देखा है?"

"अबे, तू पानी का इंतजाम करने आया है या 'कौन बनेगा करोड़पति' खेलने!" ऐडी ने सवाल के जवाब में सवाल दागा।

"दिस क्वेश्चन इझ मदर आफ भाटर टुडे।" अमित ने तुरंत ही, 'नेसेसिटी इज मदर ऑफ इन्वेंशन' की तर्ज पर एक नया मुहावरा अँग्रेजी को समर्पित करते हुए, ऐडी की बात का जवाब दिया।

उसकी इस बात को सुनकर इसके पहले कि हम दोनों में से कोई कुछ कहता, अमित ने खुद अपने सवाल का जवाब दे दिया— "विपुल कभी भी पानी के टैंकर के पास नहीं जाता है। पता है क्यों?" और दूसरा सवाल भी पूछ लिया।

इस बार हमने कुछ भी बोलने की कोशिश ही नहीं की।

"क्योंकि..." अमित की 'द मिस्ट्री' कंटिन्यु थी— "...वह सुबह जल्दी उठता है। 'जो सोवत है वो खोवत है, जो जागत है वो पावत है' की कहावत में क्या तुम लोग यह जानते हो कि जो सोवत है वो 'क्या' खोवत है और जो जागत है वो 'क्या' पावत है?" अमित ने तीसरा सवाल पूछा।

"नहीं मास्साब। आप ही बता दें।" मैंने 'आज के गुरुजी' से रिक्वेस्ट की।

अमित ने मेरी बात पर ध्यान दिए बगैर कहना जारी रखा— "वह चीज है—पानी। शायद तुम्हें यह न पता हो कि अपने हॉस्टल में रोज सुबह आधे घंटे के लिए पानी आता है। उस समय जब तुम लोग अपने 'गदहे' बेचकर सो रहे होते हो, विपुल पानी का सदुपयोग करता है और दो बाल्टी पानी भरकर भी रख लेता है। मैं अभी देखकर आ रहा हूँ, उसकी बाल्टियाँ पानी से लबालब हैं..."

"और तू उससे फोन करके पानी माँगने वाला है..." ऐडी ने खुश होते हुए कहा।

"तुझे ऐसा लगता है कि वह पानी दे देगा?" अमित ने अजीब-सी निगाहों से ऐडी को देखते हुए कहा— "अभी हॉस्टल की सिचुएशन ऐसी है कि लोग जान दे सकते हैं, पर पानी नहीं। नो बडी भिल गीव यु अ सिंगल ड्राप आफ भाटर।" और ऐडी की खुशी पर पानी का गुब्बारा फोड़ दिया।

"अबे, तो तू फोन से क्या करने वाला है, बताएगा?" मैंने झल्लाते हुए पूछा।

ये तो C.I.D वालों से भी ज्यादा सस्पेंस क्रिएट कर रहा था।

"हाँ तो सुनो। मैंने एक बात गौर की है, जब भी विपुल को फोन पर बात करनी होती है, वह छत पर जाता है। शायद उसके रूम में 'अंबानी' का सिग्नल ठीक नहीं है। अभी मैं तेरे फोन से उसे फोन करूँगा और वह भी किसी लड़की की आवाज में। लड़की की आवाज

सुनकर वह खुशी से भागा-भागा छत की तरफ जाएगा। जब तक मैं उसे बातों में उलझाकर रखूँगा, तुम दोनों उसका पानी 'मार' लेना।" अमित ने अपनी 'ocean's-14' की प्लानिंग सुनाई।

अभी हम उसके इस प्लान के बारे में सोच ही रहे थे कि उसने फोन मिला दिया। फोन का स्पीकर ऑन था और हम साँसें रोके विपुल की आवाज सुनने का इंतजार कर रहे थे।

"हैलो।" हमारा इंतजार खत्म हुआ।

"जी, मैं मेनका बोल रही हूँ। मैं आपसे थोड़ी देर बात करना चाहती हूँ..." इससे पहले कि अमित आगे कुछ और कहता, विपुल बोला— "आप फोन रख दें और मुझे डिस्टर्ब ना करें। मुझे आपसे बात करने में कोई इंटरेस्ट नहीं है।" और फोन कट गया।

अमित का 'मास्टर प्लान' टेक ऑफ करने से पहले ही क्रैश हो गया था।

"स्साला मुझे पहले से ही डाउट था। अब क्लियर हो गया। ये तो पक्का 'गे' है। नाव सीक्रेट इझ आउट, ही इझ डेफिनेटली गे गाइज।" अमित ने यह कहते हुए गुस्से में फोन पटक दिया।

"क्यों मेरे 'चिरकुटों के एसीपी प्रद्युमन' अब क्या करोगे?" मैंने उसे ताना मारा और अपना फोन उठाकर जेब में रख लिया। इसका क्या भरोसा, कहीं गुस्से में जमीन पर फेंक दे तो!

"कुछ भी हो जाए, आज मैं सैंडी को पानी दिलाकर रहूँगा।" अमित ने हवा में हाथ उठाकर प्रतिज्ञा की।

"पर कैसे?" ऐडी ने पूछा।

तभी मैंने देखा कि अमित का ध्यान मेरे पीने के पानी के थर्मस की तरफ है। मैं पीने के पानी के लिए पाँच लीटर का 'मिल्टन' थर्मस रखता था। जैसे ही मैंने अमित को उस थर्मस की तरफ बुरी निगाहों से घूरते हुए देखा, मैं समझ गया कि अब क्या होने वाला है।

"नहीं...।" मैंने अमित के कुछ कहने से पहले ही अपना फैसला सुना दिया।

"स्साला, इनको देखो। घर में 'एंजेलिना जॉली' को रखे हैं और 'माल' देखने शहर जा रहे हैं।" अमित ने डायलॉग मारा।

"अबे मुझे प्यास ज्यादा लगती है और पीने का पानी कल सुबह मिलेगा। तब तक मुझे इससे ही काम चलाना है। इसलिए इसकी तरफ देखना भी नहीं।" मैंने अमित को धमकाया।

"दोस्त के लिए इतना भी नहीं करेगा। चिरकुट्स का नाम खराब हो जाएगा।" अमित ने इमोशनल ब्लैकमेल करने की कोशिश की।

"मैं चिरकुट्स के लिए तो कुछ भी कर सकता हूँ, पर सैंडी की 'आइटम' के लिए नहीं।" मैंने भी अपना फैसला दुहराया।

अमित समझ गया कि मैं ऐसे नहीं मानूँगा, तो उसने कुछ और सोचा।

मैं उसकी मंशा समझकर थर्मस उठाने के लिए दौड़ा, पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी। अमित थर्मस लेकर बाहर भाग चुका था।

सैंडी मेरे पीने के पानी से अपना हफ्तेभर का मैल छुड़ा रहा था और अमित मेरे सामने बैठा था। मेरा मन तो हुआ कि एक मुक्का मारकर उसका मुँह तोड़ दूँ, पर क्या करता, कमीना हुआ तो क्या हुआ दोस्त तो था! सैंडी लता के पैरेंट्स और अपने भावी इन-लॉज को रिसीव करने और अपना इंप्रेशन बनाने जा चुका था और मैं रातभर के लिए निर्जला व्रत कर रहा था।

# प्यार का वायरस

तीसरा साल 'प्लेसमेंट ईयर' होता है।

जब इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स की भीड़ प्लेन शर्ट और फॉर्मल पैंट खरीदने लगे, तब यह पता लग जाता था कि अब कॉलेज में कंपनीज के आने का सिलसिला शुरू होने वाला है।

हम चारों भी कपड़े की दुकान में अलग-अलग रंगों की प्लेन शर्ट ट्राई कर रहे थे। आमतौर पर इंजीनियरिंग में जाने के बाद सभी जींस और टी-शर्ट में ही दिखाई देते हैं। जींस और टी-शर्ट पहनने के पीछे दो कारण होते हैं : एक तो यह कि उसे पहनकर सभी 'कूल डूड' बनना चाहते हैं, ताकि लड़कियों को इंप्रेस कर सकें। दूसरा और महत्वपूर्ण कारण यह है कि एक जींस को कम-से-कम एक सेमेस्टर तक बिना धोए पहना जा सकता है। इससे पानी और मेहनत दोनों सेव होती थी।

कॉलेज के लड़कों को शर्ट के सेक्शन में देखकर सेल्समैन भी समझ गया कि हमें इंटरव्यू के लिए प्लेन शर्ट ही चाहिए होगी। इसलिए वह भी अलग-अलग रंगों, शेड्स और कंट्रास्ट की शर्ट दिखाने लगा। हमने भी ऐसी शर्ट पसंद करने की कोशिश की, जिसे पहनकर हम सो कॉल्ड 'प्रोफेशनल' दिखें। शर्ट फाइनल होने के बाद जैसे ही हम बाहर आने लगे, तो सेल्समैन ने रोका— "भैया, टाई नहीं लेंगे?"

तब हमें लगा कि हमसे अधिक एक्सपीरियंस्ड तो यह सेल्समैन ही है। फिर वह हमें शर्ट से भी महँगी टाई दिखाने लगा। शायद सारा प्रॉफिट वह टाई में ही बना रहा था। टाई की कीमत देखकर मैं समझ गया कि एक आम आदमी सिर्फ एक बार और वह भी अपनी शादी में ही टाई क्यों खरीदता है।

शर्ट, पैंट, टाई, जूते और मोजे खरीदने और एक महीने की पॉकेट मनी खर्च कर देने के बाद हम सब प्लेसमेंट की पीड़ा झेलने के लिए तैयार थे।

'इंटरव्यू देने से ज्यादा मुश्किल उसकी तैयारी करना होता है।' अब इस बात का सही

अर्थ पता लगा था।

हमारे कॉलेज में आने वाली सबसे पहली कंपनी 'INFOSYS' थी। उसकी एचआर एक स्लिम फिगर वाली लड़की थी, जो टाइट सूट पहने हुए स्टेज पर प्रेजेंटेशन दे रही थी। उसे देखकर ही कई लड़कों ने यह डिसाइड कर लिया कि अब तो यह कंपनी ही जॉइन करनी है। कृपया गलत ना समझें, उस प्रेजेंटेशन को देखकर नहीं बल्कि प्रेजेंटर को देखकर। कॉलेज में इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि कंपनी कैसी है और पैकेज कितना है। उस समय तो बस एक नौकरी की ही लालसा होती है, चाहे वह किसी भी कंपनी में हो। शायद यह बात वह एचआर भी जानती होगी, पर फिर भी वह पूरी तन्मयता से अपना प्रेजेंटेशन दे रही थी।

प्रेजेंटेशन के बाद एक रिटन टेस्ट था। आईटी कंपनी होने के बावजूद उसमें सभी ब्रांच के स्टूडेंट बैठे थे। ऐडी यह टेस्ट नहीं दे रहा था, क्योंकि उसे बस गूगल में ही जाना था। लता और सैंडी तो साथ-साथ ही बैठे थे। मैंने भी अपने संपूर्ण ज्ञान को बटोरकर रिटन टेस्ट दे ही दिया।

शाम को हम सभी से कॉन्फ्रेंस रूम में इकट्ठा होने के लिए कहा गया। हमारे ट्रेनिंग एंड प्लेसपेंट सेल के इंचार्ज मि. बत्रा ने सबसे पहले 'INFOSYS' की उस स्लिम फिगर वाली एचआर मिस रोज़ी को धन्यवाद कहा और फिर अल्फाबेटिकल ऑर्डर में उन चालीस लकी स्टूडेंट्स के नाम बताने लगे, जो अगले राउंड के लिए सिलेक्ट हुए थे। ऐडी ने टेस्ट नहीं दिया था, फिर भी वह हमारे साथ ही बैठा हुआ था। लता को छोड़कर हम तीनों दोस्त अगले राउंड में जा रहे थे। यह सुनने के बाद कि लता सिलेक्ट नहीं हुई है, सैंडी उसके साथ ही बाहर चला गया, जबकि हम सभी चालीस लोगों को थोड़ी देर ब्रीफ्रिंग के लिए वहीं कॉन्फ्रेंस रूम में ही रुकना था।

हम रात नौ बजे तक अपने रूम पर पहुँचे। उस समय सैंडी बिस्तर पर पड़ा हुआ था। उसे अपने सिलेक्ट होने की खुशी नहीं, बल्कि लता के न चुने जाने का दुख था।

मैंने सैंडी को बताया कि कल सुबह नौ बजे से इंटरव्यू होने हैं। उसने कुछ रिएक्ट नहीं किया। मैं भी अपने कमरे में चला आया और वह कपड़े निकालने लगा जो खास इस समय के लिए ही लिए थे।

सुबह मैं और अमित तैयार होकर सैंडी को बुलाने पहुँचे, तो वह तब भी वैसे ही पड़ा हुआ था जैसे हम उसे रात को छोड़कर गए थे।

मैंने थोड़ी हैरानी और थोड़े गुस्से से पूछा— "तैयार क्यों नहीं हुआ अब तक?"

"तुम लोग जाओ यार।" उसने बेरुखी से जवाब दिया— "मैं इंटरव्यू नहीं दूँगा।"

"हैव यू गौन मैड?" अमित ने चीखते हुए पूछा— "जिसका वेट हम सब फर्स्ट ईयर से

कर रहे हैं, आज जब वो टाइम आ गया तो तू कह रहा है कि मैं इंटरव्यू नहीं दूँगा!"

सैंडी पर इस बात का कोई असर नहीं हुआ। वह अब भी वैसे ही बिस्तर पर पड़ा था। उसे जैसे कोई फर्क ही नहीं पड़ रहा था।

मैंने दुबारा उससे पूछा— "अब बोलेगा भी, क्या बात है?"

"लता सिलेक्ट नहीं हुई है।" सैंडी ने अबकी बार जवाब दिया, जो मेरी समझ से बाहर था।

"हाँ। तो? मैं समझा नहीं।" मैंने फिर कहा।

"हम दोनों ने एक-दूसरे से वादा किया था कि हम एक ही कंपनी में काम करेंगे। अब अगर वह सिलेक्ट ही नहीं हुई, तो मैं इंटरव्यू देकर क्या करूँगा!" सैंडी ने अब भी कुछ कहा था, पर उसकी बात मेरी समझ से बाहर ही थी।

मेरे चेहरे पर सवाल देखकर उसने कहा— "तू नहीं समझेगा। तूने प्यार नहीं किया है न! तुम दोनों जाओ और 'फोड़' के आना।"

इससे पहले कि मैं आगे कुछ और कहता ऐडी, जो न जाने कबसे मेरे पीछे खड़ा था, ने मेरे कंधे पर हाथ रखा और मुझे बाहर ले आया।

"वो अभी नहीं समझेगा। उसे प्यार का वायरस लगा हुआ है। तुम दोनों जाओ और जॉब लेकर ही वापस आना।" ऐडी ने मुझे समझाया।

"अगर प्यार में इंसान बेवकूफ हो जाता है, तो अच्छा है कि मैंने कभी प्यार नहीं किया।" मैं मन ही मन बड़बड़ाया।

पर शायद ऐडी मेरे मन की बात समझ गया। उसने कहा— "एक बात याद रखना मेरे दोस्त, सच्चा प्यार करने की जरूरत नहीं होती है, वह तो पहली नजर में अपने आप ही हो जाता है और उसके बाद समझदारी और बेवकूफी में अंतर का पता ही नहीं लगता है।"

"पर पता कैसे लगता है कि प्यार हो गया?" मैंने भी सवाल छोड़ा।

ऐडी के पास इसका भी जवाब था— "जब सच्चा प्यार होता है, तब ऐसा लगता है कि दूर कहीं गाने बज रहे हैं..."

"...प्यार की पीएचडी आज ही कर लेगा या फिर इंटरव्यू के बाद के लिए भी कुछ छोड़ेगा!" अमित हमें फिर से रियल वर्ल्ड में ले आया।

ऐडी ने अँगूठा उठाकर ऑल द बेस्ट कहा और हम अपनी टाई को सँभालते हुए कॉफ्रेंस रूम में सजे जंग के मैदान को फतह करने निकल पड़े।

चिरकुट्स के लिए खुशखबरी फिफ्टी-फिफ्टी थी।

मेरी नौकरी लग गई थी और अमित की अँग्रेजी ने उसे एक बार फिर धोखा दे दिया था।

अमित आखों में आँसू लिए सैंडी के गले लगकर बोला— “आज एक बार फिर अँग्रेज जीत गए।”

सैंडी ने उसकी पीठ थपथपाई और कहा— “कोई बात नहीं। कोई तो ऐसी कंपनी होगी जिसे अँग्रेजी नहीं, टैलेंट चाहिए होगा।” वह उसे समझाने की कोशिश कर रहा था।

“चल यार बीयर पीते हैं। इसका सिलेक्शन और तेरा रिजेक्शन, दोनों एक साथ सेलिब्रेट कर लेंगे।” ऐडी ने इंजीनियर्स के सेलिब्रेशन का एकमात्र साधन बताया।

‘चियर्स!’

तीन बीयर और एक लिम्का का गिलास एक साथ टकराए, जिसके बाद खुशी और गम दोनों बराबर हो गए।

# और फिर दूर कहीं गाना बजने लगा...

किसी कंपनी के जाने के बाद उन स्टूडेंट्स के घर जाने का सिलसिला शुरू होता है, जिनका उस कंपनी में सिलेक्शन हो गया होता है। बस इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए मैं भी घर रवाना हो गया।

मेरे प्लेसमेंट की खबर मेरे घर पहुँचने से पहले ही वायरल हो चुकी थी। घर के बाहर रुकते ही बधाई देने वालों का सिलसिला शुरू हो गया। वह आंटी जिन्हें मैंने पहले कभी देखा भी नहीं था, मेरे पास आईं और मुझे आशीर्वाद देकर चली गईं। वो पड़ोसी जिनकी नजरों में आज तक मैं निकम्मा ही था, अपने लड़कों को मेरे जैसा बनने की सलाह देने लगे। कुछ अत्यधिक जिम्मेदार पैरेंट्स तो अपने बच्चों को मुझसे मिलवाने भी ले आए। मेरे सामने ही वे अपने बच्चों से कहते थे— "बेटा! भैया से कुछ सीख लो। इनका प्लेसमेंट बहुत बड़ी कंपनी में हुआ है।" इसके बाद वे मुझसे सलाह माँगने लगते कि अपने बेटे का एडमिशन किस कॉलेज में करवाएँ, कौन-सी ब्रांच लेनी चाहिए? वगैरह-वगैरह।

इन सवालों का मेरे पास कोई जवाब नहीं होता था। अब उन्हें क्या मालूम था कि यहाँ तो तुक्के में तीर लग गया था। 'जॉनी इंग्लिश, अगेन रीबॉर्न' हो गया था।

पर यह सब देखकर मेरे मम्मी-पापा के चेहरे पर संतुष्टि के जो भाव थे, उनका कोई मोल नहीं था। वे तो गर्व से फूले नहीं समा रहे थे। मम्मी तो अपने सभी रिश्तेदारों को फोन करने में ही लगी रहती थीं।

वो लोग खुश थे और मेरे लिए बस इतना ही काफी था।

उसी दिन शाम को जब मैं बाहर से पड़ोसियों के आशीर्वाद लेकर और उनके बालकों को अपनी 'वैल्युएबल एडवाइस' देकर घर आया, तो देखा कि एक अंकल पापा के साथ बैठे हुए हैं। दोनों कुछ ऐसी बात कर रहे थे, जो मेरे आते ही बंद हो गई। उन अंकल का चेहरा कुछ जाना-पहचाना लग रहा था। ऐसा लग रहा था कि इन्हें कहीं तो देखा है, पर कहाँ देखा

है यह याद नहीं आ रहा था। मैं अपने कमरे की तरफ जाने लगा, तो पापा की आवाज सुनाई दी— “इधर आओ बेटा। अंकल को नमस्ते करो।”

बचपन से लेकर अभी तक जब भी मैं पापा की आवाज सुनता, मेरा ऑपरेटिंग सिस्टम क्रैश हो जाता। मेरे सारे प्रोग्राम ‘फोर्स्ड क्लोज’ हो जाते। हालाँकि इंजीनियर बनने के बाद मैंने इस चीज में महारत हासिल कर ली थी कि थोड़ी देर में अपने सिस्टम को रीबूट कर सकूँ।

“नमस्ते।” मैं रजनीकांत के रोबोट ‘चिट्टी’ की तरह नमस्ते करने के बाद अपने कमरे में जाने लगा।

मुझे अब भी याद नहीं आया था कि आखिर ये अंकल हैं कौन।

“बबलू!” पापा की आवाज फिर से मेरे कानों में गूँजी और ‘चिट्टी’ को आगे के आर्डर मिले— “इधर आकर बैठो।”

ये पापा भी ना... पता नहीं मुझे अभी तक मेरे बचपन के नाम से क्यों बुलाते हैं और वह भी अनजान लोगों के सामने! ‘बबलू’— ऐसा लगता है जैसे दूधवाले का नाम है। अब मैं बड़ा हो गया हूँ। पापा मेरी शादी कराने वाले हैं, पर अब भी मुझे बड़ा नहीं समझते।

यह सोचते-सोचते मैं सामने के सोफे पर बैठ गया।

कुछ सेकंड, जो मुझे कई सालों की तरह लगे, की खामोशी के बाद अंकल ने बात शुरू की— “बेटा, इंजीनियरिंग में कौन-सी ब्रांच थी?”

“मैकेनिकल।”

“तुम्हारे पापा ने बताया कि तुम्हारा प्लेसमेंट हो गया है?” दूसरा सवाल।

‘नहीं, ये तो ऐसे ही कुछ भी बोलते रहते हैं।’ मैंने मन में सोचा। जब पता ही है तो पूछ क्यों रहे हैं?

अच्छा हुआ मन की बात कोई सुन नहीं सकता है।

“हाँ अंकल, इन्फोसिस में हुआ है।” यह बात मैंने मन में नहीं, जोर से कही थी।

ऐसे सवाल सुनकर मेरे मन में एक ख्याल आया कि कहीं ये अंकल मेरे होने वाले ससुर तो नहीं हैं? क्या यही अंकल उस दिन मुझे देखने आए थे?

अभी मैं अपने दिमाग के ‘लॉस्ट एंड फाउंड’ सैक्शन में उथल-पुथल मचा रहा था कि तभी दनदनाता हुआ तीसरा सवाल आया, जिसने इन सब सवालों की पोल खोल दी।

“बेटा, सरकारी नौकरी नहीं करनी है?”

मैं समझ गया कि अभी तक के सवाल तो बस इस सवाल की भूमिका बनाने के लिए थे।

आज भले ही प्राइवेट कंपनियाँ कितने ही बड़े पैकेज देती हों, पर हमारे देश में सरकारी नौकरी की जो बात है, वह प्राइवेट नौकरी में नहीं है। अगर कोई बाप अपनी बेटी के लिए वर खोजते है, तो सबसे पहली प्राथमिकता सरकारी नौकरी वाले लड़के को दी जाती है।

अब मुझे यकीन होने लगा था कि ये वही अंकल हैं, जो मुझे देखने आए थे। इसका मतलब यह हुआ कि ये मेरे होने वाले 'ससुर जी' हैं।

यह विचार मन में आते ही एक बिजली का झटका लगा। मेरे सारे सेंसर्स एक्टिव हो गए। अब मेरा इंजीनियर दिमाग खुराफात करने लगा।

क्या इनकी बेटी से ही मेरी शादी होने वाली है?

अगर इनकी बेटी इन पर गई होगी, तो मुझे नहीं करनी शादी। मेरे दिमाग ने मुझसे कहा।

तभी दूसरा ख्याल आया। मुझसे पूछेगा कौन? यह अरेंज मैरिज है और इसके कानून के हिसाब से लड़का और लड़की को छोड़कर बाकी सभी की राय ली जा सकती है। इसलिए मेरे पास यह विकल्प तो था ही नहीं कि मैं यह कह सकूँ कि मुझे किस लड़की से शादी करनी है।

इससे पहले कि मैं अरेंज मैरिज के कानूनों में लूप-होल निकालता, मेरे होने वाले ससुर जी ने कहा— "इन्फोसिस भी अच्छी कंपनी है बेटा, पर सरकारी नौकरी आखिर सरकारी ही होती है।" ये शब्द निकले तो उनके मुँह से थे, पर मैं जानता था कि इसके पीछे के विचार मेरे पापा के ही हैं।

मैंनें भी अपना रटा-रटाया एक लाइन का जवाब दे दिया— "नहीं अंकल, मेरे लिए यही ठीक है और मेरी रुचि भी इसी में है।"

अब तक मेरा सिस्टम भी ऑन हो चुका था।

इसके पहले कि कोई और सवाल या ऑर्डर मेरे सिस्टम को दुबारा क्रैश कर दे, मैंने अपने होने वाले ससुर, जिनका दामाद मैं तभी बनने को राजी था अगर उनकी बेटी उनके जैसी न दिखती हो, को नमस्ते कहा और अपने कमरे में जाने के बहाने पिछले दरवाजे से चुपचाप बाहर निकल गया।

थोड़ी देर बाद जब मैं घर आया, तब तक वो अंकल जा चुके थे और मेरे पापा भी बाहर किसी काम से गए हुए थे।

अभी मैं अपने कमरे में पहुँचा ही था कि मेरा भाई मेरे पास आकर धीरे से बोला —"भैया! भाभी बड़ी सुंदर हैं।"

यह सुनकर मेरे मन में तो बेसन के लड्डू फूटने लगे, क्योंकि मोतीचूर के लड्डू मुझे पसंद नहीं थे।

फिर हर उस लड़के या लड़की की तरह जिसके मन में अपनी शादी की बात सुनकर तो लड्डू फूट रहे होते हैं, पर फिर भी वह उपर से गुस्सा होने का नाटक करता है या करती है, मैंने भी अपने भाई के सिर पर धीरे से चपत लगाई और कहा— "चल भाग यहाँ से। अभी मुझे शादी नहीं करनी है।"

"तो जाकर पापा से कह दो, क्योंकि वो तो भाभी की फोटो देखकर शादी फिक्स कर चुके हैं।" भाई ने हिदायत दी।

वह भी यह जानता था कि मैं पापा के सामने कुछ नहीं बोल सकता हूँ।

इतना कहकर वह अपने कमरे में जाने लगा। फिर अचानक वह रुका और बोला— "वैसे भाभी का नाम माला है।" फिर भागकर अपने कमरे में चला गया।

'माला! नाम ठीक है क्या?' मैंने सोचा।

अब मैं यह जानता था कि माला की फोटो घर में आ चुकी है और मुझे यह भी पता था कि वो फोटो मुझे तो मिलनी नहीं है। उस फोटो को सभी रिश्तेदारों को दिखाया जाएगा। अड़ोस-पड़ोस की आंटियाँ सर्वदलीय बैठक में आए हुए राजनीतिक दलों की तरह अपने-अपने हिसाब से उसमें कमियाँ निकालेंगी, पर अंत में सर्वसम्मति से मेरी मम्मी से यही कहेंगी कि लड़की सुंदर है।

मैंने भी सोचा कि अभी इंतजार करते हैं, शायद किसी तरह फोटो देखने को मिल जाए। पर उस छोटे बच्चे की तरह, जिसे यह पता हो कि घर में मिठाई रखी है और वह खाने के लिए जिद करता है, मेरा मन भी मुझसे माला की फोटो देखने की जिद करने लगा।

अब मन के आगे किसकी चली है, जो वह मेरी बात मान लेता।

मैंने भी फोटो देखने की ठान ली। आखिर पता तो चले कि माला अपने पिताजी पर तो नहीं गई है।

अब मैं पापा से तो फोटो माँग नहीं सकता था, इसलिए मम्मी की तलाश करने लगा और हमेशा की तरह वे किचन में ही मिलीं। वे कटहल छील रही थीं। यह देखकर मुझे अमित की बात याद आ गई— "कटहल की सब्जी बनानी आती है कि नहीं?"

मैं हँस पड़ा और मम्मी के पास जाकर बैठ गया। उन्हें कटहल छीलते हुए देखकर मैं समझ गया कि यह कोई मटर छीलने जैसा आसान काम नहीं है।

इससे पहले कि मम्मी मुझसे कुछ कहतीं, मैंने पूछा— "मम्मी, वो अंकल कौन थे, जो मेरा इंटरव्यू ले रहे थे? नौकरी देनी थी क्या?"

"नौकरी नहीं बेटा, अपनी बेटी दे रहे हैं।" मम्मी ने मेरी तरफ देखते हुए कहा।

मैं नकली हँसी हँसा, ताकि उन्हें यह पता न चले कि मेरे मन में क्या चल रहा है। फिर मैंने थोड़े गुस्से और रूखेपन से कहा— "तो आज किसलिए आए थे? देख रहे थे क्या कि

घर कैसा है? लड़के की जाँच करने आए थे?"

वैसे तो मैं यह जानता था कि वो किसलिए आए थे, पर मैं नादान बन रहा था।

"ऐसे नहीं बोलते हैं बेटा। हर बाप पूरी तसल्ली करने के बाद ही अपनी बेटी का रिश्ता कहीं करता है। वैसे वो अपनी बेटी की फोटो लेकर आए थे।" मम्मी ने समझाते हुए कहा।

अब मम्मी ने मुद्दे की बात की थी।

"फोटो मुझे भी दिखाओ।" मैंने तपाक से कहा।

यह जानते हुए भी कि ऐसा कभी नहीं होगा, मैंने एक कोशिश की और उसका नतीजा वही हुआ जिसका मुझे अंदाजा था।

"चल भाग यहाँ से। अपने पापा से माँग फोटो। बेशर्म।" यह कहकर मम्मी ने साफ कर दिया कि मैं फोटो नहीं देख सकता हूँ।

मैं भी हार मानने वाला नहीं था। अब प्लान 'बी' ट्राई करना था।

पर उसके पहले प्लान 'बी' बनाना था।

मैं देवी सरस्वती की मदद ले चुका था। अब देवी लक्ष्मी से सहायता माँगने की बारी थी।

मैं अपने भाई के कमरे की तरफ चल दिया। वह AIPMT की किताब बंद करके उस पर लगे हुए अखबार के कवर में कैटरीना की फोटो को घूर रहा था।

"वह नहीं आएगी परीक्षा में मदद करने।" मैंने धीरे से कहा।

उसने हड़बड़ाकर किताब खोल ली और बोला— "मैं तो फॉर्मूले रिवाइज कर रहा था।" उसकी शक्ल ऐसी हो गई थी, जैसे किसी ने उसे पोर्न सीडी के साथ पकड़ लिया हो।

"हाँ मैं जानता हूँ।" मैंने उसके पास बैठते हुए कहा। अगर आज मुझे उसकी जरूरत नहीं होती, तो अब तक मैं मम्मी को बता चुका होता। पर वही तो मेरा प्लान 'बी' था। इसलिए मैंने कुछ नहीं कहा और उसके पास बैठकर किताब फिर से बंद कर दी, पर इस बार दूसरी तरफ से।

अब कवर में से अनिल कपूर झाँक रहे थे।

मैं दो मिनट तक यह सोच रहा था कि बात शुरू कैसे करूँ और वह हैरानी से मेरा मुँह देख रहा था कि अब तक मैंने मम्मी से उसकी शिकायत क्यों नहीं की।

"पिछली बार तू कह रहा था कि तुझे मेरा आईपैड चाहिए।" मैंने एक फोटो के लिए आईपैड का सौदा करने का सोच लिया था।

वैसे इससे कम में वह मेरी बात सुनता भी नहीं।

"अब मुझे उसकी जरूरत नहीं है।" भाई ने धीरे से कहा।

"यह भी कम चालाक नहीं है।" मैंने मन में सोचा।

“ठीक है फिर...।” कहकर मैं उठने लगा।

“अब आप इतना कह रहे हो, तो दे ही दो।” मेरा भाई तुरंत बोला।

“तब तुझे मेरा एक काम करना होगा।” अब मैंने सौदेबाजी शुरू की।

आईपैड की कुर्बानी और सौ रुपए का प्रसाद चढ़ाने के बाद आखिरकार डील फाइनल हो गई।

“ये छोटे भाई भी कम बदमाश नहीं होते हैं।” मैंने अपने आप से कहा।

“आप से ही सीखा है भैया।” शायद वह मेरी बात समझ गया था। “फीस तैयार रखो, मैं अपना काम करके आता हूँ।” कहकर वह कमरे से बाहर चला गया।

माँ लक्ष्मी ने अपना काम कर दिया था।

अगले दिन सुबह मैं अपने कमरे में मोबाइल पर फेसबुक का पेज खोलकर बैठा हुआ था। सैंडी ने प्यार की एक शायरी लाइक की थी। कुछ और न मिलने पर मैंने उसे ही क्लिक किया।

“मेरी फीस कहाँ है?” मेरा भाई दरवाजे पर खड़ा था। उसके हाथ में एक लिफाफा था, जिस पर किसी फोटो स्टूडियो का नाम लिखा था।

मेरा दिल जोरों से धड़कने लगा। मन में ख्यालों के हिंद और अटलांटिक महासागर साथ में उमड़ पड़े। दिमाग में एक साथ हजारों-लाखों तस्वीरें बनने लगीं। पेट में गुदगुदी-सी होने लगी। मैंने वह लिफाफा लेने के लिए हाथ आगे बढ़ाया, तो उसने हँसते हुए अपना हाथ पीठ के पीछे छुपा लिया और बोला— “पहले फीस।”

मैंने टेबल से अपना आईपैड और पर्स से सौ का नोट निकालकर उसे देते हुए कहा— “कैसे लाया ये?”

“नेम इज मिश्रा। राहुल मिश्रा।” वह जेम्स बॉन्ड बनते हुए बोला।

“ज्यादा हीरो मत बन, बता कैसे लाया?” इस बार मैंने बनावटी गुस्सा दिखाते हुए पूछा।

तब उसने सच बताना शुरू किया— “पापा की टेबल पर रखी हुई थी। मैं उठा लाया। इससे पहले कि पापा बाथरूम से निकलें, जल्दी देख लो और मुझे वापस करो। मैं इसे फिर से वहीं रख दूँगा।”

यह कहकर उसने वह लिफाफा मेरी तरफ बढ़ा दिया। मैंने धड़कते दिल और काँपते हाथों से लिफाफा खोला।

लिफाफा खाली था।

इससे पहले कि मैं कुछ समझ पाता या भाई से कुछ पूछता, वह जोर से हँसने लगा।

'इस समय भी यह शरारत कर रहा है।' मैंने उसे घूरते हुए अपने मन में सोचा।

मुझे घूरता हुआ देखकर उसने सोचा कि मैं कहीं उसे अपना आईपैड देने से मना न कर दूँ। उसने तुरंत ही अपनी जेब से एक फोटो निकालकर टेबल पर मेरे सामने रख दी।

मैं फोटो को उठाने ही वाला था कि वह जल्दी से बोला— "अरे भैया। अपने मोबाइल में फोटो की फोटो खींच लो ना। फिर आराम से देखते रहना। अभी मुझे इसे वापस रखना है।"

'इसका दिमाग तो मुझसे भी तेज चलता है। तभी तो मेडिकल की तैयारी कर रहा है।' मैंने मन में कहा और उसकी बात मान ली।

वह टेबल पर से फोटो उठाने ही वाला था कि मैंने उसका हाथ पकड़ लिया और उससे बोला— "इसके बारे में किसी को भी पता नहीं लगना चाहिए।"

उसने लिफाफा उठाते हुए कहा— "आप निश्चिंत रहो। पैसे लिए हैं भैया और बेईमानी के कामों में ही ईमानदारी जिंदा है। यह राज मेरी रूह को भी नहीं पता चलेगा। यह मेरा कमिटमेंट है आप से और आप तो जानते ही हो कि एक बार मैंने जो कमिटमेंट कर...।"

"बस अब डायलॉगबाजी नहीं। चल निकल यहाँ से।" मैंने उसकी बात बीच में काटकर ही उसे भगा दिया। "और दरवाजा बंद करके जा।"

वह दरवाजा जोर से खींचकर भाग गया।

उसके जाने के बाद मैंने इत्मीनान से फोटो देखने के लिए मोबाइल का एलबम खोला ही था कि दरवाजा फिर से खुला। मैंने तुरंत ही मोबाइल जेब में रख लिया और दरवाजे की तरफ देखने लगा।

"भाभी बहुत सुंदर हैं।" मेरा भाई हँसते हुए बोला और मेरे कुछ कहने से पहले ही भाग भी गया।

'ये हमेशा तंग करता रहता है।' मैंने अपने आप से कहा और फिर से मोबाइल निकाल लिया।

इससे पहले कि मैं उस फोटो को देख पाता, दुबारा दरवाजा खुला।

'यह फिर से आ गया तंग करने।' मैंने सोचा और उसकी तरफ देखा ही नहीं।

मैं अभी फोटो निहार ही रहा था कि मम्मी की आवाज सुनाई दी— "क्या हमेशा मोबाइल में सिर खपाता रहता है...।"

मैंने घबराकर सिर उठाया, तो देखा कि मम्मी हाथ में एक लिस्ट लिए हुए मेरे सामने ही खड़ी हैं।

मैंने फटाफट मोबाइल टेबल पर रख दिया और चेहरे पर क्वेश्चन मार्क बनाकर उन्हें

देखने लगा। मुझे डर था कि कहीं मम्मी ने वह फोटो तो नहीं देख ली।

"....जल्दी से जाकर यह थोड़ा-सा सामान बाजार से ले आ।" मम्मी ने वह लिस्ट मुझे थमाते हुए कहा।

"यह थोड़ा सामान है? इसमें तो कई घंटे लग जाएँगे!" मैंने लिस्ट को देखकर मम्मी से कहा। मैं इस समय कहीं भी नहीं जाना चाहता था।

"हाँ, तो तुझे यहाँ कौन-सा काम है!" मम्मी ने भी जवाब दे दिया।

मैं समझ गया कि अब मेरे पास कोई और रास्ता नहीं है। मुझे बाजार जाना ही पड़ेगा। मैं इतनी मुश्किल से कुर्सी से उठा, जैसे मेरे कंधे पर पचास किलो की बोरी रखी हो। मैंने टेबल पर से मोबाइल उठाया ही था कि मम्मी ने कहा— "जरा अपने फोन से मौसी का नंबर तो लगा दे, कुछ बात करनी है।"

मैंने नंबर मिला दिया और चुपचाप वहीं पर खड़ा हो गया। तभी उन्होंने कहा— "अरे जा ना बाजार, खड़ा क्या है? सब सामान जल्दी से लेकर आ।"

मैंने कहा "मोबाइल तो आपके पास है। कैसे जाऊँ?"

"तू मोबाइल से जाएगा या साइकिल से! मोबाइल है मेरे पास। आकर ले लेना। वैसे भी तुझे गाने ही तो सुनने होते हैं। जा चुपचाप।" वो डाँटते हुए बोलीं।

मैं बिना कुछ कहे मुँह लटकाकर बाहर चला गया। अब मम्मी को क्या बताऊँ कि आज मोबाइल में गाने नहीं सुनने हैं। अब मेरे पास एक ही रास्ता था कि मैं जल्दी से सब सामान लेकर आ जाऊँ।

मैं साइकिल लेने के लिए बाहर निकला, तो देखा कि मेरी साइकिल नदारद थी। शायद मेरा भाई उसे लेकर कहीं गया था। अब हॉस्टल में रहने का यह नुकसान तो होता ही है कि आपकी सभी चीजों पर छोटे भाई-बहनों का कब्जा हो जाता है।

मैं वापस अंदर आने लगा, तभी मम्मी फोन लेकर बाहर आईं। अंदर सरकारी नेटवर्क कम ही आता था। मुझे अभी तक बाहर खड़ा देखकर वे फोन पर बात करना छोड़ मुझसे बोलीं— "अभी तक यहाँ क्या कर रहा है! जल्दी क्यों नहीं जाता।"

"मेरी साइकिल ही नहीं है।" मैंने झल्लाकर कहा। अब मुझे भी गुस्सा आ रहा था।

"तो दूसरी साइकिल ले जा।" मेरी झल्लाहट की परवाह न करते हुए मम्मी ने उपाय बताया।

यह दूसरी साइकिल प्राचीन काल की थी। शायद जब इंसान ने पहली बार साइकिल बनानी शुरू की होगी, तब उसकी एक कॉपी दादाजी लेकर आ गए होंगे। उसकी हालत ऐसी थी कि अब तो कबाड़ी भी उसे लेने से मना कर देते थे और पापा उसे फेंकने को तैयार नहीं थे।

कोई दूसरा उपाय न देखकर मैंने मम्मी की राय मानने का ही फैसला लिया, क्योंकि अगर मैं ऐसा न करता तो मुझे पैदल ही बाजार जाना पड़ता। पैदल बाजार आने-जाने में ही बहुत समय लगता और मेरे पास इतना समय बरबाद करने के लिए नहीं था। मेरे मन में तो फोटो देखने की धुन सवार थी।

मैंने वह ऐतिहासिक साइकिल उठाई और चल पड़ा।

मैं उस साइकिल को हवाई जहाज की तरह उड़ाने की कोशिश करने लगा।

पर जिस जमाने में वह साइकिल बनी होगी, शायद उस जमाने में हवाई जहाज के बारे में राइट ब्रदर्स ने भी नहीं सोचा होगा। इसलिए वह साइकिल, साइकिल की रफ्तार से भी चलने को राजी नहीं थी। अगर उसे उसकी मर्जी से अधिक तेजी से चलाने की कोशिश करता, तो 'खट' की आवाज के साथ उसकी चेन उतर जाती थी।

तीन बार चेन चढ़ाने और पैंतीस मिनट लगाने के बाद किसी तरह मैं उस साइकिल को बाजार तक पहुँचाने में कामयाब हो गया। तब मेरी समझ में आया कि पुराने जमाने में लोग पैदल क्यों चला करते थे।

मेरे हड़बड़ी मचाने के बावजूद उस दुकानदार ने सब सामान देने में मेरे चालीस मिनट बरबाद कर दिए।

मैंने सारा सामान थैले में भरा और चलने लगा कि पीछे से दुकानदार की आवाज आई — "अभी सरकार ने मुफ्त में सामान देना शुरू नहीं किया है।"

मैं पैसे देना तो भूल ही गया था। मैंने जेब में हाथ डाला, तब पता लगा कि मैं पर्स लाना भी भूल गया हूँ।

वो तो अच्छा हो उस दुकानदार का, जिसने मेरे पापा का नाम सुनकर मुझे उधार में सामान दे दिया। मैंने उसे 'थैंक्यू' और 'कल पैसे दे दूँगा' कहा और झेंपते हुए वापस चल पड़ा।

अबकी बार मैंने सिर्फ सामान को ही साइकिल के हवाले करने और साइकिल को खींचते हुए घर तक लाने का निर्णय लिया। इस फैसले और मेरे शरीर से बहते हुए पसीने ने मुझे पाँच मिनट बचाकर दे दिए थे।

जब मैं घर पहुँचा, तो पापा अंदर बैठे हुए थे। मुझे पसीने से लथपथ देखकर वे बोले —"पैदल क्यों गया था? दादाजी की साइकिल ले गया होता।"

मैं बिना कुछ कहे, समान लेकर किचन में चला गया।

मम्मी अब तक मोबाइल पर मौसी को हमारे शहर के मौसम का हाल बता रही थीं। मैं समझ गया कि अभी मुझे मोबाइल मिलने में कुछ देर और लगेगी, क्योंकि अभी मम्मी यह भी बताएँगी कि आज घर में खाना क्या बना है। यह सोचकर मैंने फ्रिज से पानी की बोतल

निकाली और अपने पेट के हवाले कर ही रहा था कि पापा ने दूध लाने का ऑर्डर पास कर दिया। अब अगर मैं मोबाइल लेने के लिए मम्मी की बात खत्म होने का इंतजार करता, तो पापा से डाँट पड़ने की पूरी संभावना थी। मैं समझ गया कि अब दूध लाने के बाद ही फोटो देखने को मिलेगी। इसलिए मैंने मन के तोते को वापस पिंजरे में डाला और दूध लाने के लिए निकल पड़ा।

मेरी नजरों के सामने सिर्फ उस फोटो की आँखें ही दिख रही थीं। उस फोटो में मैं एक नजर में सिर्फ उन आँखों को ही ठीक से देख पाया था। ऐसा कुछ खास नहीं था उन आँखों में, पर न जाने फिर भी क्यों उन पर से ध्यान हट ही नहीं रहा था।

मैं तो बस खो ही गया था। उस समय मुझे दुनिया की कोई खबर नहीं थी। मैं बस उन आँखों को ही देख रहा था। उन आँखों की गहराई में डूबते-उतरते मैं कब दूधवाले की दुकान तक पहुँच गया, यह मुझे भी नहीं पता लगा।

"बाबू डिब्बा तो लाए नहीं, दूध किसमें ले जाओगे?" दूधवाले की आवाज सुनकर मुझे होश आया। तब होश के साथ यह याद भी आ गया कि मैं दूध का डिब्बा लाना तो भूल ही गया हूँ। मैंने वापस घर की तरफ दौड़ लगा दी। मैं 'इथन हंट' की तरह भागते हुए घर में घुसा और किसी की कोई बात सुनने के पहले ही डिब्बा लाने का 'मिशन इंपॉसिबल' पूरा कर लिया। यह बात तो एकदम पक्की थी कि अगर मैं कोई बात सुनने के लिए रुका होता, तो वह बात 'डाँट' ही होती। खैर, मेरे पास इसका वक्त नहीं था। मुझे दूध खत्म होने से पहले जल्दी-से-जल्दी फिर से दूधवाले की दुकान तक पहुँचना था।

वो लोग जो यह कहते हैं कि अगर आप किसी को पूरी शिद्दत से चाहो, तो सारी कायनात मिलकर आपको उससे मिलवाने में लग जाती है, सरासर गलत कहते हैं। आज मेरे साथ सबकुछ उल्टा ही हो रहा था।

अभी कुछ देर पहले ही बाजार से आने में मैंने अपना डेढ़ लीटर पसीना बहाया था और अबकी बार जब मैं फिर से अपना आधा लीटर पसीना निकालकर दूधवाले की दुकान पर पहुँचा, तब तक उसका सारा दूध बिक चुका था। अब मुझे दूध लेने के लिए फिर से बाजार जाना था। आज जब मैं जल्दी घर जाना चाहता था, तब लगातार देर हो रही थी। मन में अजीब-सी बेचैनी हो रही थी। ऐसा लग रहा था कि पेट में तितलियाँ उड़ रही हों। एक अजीब-सा एहसास हो रहा था।

किसी तरह मैं दूध लेकर घर पहुँच ही गया। मैंने यह सोचा था कि घर पहुँचकर आराम से फोटो देखूँगा। पर मैं यह भूल गया था कि यदि सबकुछ वैसा ही होने लगे जैसा हम सोचते हैं, तब भगवान को कौन याद करेगा! मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ। भगवान ने अपनी प्रेजेंस का एहसास मुझे करवा दिया। जब मैं दूध लेकर थका-माँदा घर पहुँचा, तो देखा कि मेरी बुआ अपने बच्चों को लेकर आई हुई हैं। अब मैं सबके सामने तो अपना फोन लेकर कुछ

देख नहीं सकता था। तब मैंने भी यह सोचा कि उस फोटो को अब मैं निश्चिंतता के साथ ही देखूँगा। मैं अपनी होने वाली पत्नी की तस्वीर को हड़बड़ी में देखना नहीं चाहता था। मुझे यह तो मालूम था कि मेरी शादी अब उस लड़की के साथ ही होगी, इसलिए मैं चाहता था कि जब मैं उसकी तस्वीर को देखूँ तब आस-पास कोई न हो। मैंने रात तक इंतजार करने का फैसला लिया। सारे काम निबटाकर रात को नौ बजे जब मैं अपने कमरे में जाने लगा, तब मम्मी ने हैरानी से कहा— "आज बड़ी जल्दी सोने जा रहा है! टीवी नहीं देखेगा क्या?"

इससे पहले कि मैं कुछ कहता, मेरा भाई शरारती सुर में बोला— "आज भैया टीवी नहीं, कुछ और देखेंगे।"

"चुप रहेगा या मैं तुझे तारे दिखाऊँ।" मैंने उसे डाँटा और फिर मम्मी से बोला— "नहीं मम्मी, आज बहुत थक गया हूँ, नींद आ रही है।" यह कहकर मैंने दरवाजा बंद कर लिया।

अब फोटो मेरे सामने थी। उस फोटो को देखकर मुझे हैरानी और खुशी एक साथ हुई। खुशी इस बात की थी कि वह अपने पिता पर नहीं गई थी और हैरानी इस बात की थी कि उसका चेहरा देखने में कुछ खास नहीं लग रहा था, फिर भी उसमें एक आकर्षण था। मुझे तो वह अपने कॉलेज की हर लड़की से अधिक सुंदर लग रही थी। मैंने अपने मन में उसकी जितनी भी तस्वीरें बनाई थीं, वह उन सबसे ज्यादा खूबसूरत थी। अगर पहली नजर का प्यार सच में होता है, तो शायद मुझे प्यार हो गया था। ऐसा लग रहा था जैसे मैं और वो जन्म-जन्म के साथी हों। दूर कहीं गाना बज रहा था— चाँद-सी महबूबा हो मेरी कब ऐसा मैंने सोचा था, हाँ तुम बिल्कुल वैसी हो जैसा मैंने सोचा था।...

# चिरकुट्स इन्वेंशन

"तुझे प्यार हो गया है क्या?" कॉलेज में घुसते ही सबसे पहले ऐडी ने मुझसे यही सवाल पूछा था। उसे यह बात कैसे पता लगी, मुझे नहीं मालूम है, पर मैं यह समझ गया कि वह प्यार के मामले में सचमुच एक्सपर्ट है।

यह बात सच थी कि मुझे प्यार हो गया था। आज तक जिस प्यार को मैं बेकार समझता था, अब मैं उसी का हिस्सा था। अपने प्यार की फोटो को मोबाइल में और उसके एहसास को दिल में लेकर मैं प्यार के एक्सपर्ट्स के बीच आ गया था।

मुझे कॉलेज वापस आए हुए दो दिन हो गए थे। अब मैं ऐडी की हालत समझ सकता था। अब मुझे यह भी पता लग गया था कि सैंडी उस दिन नहाने के लिए क्यों मरा जा रहा था। ये सब हरकतें वो खुद नहीं करता था, बल्कि उसके अंदर जो प्यार का वायरस घुस गया था, वह उससे ऐसा करवाता था। इस वायरस का शिकार इंसान ऐसी-ऐसी हरकतें कर जाता है, जिसे नॉर्मल लोग पागलपन समझते हैं।

अब मेरे अंदर भी वह वायरस घुस चुका था। जब कभी भी मुझे समय मिलता, मैं मोबाइल निकालकर अपने प्यार की फोटो देख लेता था। मुझे हमेशा माला के ही ख्याल आते थे। वह मेरी हार्डडिस्क में परमानेंट फाइल की तरह सेव हो गई थी। क्लास में भी मैं उसके बारे में ही सोचता रहता था। हॉस्टल में रूम पर आकर अगर किताब खोलता था, तो हर दो मिनट में यह मन होता कि एक बार माला की फोटो देख लूँ। अब मैं आधे घंटे भी उसकी फोटो देखे बिना नहीं रह सकता था।

शायद यही वजह है कि शादी से पहले लड़का-लड़की को एक-दूसरे की फोटो नहीं दिखाई जाती है। पर अब क्या हो सकता था! मुझे प्यार का ऐसा वायरस लग गया था, जिसका एंटीवायरस ही नहीं बना है।

वह तो मेरी किस्मत अच्छी थी कि मेरा प्लेसमेंट हो गया था, वरना अब जो मेरी हालत

थी, इंटरव्यू तो क्या मैं रिटन भी क्लियर नहीं कर सकता था। अब मेरी हालत तो ऐसी हो गई थी कि किसी तरह बस इंजीनियरिंग पास कर लूँ। मुझे नहीं लग रहा था कि मैं अब किसी नौकरी की परीक्षा पास कर पाऊँगा। पढ़ने में मन ही नहीं लग रहा था। शायद इसीलिए माँ-बाप बच्चों की शादी उनकी नौकरी लगने के बाद ही करते हैं।

थर्ड ईयर खत्म होने वाला था। सबको प्रैक्टिकल्स और असाइनमेंट पूरे करने थे। मैं भी किसी तरह सब असाइनमेंट पूरे करके सबमिट करना चाहता था, पर यह संभव नहीं लग रहा था।

“माला की आवाज सुनेगा?” मैं ऐडी के रूम में बैठा अपने असाइनमेंट में लगा हुआ था कि सैंडी ने अचानक मुझसे यह सवाल किया।

मेरी समझ में ही नहीं आया कि मैं इसका क्या जवाब दूँ। मैं बस सैंडी की तरफ देखता रहा।

“अगर तू कहे, तो मैं तुझे उसकी आवाज सुना सकता हूँ।” सैंडी ने दुबारा मुझसे कहा — “इससे तेरी हालत कुछ सुधर जाएगी।”

“ऐसा कभी मत करना।” ऐडी ने तुरंत उसे टोका— “एक बार उसकी आवाज सुन लेने से इसकी हालत सुधरेगी नहीं, बल्कि और खराब हो जाएगी।”

फिर वह मुझे समझाने लगा— “मेरी बात सुन और अपने मन को समझा। अगर तू ऐसे ही रहा, तो इंजीनियरिंग पास नहीं कर पाएगा। और अगर ऐसा हुआ तो इन्फोसिस वाले तुझे नहीं लेंगे और फिर तेरी शादी भी माला से नहीं होगी। इसलिए अभी पढ़ाई में ध्यान लगा। और इस सैंडी की बातों में भूलकर भी मत पड़ना। यह प्यार में अभी कच्चा है।”

ऐडी ने अपनी एक्सपर्ट राय मुझे दी। मैंने भी उसकी बात सुनी और सिर हिलाकर फिर से अपना असाइनमेंट पूरा करने लगा।

प्यार में पड़े आदमी की सबसे बड़ी कमजोरी यही होती है कि वह किसी की बात समझ नहीं पाता है। मैंने भी ऐडी की बात बस सुनी थी, उसे समझने की कोशिश नहीं की थी।

उसी रात मैं सैंडी के रूम पर पहुँचा। वह लता से बात कर रहा था। लता से बात करते हुए सैंडी के चेहरे पर खुशी के ऐसे भाव थे, जो मैंने पहले कभी नहीं देखे थे। वह हमारे साथ भी खुश रहता था, पर यह खुशी अलग थी। शायद अपने प्यार के करीब रहकर दिल को खुशी मिलती है और दोस्तों के करीब रहने से दिमाग खुश होता है।

मैं भी दिल की उसी खुशी की तलाश में भटक रहा था। मैं उसके पास रखी कुर्सी पर बैठ गया। मैं उस समय हैरान रह गया, जब मैंने यह महसूस किया कि उससे सिर्फ एक हाथ की दूरी पर बैठा होने के बावजूद मुझे उसकी कोई भी बात सुनाई नहीं दे रही थी। मुझे उसके

हिलते हुए होंठ तो दिख रहे थे, पर मेरे कान कुछ सुन नहीं पा रहे थे।

मुझे बैठा देखकर सैंडी ने, लता से यह कहकर कि वह थोड़ी देर बाद फिर से फोन करेगा, फोन काट दिया। यह बात उसने थोड़े जोर से कही थी, इसलिए मैं सुन पाया था।

“कुछ बोलेगा भी कि ऐसे ही बैठा रहेगा?” मुझे चुपचाप बैठे हुए देखकर उसने मेरे कान के पास आकर जोर से कहा।

“उस समय तू कह रहा था कि तू माला की आवाज सुना सकता है?” मैंने धीरे से कहा।

“देख, मेरे पास एक प्लान तो है। तू बस अपने भाई से उसका नंबर माँग ले।”

“पर उसका नंबर मेरे भाई को कैसे पता होगा?”

“तू ही तो बता रहा था कि तेरी मम्मी रोज माला से बात करती हैं। बस, अपने भाई को बोल कि वह उनके फोन से उसका नंबर निकाल ले।”

सच में सैंडी के पास प्लान था। लगता है प्यार के मामले में उसका दिमाग चाचा चौधरी से भी तेज चलने लगा था।

अगले दिन मैंने अपने भाई को फोन किया और उसने भी बस तीन सौ रुपए लेकर माला का नंबर मुझे दे दिया।

अब बारी सैंडी की थी।

उसके प्लान के अनुसार लता को माला को फोन करना था। लता उससे यह कहकर बात करती कि वह मेरी चचेरी बहन है और अपनी भाभी से बात करना चाहती है।

“और मैं यह सब कैसे सुनूँगा?” मैंने अपनी शंका बताई।

“कॉन्फ्रेंस कॉल, मेरे दोस्त।” सैंडी ने हाथों-हाथ शंका का निवारण कर दिया।

बस सब डिसाइड हो गया था। शाम को सैंडी ने पहले लता को, फिर मुझे और अंत में माला को कॉन्फ्रेंस कॉल किया।

जैसे ही फोन की घंटी बजनी शुरू हुई, मेरे दिल की धड़कन उससे तेज बजने लगी।

कुछ रिंग्स के बाद एक आंटी की आवाज आई— “हैलो।”

शायद यह माला की मम्मी की आवाज थी।

हम सबने यह तो सोचा ही नहीं था कि अगर माला ने फोन नहीं उठाया, तब क्या करना है। मेरे और सैंडी के हाथों से घबराहट के मारे तोते, उल्लू, कबूतर और यहाँ तक कि गदहे और बकरियाँ भी उड़ गए।

“हैलो आंटी, मेरा नाम लता है। माला है क्या?” यह तो अच्छा हुआ था कि लता के सारे पंछी और जानवर मौजूद थे और उसने सिचुएशन सँभाल ली थी।

उसके बाद दस मिनट तक लता, माला से बात करती रही और मैं न जाने किन ख्यालों

में डूबा हुआ बस माला की आवाज ही सुनता रहा।

इसके बाद मैंने आसानी से अपने असाइनमेंट पूरे कर लिए।

“मेरी बात नहीं मानी ना तुम सबने, अब देखना क्या होता है।” ऐडी को जब से यह पता लगा था कि सैंडी ने क्या किया है, तब से वह यही रट लगाए हुआ था।

“देख तो इसे।” सैंडी ने ऐडी से कहा— “अब पहले से कितना बेहतर लग रहा है।”

“प्यार और ड्रग्स के नशे में अधिक अंतर नहीं है मेरे दोस्त।” ऐडी फिलॉसफी झाड़ते हुए बोला— “तूने इसकी हालत और बिगाड़ दी है।”

“कोई बात नहीं। जब कुछ होगा, तो उसका सॉल्यूशन भी निकाल लूँगा।” सैंडी ने सीना ठोंकते हुए कहा।

दो दिन तक तो मुझे बहुत अच्छा-अच्छा फील हुआ।

फिर उसके बाद वही हुआ, जिसकी आशंका हमारे ‘लव एक्सपर्ट’ ऐडी ने व्यक्त की थी।

पहले तो जब भी मन बेचैन होता था, तब माला की फोटो देख लेने भर से कुछ आराम मिल जाता था, पर अब फोटो का डोज काफी नहीं था। अब ऐसा लगता था कि उसकी आवाज सुन लूँ। पर लता का बार-बार फोन करना ठीक नहीं था। बात मेरे घर तक पहुँच सकती थी।

अब कुछ भी अच्छा नहीं लगता था। रातभर नींद भी नहीं आती थी। पढ़ाई में मन नहीं लग रहा था। ऐडी की बात सही साबित हो रही थी।

तभी दूसरी मुसीबत आ खड़ी हुई। आखिरी प्रैक्टिकल के लिए हमें ‘मशीन ड्रॉइंग’ की दस शीट बनाकर जमा करानी थीं। यह A0 के आकार की शीट होती थी और उस पर अलग-अलग मशीनी कल-पुर्जों की 3D ड्रॉइंग को 2D ड्रॉइंग में कन्वर्ट किया जाता था। ऐसी एक शीट को बनाने में लगभग पूरा दिन लगता था और हमें पाँच दिनों में दस शीट जमा करानी थीं। समय कम था और काम बहुत ज्यादा। इसलिए सब अपनी-अपनी शीट बनाने में लग चुके थे।

मैं भी कोशिश कर रहा था। मैं जब भी पेंसिल उठाता, मेरे कानों में माला की मीठी-सी आवाज गूँजने लगती थी। आँखों के सामने उसका मुस्कराता हुआ चेहरा घूमने लगता था। सामने पड़ी हुई शीट पर मशीनी कल-पुर्जों के बदले माला दिखाई देती थी। मैं प्यार की बीमारी के आखिरी स्टेज में पहुँच गया था।

चार दिनों में बड़ी मुश्किल से मैं बस एक शीट बना पाया।

“अब निकाल इसका सॉल्युशन।” ऐडी को जब यह पता लगा कि मैं सिर्फ एक ही शीट बना पाया हूँ, तो वह गुस्से में सैंडी से बोला— “अब रातभर में नौ शीट कैसे बनेंगी?”

सैंडी और ऐडी अपने सिर पर हाथ रखकर बैठे हुए थे। उन्हें यह यकीन हो गया था कि अपनी शीट जमा न करवाने के कारण मेरा फेल होना तय है।

“बस इतनी-सी बात है! अभी आधे घंटे में सारी शीट बना देता हूँ।” अमित को जब यह समस्या पता लगी, तो वह बड़े ही रिलैक्स मूड में बोला।

यह सुनकर सैंडी और ऐडी दोनों चकरा गए। वे यह सोच रहे थे कि जिस काम को करने में उन्हें चार दिन लगे थे, उसे यह आधे घंटे में कैसे कर देगा। मैं तो मजनू बना हुआ था, इसलिए मुझे कोई फर्क ही नहीं पड़ा।

ऐडी ने संदेह के साथ पूछा— “तू अपनी शीट तो मेरी शीट देखकर बनाता है, इसकी शीट कैसे बनाएगा?”

“चिरकुट्स इन्वेंशन— ‘द बकेट ऑफ लाइट’ की मदद से।” अमित ने मेरे कमरे से जाते हुए कहा।

थोड़ी देर बाद वह हाथ में तार का एक बंडल, जिसके एक छोर पर बल्ब और दूसरे छोर पर प्लग लगा था और खिड़की के दो बड़े शीशे लेकर आया। उसने कोने में पड़ी हुई मेरी खाली बाल्टी उठाई और उसके ऊपर साइड में एक छेद कर दिया। उस छेद से उसने प्लग बाहर निकाला और बल्ब को बाल्टी के अंदर रख दिया। फिर उसने बाल्टी को सीधा करके उसके ऊपर पहले तो एक शीशा रखा, उसके ऊपर अपनी बनाई हुई शीट रखी, उसके ऊपर दूसरा शीशा रखा और आखिर में मेरी खाली शीट रख दी। अब जैसे ही उसने प्लग को सॉकेट में लगाकर बल्ब ऑन किया, हमें अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। नीचे जल रहे बल्ब के कारण मेरी खाली शीट पर उसकी बनाई हुई ड्रॉइंग साफ-साफ दिख रही थी। उसने तुरंत ही स्केल और पेंसिल उठाई और फटाफट मेरी शीट पर दिख रही लकीरों के ऊपर पेंसिल चलाने लगा। दो मिनट में एक शीट तैयार।

इससे पहले कि हम उसके इस आविष्कार ‘द बकेट ऑफ लाइट’ को समझ पाते, उसने सभी नौ शीटें बनाकर मेरे सामने रख दीं।

“लो हो गई प्रॉब्लम साल्व।” वह पेंसिल रखते हुए बोला।

ऐडी ने उसे गले से लगाते हुए कहा— “बस एक तू ही सच्चा मैकेनिकल इंजीनियर बन पाया है मेरे दोस्त। बाकी हम सब तो बस असाइनमेंट, प्रैक्टिकल्स, असाइनमेंट, प्रैक्टिकल्स का खेल खेलते रह गए।

अगले दिन हम सब ने अपनी-अपनी शीट्स जमा कर दीं और कुछ दिनों बाद तीसरा साल खत्म होने की खुशियाँ मनाते हुए अपने घरों को रवाना हो गए।

# Low बैलेंस

कॉलेज से घर आए हुए आधा महीना बीत चुका था। इस बार से पहले घर जाने की इतनी बेचैनी कभी भी महसूस नहीं की थी। शायद यह सब इसलिए था, क्योंकि मुझे एक नया दोस्त मिलने वाला था। कॉलेज से आते हुए ऐडी ने कहा भी था— "अब हम तो पराए हुए, तू माला का हो गया। भाई कभी समय मिले, तो हमें भी याद कर लेना।"

पर इतने दिनों बाद भी मुझे माला के नाम के अलावा सिर्फ यही पता चला था कि वह मुझसे पाँच साल छोटी है और अभी बारहवीं कक्षा में है। यह जानकारी भी मुझे किसी ने दी नहीं थी। वह तो जब मेरी मम्मी बुआ से फोन पर बात कर रही थीं, तब मैंने सुन लिया था। पापा तो यही कहते थे कि शादी से पहले लड़का-लड़की नहीं मिल सकते। मैं पापा से कुछ कह नहीं सकता था और मम्मी से कह तो सकता था, पर कहने में शर्म आ रही थी। मम्मी तो लगभग रोज ही माला से, उसकी मम्मी से और कभी-कभी उसकी बहन से भी बात करती थीं। मैं छुप-छुप कर सुनने की कोशिश करता था और मन ही मन सोचता था कि माला ऐसी होगी, माला वैसी होगी। पर यह नहीं पता था कि माला कैसी है।

जब इंसान प्यार में होता है, तब जुदाई बर्दाश्त नहीं होती है। ऐसा लगता है अभी उड़कर अपने प्यार के पास चले जाएँ। अलग रहने पर कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। किसी भी काम में मन नहीं लगता है। हर समय बस उसका ख्याल लगा रहता है। कुल मिलाकर कहूँ, तो प्यार में अगर आपका प्रेमी साथ न हो तो आप बेकार हो जाते हैं।

यहाँ मेरी हालत तो और भी खराब थी। मैं जिससे प्यार करता था उससे मिलना तो दूर, बात तक नहीं कर पा रहा था। मम्मी तो लगभग रोज ही माला से बात करती थीं, पर मुझे कोई मौका नहीं मिल रहा था। फिर एक दिन शायद मेरी हालत पर तरस खाकर भगवान ने मुझे मौका दिया।

मम्मी घर पर नहीं थीं, पर उनका फोन था। आज न जाने कैसे वे अपना फोन घर पर ही भूल गई थीं। मैं बैठा टीवी देख रहा था, तभी मम्मी का फोन बजने लगा। मैंने देखा तो उस

पर 'माला' लिखा हुआ था। मेरी धड़कनें तेज हो गईं। मन में कई ख्याल आने लगे। समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूँ। अभी तक मैं माला से बात करने का मौका खोज रहा था और आज जब मौका मिला, तब हिम्मत ही नहीं हो रही थी। आखिरकार मैंने सभी तैंतीस कोटि देवी-देवताओं को याद करके रिसीव का बटन दबा ही दिया। उधर से एक खूबसूरत आवाज आई— "मम्मी प्रणाम।" मैं तो बस वह आवाज ही सुनता रहा। खो सा गया था उसमें। भूल गया था कि मुझे कुछ बोलना चाहिए। जब दुबारा उधर से वही खूबसूरत आवाज आई, "हैलो", तब मैं इस दुनिया में वापस आया।

"मैं बबलू बोल रहा हूँ। मम्मी घर पर नहीं हैं।" मैंने जवाब दिया।

अब चुप होने की बारी माला की थी।

मैंने फिर कहा— "हैलो..."

तब उधर से आवाज आई— "ठीक है। thanks..." और फोन कट गया।

अब इस आवाज में एक शर्म थी, एक घबराहट थी, एक डर था।

मैंने दुबारा फोन किया। उधर किसी ने फोन तो उठा लिया, पर बोला कुछ नहीं। मैं समझ गया कि अब वो वक्त आ गया था, जिसका मुझे अरसे से इंतजार था— माला से बात करने का वक्त। पिछले कुछ दिन मेरे लिए कई सालों की तरह जो बीते थे।

मैंने कहा— "मैं बबलू बोल रहा हूँ।"

"पहचान लिया।" उधर से जवाब आया। अब इस आवाज में डर नहीं था। हाँ शर्म अब भी थी।

"मैं काफी समय से तुमसे बात करने की सोच रहा था।"

"मैं भी..."

"तो बात क्यों नहीं की तुमने? तुम तो सिर्फ मम्मी से ही बात करती थी।"

"मैं नहीं कर सकती थी। पापा ने मना किया था।"

"सुनो, मैं तुमसे मिलना चाहता हूँ।"

"मैं..."

उसकी बात पूरी होने से पहले ही फोन कट गया।

मैंने दुबारा फोन मिलाया, पर उधर से काट दिया गया। मैं बेचैन हो उठा। मन में अजीब-अजीब ख्याल आने लगे। डर लग रहा था कि कहीं उसके घर में किसी को पता तो नहीं चल गया। आखिर उसके पापा ने मना किया था। अब क्या होगा? क्या उसे डाँट पड़ रही होगी? उसके घर के लोग मेरे बारे में क्या सोच रहे होंगे? अभी तक जो खुशी मुझे माला की आवाज सुनकर मिली थी, वह तो उड़ चुकी थी और अब उसकी जगह डर ने ले ली थी।

मैं सोचने लगा कि इससे अच्छा तो यही था कि मैंने बात ही नहीं की होती।

तभी फोन में मैसेज की घंटी बजी। माला का मैसेज था— 'मम्मी आ गई थीं, इसलिए काट दिया। बाद में फोन करूँगी।' तब मेरी जान में जान आई।

मैंने तुरंत उसका रिप्लाई किया— 'ठीक है। पर अगली बार मेरे नंबर पर फोन करना।' और मैंने अपना नंबर भेज दिया।

उसके बाद मैं बड़ी बेसब्री से माला के फोन का इंतजार करने लगा। पर उसका फोन नही आया। एक-एक पल, एक-एक साल जैसा लगता था। मैं बार-बार अपना फोन देखता था कि शायद कोई मैसेज आया हो। चेक करता था कि कहीं फोन साइलेंट मोड पर तो नहीं चला गया है। धीरे-धीरे शाम हो गई और फिर रात भी हो गई। पर माला का फोन नहीं आया। मेरे पास इंतजार करने के अलावा कोई चारा नहीं था।

मैं खाना खाकर अपने कमरे में चला गया। नींद तो आ नहीं रही थी। मैं इस डर से फोन नहीं कर रहा था कि पता नहीं कौन उठाएगा। कहीं किसी और ने फोन उठा लिया तब क्या होगा?

मैं इसी उधेड़बुन में था कि तभी अचानक फोन की घंटी बजी और बंद हो गई। एक मिस कॉल थी। मैंने देखा तो पाया कि यह वही कॉल थी जिसका मैं इंतजार कर रहा था। मैंने तुरंत वापस उसी नंबर पर फोन किया।

"सो तो नहीं रहे थे?" माला ने पूछा।

"नींद नहीं आ रही थी।" मैंने कहा।

"मुझे भी नींद नहीं आ रही है।"

"जब मुझे नींद नहीं आ रही, तो तुम्हें कैसे आएगी।"

फिर इसके बाद तो बातों का सिलसिला शुरू हो गया। एक के बाद एक घंटे बीतने लगे। पर हमारे लिए तो जैसे समय रुक-सा गया था। समय के बारे में तब पता चला, जब बात करते-करते अचानक फोन कट गया। मेरा बैलेंस खत्म हो गया था। घड़ी पर नजर डाली, तो पाया कि सुबह के चार बज रहे थे। हम लगभग छह घंटे से बात कर रहे थे और मुझे ऐसा लग रहा था कि अभी ही तो बात शुरू की है।

मैंने उसी समय अमित को फोन किया, उसे जगाया और इंटरनेट से मेरा फोन रिचार्ज करने को कहा, क्योंकि मेरा इंटरनेट काम नहीं कर रहा था।

आधे घंटे बाद मैंने माला को मैसेज भेजा कि मेरा बैलेंस खत्म हो गया था, इसलिए फोन कट गया। मुझे डर था कि कहीँ वो यह न समझ ले कि मैंने फोन काट दिया है। उसके मैसेज का इंतजार करते-करते मुझे कब नींद आ गई, पता ही नहीं चला।

उस रात के बाद से तो हमारी बातों का सिलसिला शुरू हो गया। तब मेरी समझ में

आया कि सैंडी, लता से इतनी बातें क्यों करता रहता है। जब दो लोग प्यार में होते हैं, तब बातें करना तो बस एक बहाना होता है, असल में वो एक-दूसरे के साथ को महसूस कर रहे होते हैं। रात में मैं माला से क्या बातें करता था, सबेरे मुझे यह कभी भी याद नहीं रहता। बस एक एहसास होता था। वह एहसास सिर्फ एक प्रेमी को ही होता है। अब मेरी रातें माला से बातें करने और उसके सपने देखने में कटती थीं। और मेरे दिन रात की उन यादों को याद करने में बीतते थे। इन्हीं बातों, यादों और बातों की यादों में मेरी छुट्टियाँ कब निकल गईं, पता ही नहीं चला।

पर इस बार की छुट्टियाँ बहुत अच्छी बीती थीं।

# कॉलेज का प्यार

“तू माला से बात करने लगा है ना।” इस बार भी कॉलेज में घुसते ही सबसे पहले ऐडी ने मुझसे यही पूछा।

“नहीं।” मैंने भी शरमाते हुए झूठ बोला।

“मैं पूछ नहीं रहा हूँ, बता रहा हूँ।” ऐडी ने पूरे कॉन्फिडेंस से मेरे झूठ का भांडा फोड़ दिया।

अमित उसकी बात सुनकर हैरान रह गया और पूछा— “तुझे कैसे मालूम है?”

“इसी को एक्सपीरियंस कहते हैं।” कहकर ऐडी ने अमित के कंधे पर हाथ रखा और उसे समझाने के स्टाइल में बोला— “बेटा, शाहरुख को भी प्यार करना हमने ही सिखाया है।”

यह सुनकर अमित ने दोनों हाथ जोड़कर उसके सामने झुकते हुए कहा— “जय चिरकुटदेव। चिरकुट बाबा ऐडी अमर रहें... मेरा मतलब... जिंदाबाद। चिरकुट बाबा जिंदाबाद।”

“मसखरा कहीं का” कहकर ऐडी ने उसके सिर पर धीरे से मारा और हम सब अपने-अपने कमरों की धूल झाड़ने में लग गए।

अमित ने जाते हुए मुझे ऐसे देखा जैसे कह रहा हो, अब समझा कि मैंने उससे तड़के चार बजे अपना फोन क्यों रिचार्ज करवाया था। मैंने भी इशारों में उसे यह बात किसी को न बताने की रिक्वेस्ट कर दी। पर शायद वह यह बात ऐडी को पहले ही बता चुका था।

सबकुछ ठीक हो गया था।

मैं भी अब पढ़ाई में मन लगा पा रहा था। रोज रात को मैं और माला एक-दूसरे से बात करते थे। उसे स्कूल और मुझे कॉलेज जाना होता था, इसलिए हम कुछ देर ही बात कर पाते थे। पर वह ‘कुछ देर’ भी मेरे मन को इतना सुख देता था, जिससे मैं कॉलेज में कन्संट्रेट कर

पाता था। अब मेरे फेल होने का डर नहीं रहा। इन्फोसिस में जाना पक्का था।

आखिरी सेमेस्टर में एक और कंपनी आई। इस बार सैंडी, अमित और लता उसमें जॉब पाने की कोशिश कर रहे थे। ऐडी अपने गूगल के सपने को ही पूरा करना चाहता था, इसलिए उसे किसी और कंपनी में कोई इंटरेस्ट नहीं था। सभी चीजें पिछली बार जैसी ही थीं। पहले हम सबको उस कंपनी के एचआर ने अपना प्रेजेंटेशन दिया और फिर रिटन टेस्ट होना था।

टेस्ट का रिजल्ट आने पर पता लगा कि लता और अमित तो क्लियर हो गए हैं, पर इस बार सैंडी अटक गया था।

अगले दिन जब इंटरव्यू था, तब मैं और सैंडी अमित को 'मोरल सपोर्ट' देने के लिए उसके साथ गए। तभी मैंने देखा कि लता भी वहाँ पर पहुँची हुई है।

"तुम दोनों तो एक ही कंपनी में जाने वाले थे ना, तब यह लता इंटरव्यू देने क्यों आई है?" मैंने सैंडी से पूछा।

मेरा सवाल सुनकर सैंडी बोला— "कल रात को उसका फोन आया था। वह कह रही थी कि उसे बस अपने घर वालों का मन रखने के लिए इस इंटरव्यू में बैठना है और अगर उसे यह जॉब मिल जाती है, तो वह आसानी से अपने घर पर हमारे बारे में बता सकती है..."

"...और तू उसकी बात मान गया और उसे इंटरव्यू में बैठने की परमिशन दे दी।" मैंने उसकी बात को पूरा करते हुए कहा।

"हाँ, तो इसमें गलत क्या है?" सैंडी ने मुझसे पूछा।

"गलत कुछ नहीं है। पर जब पिछली बार तुझे इंटरव्यू देना था, तब तो उसने तुझे परमिशन नहीं दी थी।" मैंने अपनी बात कह दी।

यह सुनकर सैंडी चुप रह गया।

इंटरव्यू का रिजल्ट शाम तक बता दिया गया। अमित दुखी था, क्योंकि इस बार भी वह टैलेंट में किसी कमी के कारण नहीं, बल्कि अंग्रेजी से हार गया था। लता खुश थी, क्योंकि उसका सिलेक्शन हो गया। लता की खुशी देखकर सैंडी भी खुश था।

थोड़ी देर बाद बीयर के एक गिलास ने अमित का दुख खत्म कर दिया, जिसके बाद पंद्रह मिनट तक वह अँग्रेजी को पाँच अक्षरों की गालियाँ देता रहा।

"यार कल ये CAM का प्रैक्टिकल कैसे होगा?" हमारे प्रैक्टिकल शुरू होते ही अमित का पहला सवाल यही था।

CAM- 'कंप्यूटर इंजीनियरिंग मैन्युफैक्चरिंग' नामक सब्जेक्ट का छोटा वर्जन है। इस सब्जेक्ट में प्रोग्रामिंग करनी होती थी और प्रोग्रामिंग के जय और वीरू तो ऐडी और सैंडी ही थे। मेरी और अमित की हालत ठाकुर के जैसी थी, जिसे जय और वीरू के सहारे की जरूरत

थी।

यह एक समस्या का विषय था।

मैं, अमित और सैंडी मेरे कमरे में बैठकर इसका हल खोजने की कोशिश कर रहे थे। तभी ऐडी बाथरूम से 'यूरेका, यूरेका' चिल्लाता हुआ कमरे में आया।

"अब हमारे चिरकुटिए आर्कमिडीज को नया क्या मिल गया?" सैंडी ने पूछा।

"इन दोनों की प्रॉब्लम का सॉल्युशन।" ऐडी ने खुशी से चीखते हुए कहा।

यह सुनकर हमारे भी मुरझाए हुए चेहरों के फूल खिल उठे। अमित ने तो खुशी के मारे उसे गोद में ही उठा लिया।

"जल्दी से बता इस CAM के झंझट से कैसे मुक्ति मिलेगी।" अमित ने उसे गोद में लिए हुए ही पूछा।

"पहले नीचे तो उतार। सब बताता हूँ।" ऐडी ने रिक्वेस्ट की।

"ठीक है, अब बता।" अमित ने उसे जमीन पर लैंड करवाते हुए कहा।

"तुम दोनों रिलैक्स हो जाओ और कल की टेंशन मेरे ऊपर छोड़ दो।" ऐडी ने अपने कपड़े ठीक किए और बाहर जाते हुए बोला।

"अबे ये कहाँ चला गया।" अमित ने चिढ़कर कहा।

तब सैंडी ने अमित को समझाया— "देख, अगर उसने बोला है कि वह कुछ करेगा, तब वह जरूर कोई प्लान सोच रहा होगा। तू चिंता मत कर... चलो तुम दोनों को मैं बाहर आइसक्रीम खिलाता हूँ।"

उसकी बात सुनकर मैं भी थोड़ा रिलैक्स हो गया था। हम तीनों आइसक्रीम खाने चल दिए।

आइसक्रीम खत्म करने के बाद सैंडी लता से मिलने चला गया और मैं और अमित हॉस्टल के अपने-अपने कमरों में चादर तानकर सो गए।

हम उठे, तब तक डिनर का टाइम हो चुका था। सैंडी और ऐडी अपने कमरों में नहीं थे। यह सोचकर कि वो दोनों डिनर के बाद बाहर घूम रहे होंगे, हम दोनों भी डिनर के लिए चले गए।

अब भी मुझे इतनी नींद आ रही थी कि मैं डिनर के बाद सीधे अपने कमरे में गया और फिर से सपने देखने लगा।

"दरवाजा खोल बे..."

दरवाजे पर धक्का और शोर सुनकर मेरी नींद खुली। बाहर ऐडी दरवाजा पीट रहा था। मैंने टाइम देखा तो पता लगा कि सुबह के सात बज चुके हैं और आठ बजे से CAM का

प्रैक्टिकल शुरू होना था। मैंने तुरंत ही दरवाजा खोला।

बाहर ऐडी और अमित खड़े थे। ऐडी ने हाथ में कुछ छोटी-छोटी पर्चियाँ पकड़ रखी थीं। उन पर्चियाँ को वह मेरे हाथ में देते हुआ बोला— "ये पकड़ तेरे CAM के दसों प्रैक्टिकल के प्रोग्राम। तुम्हें जो भी प्रोग्राम मिले, वह इसमें से देखकर टाइप कर देना। अब जल्दी से तैयार हो जा।"

उसके जाने के बाद मैंने देखा कि उन पर्चियों पर बहुत छोटे फॉन्ट में सारे प्रोग्राम्स के प्रिंट थे। शायद रातभर वह यही कर रहा था। मैंने अमित को वह लिस्ट दे दी और बाथरूम की तरफ चल पड़ा।

जैसे ही हमें प्रैक्टिकल के समय अपने प्रोग्राम पता लगे, अमित नें एक पर्ची रखकर बाकी मुझे दे दीं। मैं अभी वह पर्ची खोज ही रहा था जिस पर मेरा प्रोग्राम लिखा हुआ था, तब तक मेरे आस-पास भीड़ लग गई। न जाने सबको कैसे यह खबर हो गई थी कि मेरे पास प्रोग्राम की पर्चियाँ हैं। मैंने भी अपनी पर्ची अलग निकालने के बाद बची हुई पर्चियाँ बाँटनी शुरू कर दीं।

"मुझे भी एक पर्ची देना।"

"अभी देता हूँ।" कहकर जैसे ही मैंने आवाज के उस सोर्स को देखा, मेरा दिल बैठ गया। यह हमारे CAM के प्रोफेसर मिस्टर रंगनाथन, जिन्हें हम नफरत से 'रंगा' कहते थे, की आवाज थी। कॉलेज में दोस्तों के नाम प्यार से रखे जाते हैं और प्रोफेसर्स के नफरत से। और मिस्टर रंगनाथन की नफरत का लेवल तो दोगुना था। जितनी नफरत स्टूडेंट्स उनसे करते थे, उससे ज्यादा नफरत वो हमसे करते थे। हम जानते थे कि अगर उन्हें मौका मिला, तो वे हमें पास नहीं होने देंगे। और आज उन्हें वह मौका मिल गया था।

रंगा ने मुझे रंगे हाथों पकड़ लिया था। उन्हें देख बची हुई सारी पर्चियाँ मेरे हाथों से खुद-ब-खुद जमीन पर गिर गईं या मैंने उन्हें फेंक दिया, यह मेरी भी समझ में नहीं आया।

मिस्टर रंगनाथन उन पर्चियों को लेकर हमारे सामने खड़े थे और क्लास के सारे स्टूडेंट्स अपनी-अपनी जगह पर साँसें थामे हुए बैठे थे।

उन्होंने मुझे खड़ा किया और पूछा— "यह नकल का सामान कौन लेकर आया है?"

"मुझे नहीं पता सर।" मैंने बड़ी ही मासूमियत के साथ झूठ बोला।

"चुपचाप मुझे सच बता दो। नहीं तो अंजाम बहुत बुरा होगा। तुममें से कोई भी पास नहीं होगा।" उनकी धमकी सारी क्लास में गूँजी।

हम सब पत्थर के बुतों की तरह चुप बैठे रहे।

यह कॉलेज का एक और नॉन-रिटन रूल होता है कि कोई भी किसी का नाम नहीं लेगा। और आज सारी क्लास उस रूल पर अमल कर रही थी।

“ठीक है। तुम लोग ऐसे नहीं मानोगे।” मिस्टर रंगनाथन ने दूसरा पैंतरा चला। उन्होंने सारे प्रोग्राम बदल दिए। ये प्रोग्राम उन सभी प्रोग्रामों के बाप थे, जो हमने प्रैक्टिकल में किए थे।

“अब तुम लोग लैब में बैठकर ये प्रोग्राम कंप्यूटर पर लिखोगे। अपना काम खत्म करने के बाद तुम अपनी आंसर शीट पर उस कंप्यूटर का नंबर लिखकर जमा करोगे, जिसमें तुमने प्रोग्राम लिखा है। बाद में मैं सारे प्रोग्राम रन करके देखूँगा। जिसका प्रोग्राम काम करेगा, बस उसे ही नंबर मिलेंगे।” प्रोफेसर साहब ने अपना एटम बम चला दिया था, जिसकी चपेट में मैं और अमित ही आने वाले थे। हम सब चुपचाप कंप्यूटर लैब की तरफ चल दिए।

“तूने कुछ लिखा क्या?” अमित ने कंप्यूटर लैब में फुसफुसाकर मुझसे पूछा।

मैने ना में सर हिलाया और उसके कंप्यूटर की स्क्रीन की तरफ देखा। वो पिनबॉल खेल रहा था। अमित भी मेरी तरफ देखकर हँसने लगा।

“अब क्या होगा यार, ये ‘रंगा’ तो हमें फेल कर देगा!” मैंने अमित से कहा।

“वो कुछ नहीं कर पाएगा।” अमित ने बड़े इत्मीनान से गेम खेलते हुए कहा। उसके रिलैक्स मूड को देखकर मेरी टेंशन और बढ़ गई। शायद यह फेल होने के डर से पगला गया है, मैंने सोचा। अमित अभी तक गेम खेल रहा था।

“टाइम अप। अब सब लोग अपनी शीट जमा कर दें और उस पर अपने कंप्यूटर का नंबर लिख दें।” रंगा के असिस्टेंट ने घोषणा की।

मैंने कुछ किया तो था नहीं, इसलिए मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूँ। मैं वैसे ही बैठा रहा।

तभी अमित उठकर मेरे पास आया और बोला— “दिखा जरा।” यह कहकर उसने माउस मेरे हाथ से लेकर कुछ क्लिक किए और कंप्यूटर में से कई फाइलें सिलेक्ट कीं।

“अरे यह क्या कर रहा है।” जब तक मैं उसे रोक पाता, वह शिफ्ट+डिलीट का बटन प्रेस कर चुका था।

“ये क्या कर दिया बे!!” मैंने पूछा।

वह हँसते हुए बोला— “जब कंप्यूटर ऑन ही नहीं होगा, तो वह हमें फेल कैसे करेगा।” इतना कहकर उसने कंप्यूटर ऑफ कर दिया।

“मैं अभी भी नहीं समझा।” मैंने अमित की तरफ देखकर कहा।

“समझाता हूँ, पर पहले शीट तो जमा कर दें।” उसने मेरी शीट पर कंप्यूटर का नंबर लिखा, जो ‘शटिंग डाउन’ की स्क्रीन दिखा रहा था। और फिर बाहर निकलते हुए बताने लगा — “जो फाइलें मैंने डिलीट की हैं, उनके बिना अब यह कंप्यूटर ऑन ही नहीं हो सकता है और जब यह ऑन ही नहीं होगा तो ‘रंगा’ प्रोग्राम रन कैसे करेगा! तब उसे मजबूरी में हमें

पास करना होगा।" उसने पूरी बात समझा दी। "बड़ा आया था चिरकुट्स से पंगा लेने।" अमित ने अपनी कॉलर उठाते हुए कहा।

यह सुनकर मैं भी खुश हो गया और हम दोनों अपनी-अपनी शीट जमा कराने के बाद वापस हॉस्टल की ओर चल दिए। एक बार फिर अमित ने मुझे फेल होने से बचा लिया था।

मैंने ऐसा सुना है कि जब इंसान मरने वाला होता है, तब उसकी पूरी जिंदगी उसकी आँखों के सामने घूमने लगती है। इस बात में कितनी सच्चाई है यह तो मुझे नहीं मालूम, पर मैं यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि जब कॉलेज के आखिरी दिन चल रहे होते हैं, तब वहाँ बिताए हुए सभी दिन आँखों के सामने दिखाई देते हैं।

अब हमारे कॉलेज के आखिरी चार दिन बचे हुए थे। हम चारों 'द ओबेरॉय ढाबा' मे बैठे चाय के मजे ले रहे थे और पुराने दिनों को याद कर रहे थे। सैंडी कुछ परेशान लग रहा था। वह बार-बार मोबाइल देख रहा था।

उसे ऐसे परेशान देखकर मैंने पूछा— "क्या हुआ, कुछ बताएगा भी।"

"कुछ नहीं यार। लता फोन नहीं उठा रही है।" सैंडी ने नॉर्मल होने की कोशिश करते हुए कहा।

"फोन कैसे उठाएगी? वो देख।" तभी अमित ने रोड की तरफ तरफ इशारा करते हुए कहा।

सामने सड़क पर, लता कहीं बाहर से आती दिखी। पर वो अकेली नहीं थी, उसके साथ कोई लड़का भी था। यह देखकर सैंडी का गुस्सा आखिरी पड़ाव पर पहुँच गया। वह तुरंत ही भागकर लता के पास पहुँचा। वह मारपीट न कर बैठे, यह सोचकर हम भी उसके पीछे चल दिए।

सैंडी को आता देखकर लता ने उस लड़के को जाने को कह दिया।

"तुम आजकल मेरा फोन क्यों नहीं उठाती हो?" सैंडी ने लता से सीधे सवाल किया।

"मुझे तुमसे बात नहीं करनी है।" लता ने भी जवाब दे दिया।

"पर क्यों?" सैंडी का एक और सवाल।

"क्योंकि हमारा रिश्ता आगे नहीं बढ़ सकता है।" अबकी बार लता ने आखिरी जवाब दे दिया।

यह सुनकर हम सब भी चकरा गए। सैंडी तो लगभग सुन्न ही हो गया।

बड़ी मुश्किल से उसके मुँह से निकला— "ऐसा क्या हो गया?"

"तुम्हारा प्लेसमेंट कहीं नहीं हुआ है। इसलिए मेरे पैरेंट्स हमारे रिश्ते के लिए तैयार नहीं होंगे।" लता ने बचकाना कारण बताया।

“पर ये तो तुम्हारे कहने पर ही इंटरव्यू के लिए नहीं गया था।” अब मैंने लता से पूछा।

“हाँ, क्योंकि मैं नहीं चाहती थी कि यह अलग कंपनी में नौकरी करे। मुझे यह लगा कि हम दोनों का प्लेसमेंट एक ही कंपनी में हो जाएगा। पर यह तो रिटेन भी क्लियर नहीं कर पाया।”

“इसलिए तुमने अरुण से दोस्ती कर ली, क्योंकि उसका और तुम्हारा प्लेसमेंट सेम कंपनी में हुआ है?” अमित, लता की बात सुनकर गुस्से में बोला।

“इससे तुम्हें कोई मतलब नहीं है। अब अपने दोस्त से कहो कि मुझे कॉल करके डिस्टर्ब न किया करे, वरना अच्छा नहीं होगा...” लता ने धमकी देते हुए कहा और जाने लगी।

“नहीं तो क्या कर लेगी तू?” अब सैंडी से गुस्सा रोका नहीं गया और उसने लता का हाथ पकड़कर उसे रोकते हुए जोर से पूछा।

सैंडी की आँखो से अब लगातार आँसू बह रहे थे।

हमने तुरंत ही उसे रोक लिया और लता को जाने दिया। सैंडी सड़क पर ही बैठ गया और उसे जाते हुए देखता रहा। वह लगातार बड़बड़ा रहा था— “मैं इसे प्यार करता था। इसके कहने पर ही मैंने इंटरव्यू भी नहीं दिया और आज यह मुझे छोड़कर जा रही है।”

वह अब भी रो रहा था।

हमने उसे चुप कराने की कोशिश की, तो ऐडी ने यह कहकर मना कर दिया कि इसे रो लेने दो। इससे इसका दुख कम हो जाएगा।

सैंडी बड़ी देर तक वहाँ बैठकर रोता रहा। वह लगातार एक ही बात कह रहा था— “मैं इसे प्यार करता था। इसके कहने पर ही मैंने इंटरव्यू भी नहीं दिया और आज यह मुझे छोड़कर जा रही है।” जो प्यार कॉलेज में शुरू हुआ था, वह कॉलेज खत्म होने के साथ ही समाप्त हो गया।

चार दिन बाद हम चारों अपना-अपना सामान लेकर स्टेशन पर खड़े थे। मैं अपने घर गोरखपुर जा रहा था, जहाँ पर मुझे अपने जॉइनिंग लेटर का इंतजार करना था। बाकी तीनों दिल्ली जा रहे थे, क्योंकि बेरोजगार इंजीनियर्स को सहारा IIT दिल्ली के बाहर ही मिलता है।

# मॉल

जब से मैं माला से बात करने लगा था, ऐसा लगता था कि मेरी दुनिया ही बदल गई है। हम रोज रात को घंटों बातें किया करते थे। मैं तो सुबह होने पर दुखी हो जाता था। बस, मन में यह लगा रहता था कि कब रात हो और मैं माला से बात करूँ। अब देर रात तक टीवी देखने का सिलसिला खत्म हो गया था। खाना खाने के बाद मैं अपने कमरे में चला जाता और दरवाजा बंद कर लेता था। मम्मी तो यह सोच रही थीं कि ऐसा क्या हो गया कि मैंने टीवी देखना ही बंद कर दिया है। पहले तो मम्मी को जबरन टीवी बंद करना पड़ता था। यह नहीं है कि सिर्फ मेरे टीवी देखने में ही परिवर्तन आया था, और भी बहुत कुछ बदल गया था। अब मैं अपना ख्याल रखने लगा था। अपने कपड़ों पर ध्यान देने लगा था। बड़ी देर तक शीशे के सामने खड़ा होकर अपने आप को देखा करता था। शायद ये सब उस बीमारी के लक्षण हैं, जो मुझे हो गई थी— प्यार।

माला से बात करना तो हमेशा ही अच्छा लगता था, पर जब कभी वह यह पूछती थी कि मैं कैसा हूँ या फिर मैंने खाना खाया कि नहीं, तब और भी अच्छा लगता था। मैं तो उस इंसान को रोज धन्यवाद देता था, जिसने मोबाइल बनाया था। उसी की वजह से मैं माला से दूर होते हुए भी पास था। या फिर पास होते हुए भी दूर था। पता नहीं। बहुत कन्फ्यूजन था।

हम बातें तो रोज करते थे, पर एक-दूसरे से मिलना अभी हमारे लिए सपना ही था। हमारे परिवार में शादी से पहले लड़का-लड़की मिल ही नहीं सकते हैं। यहाँ तक कि लड़की को देखने भी कोई नहीं जाएगा। मेरे पापा का कहना है कि अगर लड़की की फोटो पसंद है, तो देखने की क्या जरूरत है और अगर एक बार लड़की को किसी ने देख लिया, तो फिर शादी वहीं पर होगी। हम मना नहीं कर सकते हैं। पापा के इन विचारों के कारण ही मेरी मम्मी भी माला को देखने पर जोर नहीं दे रही थीं। हालाँकि उनका मन तो था।

एक दिन मेरी बुआ हमारे घर पर आईं। मम्मी ने उन्हें माला की तस्वीर दिखाई। मम्मी और बुआ बैठकर शादी के बारे में बातें कर रही थीं। तभी मैं वहाँ पर पहुँचा, तो बुआ ने

मजाक करते हुए कहा— “बबलू को लड़की दिखाई कि नहीं।”

“कहाँ बुआ, फोटो तक नहीं दिखाई।” मैंने भी तुरंत जवाब दिया।

“चल भाग यहाँ से।” मम्मी ने मुझे कहा और मैं चुपके-से वहाँ से खिसक लिया।

जाते-जाते मैंने सुना, बुआ मम्मी को समझा रही थीं कि आजकल लड़की देखने में कोई बुराई नहीं है। एक बार लड़की देख लो और बबलू को भी दिखा दो। नहीं तो ये आजकल के बच्चे, पता नहीं बाद में क्या कहेंगे।

यह सुनकर मेरा मन लॉन्ग जंप करने लगा। पहली बार मुझे लगा कि रिश्तेदार कितने अहम होते हैं। अभी तक तो मैं बस यही समझता था कि रिश्तेदार सिर्फ शादी में खाना खाने और खातिरदारी में कमियाँ निकालने का ही काम करते हैं।

मैं अब प्रार्थना कर रहा था कि मम्मी बुआ की बात मान लें और पापा को भी मना लें, जिससे मैं एक बार अपने प्यार को देख सकूँ। मुझे नहीं लगता था कि मेरी प्रार्थना इतनी जल्दी कबूल हो जाएगी। पर कहते हैं न कि जब समय साथ हो, तो सबकुछ सही होता है। जब मम्मी ने मुझे बताया कि कल हम गोलघर मॉल जा रहे हैं, तो मैं समझ गया कि अब वह समय आ गया है, जिसका इंतजार मेरे हिसाब से मैं सदियों से कर रहा था। हम मध्यमवर्गीय परिवारों में लड़की देखना या दिखाना, शादी कराने से भी कठिन होता है। लड़की देखने का प्रोग्राम RAW के मिशन से भी अधिक सीक्रेट होता है। इस बात का खास ख्याल रखना पड़ता है कि मोहल्ले में किसी को भी इसकी भनक न लगे। इसलिए लड़की देखने की कुछ खास जगहें होती हैं। पहले यह काम मंदिरों में होता था और अब मॉल कल्चर के आने की वजह से मंदिर की जगह मॉल ने ले ली है। जगह-जगह कुकुरमुत्तों की तरह उग आए इन मॉल्स ने हमारी लाइफस्टाइल को ही नहीं बदला है, बल्कि हमारे रीति-रिवाजों को भी प्रभावित करना शुरू कर दिया है। यही कारण है कि जब मम्मी ने कहा कि हम मॉल जा रहे हैं, तब मैं समझ गया कि मैं अपने प्यार से मिलने जाने वाला हूँ।

उस दिन मैं जरा जल्दी सो गया। सोचा, जब माला मिस कॉल करेगी तब उठ जाऊँगा। मैंने इस बात ध्यान ही नहीं दिया था कि मेरा मोबाइल साइलेंट मोड में था। सुबह जब आँख खुली, तब देखा कि मोबाइल में माला की 29 मिस काल थीं।

खैर, अब क्या हो सकता था। इस समय तो मैं फोन कर नहीं सकता था। सुबह उठकर मैं बड़ी मुश्किल से अपनी खुशी छिपा पा रहा था और ऐसे बर्ताव कर रहा था, जैसे मुझे कुछ पता ही न हो।

मुझे ठीक से तैयार न होते हुए देखकर पापा ने मम्मी से कहा— “उसको बोलो शेव तो कर ले।” बस यह सुनना था कि मैं कन्फर्म हो गया कि आज मैं माला से मिलने वाला हूँ।

मैंने फटाफट शेव की और नहा-धोकर अच्छी तरह तैयार हो गया। इत्र लगाया। जूते

पॉलिश किए। नए मोजे पहने। यहाँ तक कि रुमाल भी नया लिया। मैं कुछ भी कमी नहीं रखना चाहता था। आखिर किसी ने तो कहा है— फर्स्ट इंप्रेशन इज द लास्ट इंप्रेशन। और मैं तो उससे मिलने जा रहा था, जिसे मैं प्यार करता था। अपना इंप्रेशन खराब करने का रिस्क मैं नहीं ले सकता था।

हम सब ठीक दस बजे मॉल पहुँच गए। वहाँ पहुँचकर पापा ने किसी को फोन किया और उसके बाद हम स्नैक्स के स्टॉल की ओर चल दिए।

थोड़ी देर में पापा उठकर बाहर गए और वो पल आ गया, जिसका मुझे इंतजार था। मैंने देखा कि पापा, माला और उसके मम्मी-पापा के साथ आ रहे थे। वो लोग आकर सामने वाली कुर्सियों पर बैठ गए। मैं तो बस माला को ही देखना चाहता था, पर सबके सामने यह संभव नहीं था। फिर भी तिरछी निगाहों से जितना देख सकता था देखा। माला तो अपनी तस्वीर से भी ज्यादा खूबसूरत थी। वह तो मारे शर्म के ऊपर भी नहीं देख रही थी। उसकी निगाहें तो बस एकटक जमीन पर ही टिकी थीं।

“यह माला है बेटा।” माला की मम्मी ने उसे इंट्रोड्यूस करवाते हुए मुझसे कहा— “तुम दोनों शायद हमारे सामने बात करने में हिचकोगे, इसलिए क्यों न तुम लोग मॉल घूम लो। तब तक हम यहीं बैठे हैं।” यह कहकर उन्होंने तो जैसे मेरे मन की मुराद ही पूरी कर दी थी। मैं तुरंत ही कुर्सी से उठा और माला का हाथ पकड़कर उसे अपने साथ ले गया। पापा सबके सामने तो मुझे मना नहीं कर सकते थे और मैंने जानबूझकर उनकी तरफ नहीं देखा, क्योंकि अगर मैं ऐसा करता, तो इशारों में ही वे मुझे मना कर देते। मैं माला को दूसरी तरफ ले गया, जहाँ से हमारे पैरेंट्स हमें नहीं देख सकते थे। उन लोगों की नजरों से दूर होने के बाद मैंने यह महसूस किया कि माला ने भी मेरा हाथ जोर से पकड़ लिया था। अब मैं उसे लेकर एक आइसक्रीम पार्लर की तरफ गया, जो लगभग खाली ही था। हम दोनों कोने की एक टेबल पर बैठ गए। मैंने माला से पूछा— “कौन-सी आइसक्रीम खाओगी?”

“कोई भी।”

“ठीक है। मैं दो वनीला फ्लेवर लेकर आता हूँ।”

“दो किसलिए? एक ही लाइए।”

यह सुनकर तो मैं जैसे हवा में उड़ने लगा। मैं कब आइसक्रीम लेने गया और कब लेकर आया, मुझे कुछ पता ही नहीं लगा।

मैंने आइसक्रीम माला को दी। वह उसे अपने गुलाबी होंठों के पास लेकर गई और...।

काश कि इस समय मैं आइसक्रीम होता। मैंने सोचा।

उसने एक बार आइसक्रीम खाने के बाद उसे मेरी तरफ बढ़ा दिया और बोली— “आप भी लीजिए...”

“आप भी लीजिए, बेटा।”

माला की मम्मी की आवाज सुनकर जैसे मैं नींद से जागा। वे मुझे कुछ स्नैक्स लेने के लिए कह रही थीं, जो शायद माला के पापा लेकर आए थे। मैंने देखा कि माला की आँखें अब भी एकटक जमीन को ही देखे जा रही थीं। मुझे कुछ न बोलता देखकर मेरी मम्मी मुझे घूर रही थीं।

तब मुझे पता लगा कि मैं अपने सपने की दुनिया से अभी-अभी वापस बुला लिया गया था। “क्या ये थोड़ी देर रुक नहीं सकती थीं...” मैंने मन में सोचा। मेरा हसीन सपना बीच में ही टूट गया था।

अब मुझे यकीन हो गया कि फिल्मों और असली जिंदगी में बहुत अंतर होता है। कुछ देर तक हम लोग वैसे ही चुपचाप बैठे रहे और फिर उसके बाद वो लोग चले गए और मैं भी अपनी पहली मुलाकात पर बिना कुछ बात किए घर वापस आ गया।

# अतीत

घर पहुँचकर मैं बेसब्री से रात का इंतजार करने लगा, क्योंकि रात को ही हम दोनों मिल पाते थे। मोबाइल के नेटवर्क के साथ हम दोनों भी एक हो जाते थे।

आखिरकार रात हुई। फोन आया और हम दोनों की बातें शुरू हुईं। हम दोनों एक ही बात सोच रहे थे कि यह कैसी मुलाकात थी। इससे अच्छा तो मिलवाते ही नहीं। हमारी हालत वैसी हो गई थी, जैसे किसी प्यासे को नदी तक ले जाकर बगैर पानी पिलाए वापस ले आए हों। तब मैंने माला से कहा कि तुम चिंता मत करो, हम मिलेंगे भी और बात भी करेंगे।

मेरी यह बात सुनकर वह चुप-सी हो गई। मैंने पूछा— "क्या हुआ, तुम्हें मेरी बात पर भरोसा नहीं है?"

"नहीं, ऐसी बात नहीं है। पर इससे पहले कि हम प्यार की नदी के दूसरे किनारे पर चले जाएँ, मैं तुम्हें अपने अतीत के बारे में कुछ बताना चाहती हूँ।" उसने कहा।

"अब कुछ भी बताने की कोई जरूरत नहीं है। मैं तुम्हें जितना जानता हूँ, उतना बहुत है। मुझे तुम्हारे अतीत से कोई मतलब नहीं है। मैं हमारा भविष्य देख रहा हूँ और तुम अतीत में पड़ी हो।" मैंने माला को समझाया।

"भविष्य की नदी में पानी अतीत के ग्लेशियर से ही आता है। इसलिए तुम्हें मेरी बात सुननी ही पड़ेगी।" माला ने जोर दिया, तो मैं उसकी बात सुनने के लिए मजबूर हो गया। उसने जो बताया था वह कुछ इस तरह था—

"मेरा नाम माला नहीं है, आसिमा है। अब तो तुम समझ गए होगे कि मैं न तो इन लोगों की अपनी बेटी हूँ और न ही तुम्हारे धर्म की हूँ। मेरा जन्म एक मुस्लिम परिवार में हुआ था। जब मैं तीन साल की थी, तब एक सड़क दुर्घटना में मेरे अम्मी-अब्बा की मौत हो गई। मुझे नहीं पता कि मेरे रिश्तेदारों ने मुझे अपने पास क्यों नहीं रखा। मेरे पापा के एक दोस्त थे, जो अभी के रिश्ते से मेरी बुआ का घर है, उन्होंने मुझे अपने पास रख लिया। उस समय तक

उनकी अपनी कोई औलाद नहीं थी। शुरू में तो सब ठीक था, पर जब एक साल के बाद उनका अपना लड़का हो गया, तो सबकुछ बदल गया। फिर वो शुरू हुआ, जो आमतौर पर होता है। मेरे साथ सौतेला व्यवहार होने लगा। पर मेरी किस्मत अभी भी मेरे साथ थी। एक दिन ये लोग मेरे घर आए। मेरे साथ हो रहे व्यवहार को देखकर मम्मी को दया आ गई। उस समय तक इनको भी कोई संतान नहीं थी। उन्होंने बुआ से कहा कि इसे मुझे दे दो। तुम्हारा अपना लड़का तो है ही, इसे मैं पाल लूँगी। बुआ मान गईं और ये लोग मुझे वहाँ से ले आए। तब से यही मेरा घर है। कुछ समय बाद मेरा एक भाई और एक छोटी बहन भी आ गई और एक बार फिर मुझे पूरा परिवार मिल गया। उस समय रिश्तेदारों ने मेरे मम्मी-पापा पर काफी दबाव डाला था कि एक मुसलमान लड़की को क्यों अपने घर में रख रहे हो, पर मेरी मम्मी ने किसी की न सुनी। आज किस्मत से तुम मुझे मिले हो। पापा ने कहा था कि यह बात मैं किसी को न बताऊँ, पर मैं नहीं चाहती थी कि तुम किसी बात से अनजान रहो। मैं तुमसे कुछ छिपाकर तुम्हें नहीं पाना चाहती थी। यही मेरी कहानी है। अब तुम कोई भी फैसला ले सकते हो, मुझे मंजूर होगा।

उसकी बातें सुनने के बाद मैं सोच में पड़ गया। मैंने माला से कहा— “तुम्हें यह सब मुझे नहीं बताना चाहिए था। अब तुम मुझे फोन मत करना।” यह कहकर मैंने फोन काट दिया। सुबह तक मैंने एक फैसला ले लिया था।

# कागज के फूल

अगली सुबह उठकर मैं सीधा रसोईघर में मम्मी के पास गया। वे चाय बना रही थीं। पापा बाहर टहल रहे थे। मैंने जो फैसला लिया था, उसके लिए मम्मी को मनाना जरूरी था। मैंने मम्मी से कहा— "आप रहने दो, मैं चाय बना देता हूँ।"

मेरी बात सुनकर मम्मी बोलीं— "रहने दे। बड़ा आया है चाय बनाने वाला। मैं ला तो रही हूँ उसे, चाय बनाने के लिए। तू बता क्या बात है?" माँ आखिर माँ होती हैं। वे समझ गई थीं कि मैं किसी काम से आया था।

मैंने फिर भी अनजान बनते हुए कहा— "किसे ला रही हो, जो आपको चाय बनाकर पिलाएगी?"

मम्मी नें हँसते हुए कहा— "कल दिखाया तो था। कैसी लगी माला? पसंद है ना? उसे तेरी मनपसंद मखाने की खीर बनानी भी आती है और पता है, वह जींस नहीं पहनती। तेरे पापा तो तैयार ही नहीं थे, पर तेरी बुआ के जोर देने पर तुझे लड़की दिखा दी। और तू पूछ रहा है कि किसे ला रही हो!"

"बस दिखाई ही तो है।" मैंने कहा— "ना मिलवाया, ना कुछ कहा। बस दिखा दी। वह तो कुछ बोली तक नहीं। कहीं गूंगी हुई तो!"

अब मम्मी थोड़ा गुस्सा होकर बोलीं— "चुप कर, गूंगी नहीं है वो। और तुझे क्या बताना है? आज तेरे पापा शादी की तारीख तय कर लेंगे।" मम्मी ने फैसला सुना दिया।

"मम्मी, ऐसे थोड़ी ना होता है। मुझे उससे मिलकर कुछ बात करनी है। आप पापा से कहो ना। वे मान जाएँगे।"

"अरे, तुझे क्या बात करनी है? और वैसे भी तेरे पापा नहीं मानेंगे।"

"अगर ऐसा है, तो मैं भी कह देता हूँ कि मैं शादी नहीं करूँगा। अगर जबरदस्ती की, तो घर से भाग जाऊँगा।" मैंने भी अपना आखिरी तीर चला दिया।

"चुप कर। मैं बात करती हूँ तेरे पापा से।" और वह तीर निशाने पर लगा।

"आप सबसे अच्छी मम्मी हो।" यह कहकर मैं बाथरूम की तरफ भाग गया।

मम्मी, पापा के लिए चाय लेकर गईं। मैं भी बाथरूम के दरवाजे से कान लगाकर खड़ा था।

तभी मुझे पापा की आवाज सुनाई दी।

"...अब क्या देखना है? बता देना उसे गूंगी नहीं है। बताओ उसे कि अगर मैंने तुम्हें देखा होता, तो क्या वो पैदा होता। ये आजकल के लड़के भी...। पढ़ाई-लिखाई है नहीं और चले हैं लड़की देखने। कह दो कुछ पढ़े और सरकारी नौकरी खोजे। इस प्राइवेट नौकरी से कुछ नहीं होगा। और ये भाग जाने वाली बात क्या है। चड्डी खरीदने की औकात नहीं है और चले हैं सुपरमैन बनने...।"

इसके आगे मैंने सुनने की कोशिश नहीं की और नहाने लगा। वैसे तो रोज मैं दोपहर से पहले नहीं नहाता था, पर आज पापा बाहर गुस्से में थे, तो मैंने सोचा कि मैं अंदर ही रहूँ तो अच्छा है। मैं यह जानता था कि अभी थोड़ी देर में पापा ऑफिस चले जाएँगे। बस, तब तक के लिए मुझे उनसे बचकर रहना था और उनसे बचने के लिए बाथरूम से अच्छी जगह नहीं थी। मुझे यह भी मालूम था कि मम्मी, पापा को मना लेंगी, क्योंकि घर के प्रधान बेशक पापा हैं पर चलती तो मम्मी की ही है।

मैं जब तक नहाकर बाहर निकला, पापा ऑफिस के लिए निकल रहे थे और जाते-जाते मम्मी से बोले— "मैं बात करके देखता हूँ।" यह सुनते ही मैं समझ गया कि मेरा काम हो गया। मैं भी माला से मिलने की तैयारी में लग गया।

कुछ देर बाद मैं माला से मिलने के लिए पूरी तरह तैयार हो गया। मैंने जो फैसला लिया था, वह कई लोगों की जिंदगी बदलने वाला था। मैं कंप्यूटर के सामने बैठकर यह सोच रहा था कि कहीं मेरे इस फैसले के कारण कुछ गड़बड़ न हो जाए। तभी मम्मी मेरे कमरे में आकर बोलीं— "यहाँ चुपचाप बैठा क्या कर रहा? सुबह तो बड़ी आवाज निकल रही थी, अब क्या हो गया?"

मैने बैठे-बैठे ही कहा— "कुछ नहीं मम्मी। आप बताओ, कुछ काम है क्या?"

"काम तो बहुत सारे हैं, पर अभी फिलहाल के लिए तू उठ और तैयार हो जा। आधे घंटे में माला और उसकी मम्मी आ रही हैं। आज तेरी वजह से वह स्कूल नहीं जा पाई।" मम्मी ने वह खबर सुना दी, जिसका मैं इंतजार कर रहा था।

इतना कहकर मम्मी जाने लगीं। वे अपने आप से बोल रही थीं— "पता नहीं अब इसे क्या पूछना रह गया है...।"

उनके हिसाब से तो मैं बहुत ही गलत काम कर रहा था।

पर मैंने भी मन में ठान लिया था कि अब जो फैसला लिया है, उस पर अमल करके ही रहूँगा। मैं माला से मिलने के लिए तैयार होने लगा और मन ही मन एक बार फिर से यह सोचने लगा कि मुझे जो कहना है, वह कैसे कहूँ?

आधे घंटे बाद घर के बार एक ऑटो आकर रुका। मैं उठकर गेट खोलने जा ही रहा था कि मम्मी ने कहा— "तू बैठ, मैं देखती हूँ।" यह कहकर वे बाहर चली गईं।

थोड़ी देर बाद मुझे माला दिखाई दी। साथ में उसकी मम्मी भी थीं, पर मुझे तो 'अर्जुन की चिड़िया की आँख' की तरह बस माला ही दिखाई दे रही थी।

आज उसने सफेद रंग की सलवार-कमीज पहनी हुई थी। बाल खुले थे। आँखें आज भी जमीन को ही देख रही थीं। उसके चेहरे के भाव हर पल बदल रहे थे। धीर-धीरे वह मेरे करीब आ रही थी...

...या मैं उसकी तरफ जा रहा था, मुझे नहीं पता।

"आंटी के पैर छुओ बेटा।" मम्मी की आवाज कानों में पड़ने के बाद मैं जैसे सपने से बाहर आया। माला मेरे सामने खड़ी थी। बगल में उसकी मम्मी और मेरी मम्मी भी थीं। मैंने आंटी के पैर छुए और हम सोफे पर बैठ गए।

"पूछ लो बेटा, जो पूछना है।" मम्मी ने मुझसे कहा और फिर माला की मम्मी की तरफ मुड़कर बोलीं— "माफ कीजिए, आपको आज इतनी परेशानी हुई। ये आजकल के लड़के भी ना... पता नहीं इनको क्या हो गया है। मैं तो कहती हूँ, यह सब फिल्मों का दोष है। उसी की वजह से ये लोग बिगड़ गए हैं...।"

मम्मी इससे पहले कि पूरे बॉलीवुड को दोष देना शुरू करतीं, माला की मम्मी ने उन्हें रोकते हुए कहा— "परेशानी की कोई बात नहीं है। हम लोग तो आज गोरखपुर आने ही वाले थे। अच्छा है, आजकल के बच्चे शादी से पहले कुछ भी मन में नहीं रखते हैं। शादी से पहले अगर एक-दूसरे को जान लें, तो यह सबसे अच्छा होता है। हमें तो यह मौका नहीं मिला, पर मैं सोचती हूँ कि अगर ये ऐसा कर रहे हैं तो अच्छा ही है।"

यह सुनकर मेरी मम्मी के चेहरे पर कुछ राहत और थोड़ी खुशी के एक्सप्रेशन आए।

माला की मम्मी मुझसे बोलीं— "जाओ बेटा, अपने कमरे में। माला को भी ले जाओ और जो भी बात करनी है, खुलकर कर लो। हमारे सामने शायद कुछ बात नहीं कर पाओगे।"

मैं भी तो यही चाहता था। उनकी बात सुनते ही मैं तुरंत उठकर खड़ा हो गया। माला ने धीरे से नजरें ऊपर उठाईं और मेरी तरफ देखा। मुझे खड़ा देखकर वह भी उठ गई और मेरी बगल में खड़ी हो गई।

हम दोनों मेरे कमरे में आ गए।

मैं यह देख सकता था कि माला घबराई हुई है।

मैं माला के पास गया और बोला— "मुझे तुमसे कुछ पूछना है और मैं यह चाहता हूँ कि तुम सोच-समझ कर उसका जवाब दो। हमारा भविष्य तुम्हारे जवाब पर निर्भर करेगा।"

"क्या पूछना है?" वह सिर हिलाकर धीरे से बोली।

मैंने उसका हाथ पकड़ा और एक घुटने का सहारा लेकर बैठ गया। टेबल पर से कागज का बना एक फूल उठाया, जो मैंने सुबह ही बनाया था और उस पर इत्र भी छिड़का था। असली फूल खरीदने का समय नहीं था, तो मैंने इससे ही काम चलाने की सोची। उस फूल को मैंने माला की तरफ बढ़ाकर पूछा—

"मुझसे शादी करोगी?"

मेरा यह सवाल सुनकर वह चौंक पड़ी। शायद उसकी समझ में यह आखिरी बात होगी, जो उसने सोचा होगा कि मैं उससे कहूँगा।

कुछ पल तो वह चुपचाप खड़ी रही। मैंने देखा कि उसकी घबराहट धीरे-धीरे कम हो रही थी और उसकी जगह खुशी आ रही थी। उसकी आँखों से आँसू की कुछ बूँदें निकलीं, जो उसके गाल को भिगोते हुए नीचे की तरफ जाने लगी। उसने मेरे हाथ से वह कागज का फूल ले लिया और थोड़ा मुस्कराते और थोड़ा शरमाते हुए धीरे से बोली— "हाँ।"

इतना कहकर वह मेरे सीने से लग गई। मैंने भी उसे जोर से कस लिया।

मेरा प्यार कबूल हो गया था। ऐसा लग रहा था कि अब इस दुनिया में हम दोनों के सिवा कोई और नहीं है। कुछ पल के लिए तो मैं यह भी भूल गया था कि बाहर हम दोनों की मम्मियाँ बैठी हुई हैं। मेरे मन में कुछ ऐसा एहसास हो रहा था, जो आज से पहले मैंने कभी महसूस नहीं किया था। शायद यह एहसास सिर्फ उन किस्मतवालों को होता है, जिन्होंने प्यार किया हो।

"माला, चलो बेटा। शाम हो रही है। वापस घर जाना है।" माला की मम्मी की आवाज सुनकर हम दोनों अलग हुए। मैंने अभी भी उसका हाथ पकड़ रखा था। मैंने धीरे से उसे अपने करीब खींचते हुए कहा— "जाना जरूरी है क्या?"

यह सवाल मैंने क्यों किया, मैं यह नहीं समझ पाया। शायद प्यार में समझ की जरूरत ही नहीं होती है।

"हाँ। अब शादी करने के बाद मुझे लेकर आना।" माला ने मेरे कान के पास आकर धीरे से कहा और मेरे गाल को चूम लिया।

इसके बाद वह हँसते हुए जल्दी से बाहर निकल गई।

मैंने बाहर आकर देखा, तो सचमुच शाम होने वाली थी। मैंने सूर्य की तरफ देखा और मन में बोला— "क्या भगवान, आज बड़ी जल्दी में हो।"

बाहर निकलकर मैंने एक रिक्शे वाले को रोका और मम्मी से कहा— "आप और आंटी इसमें बैठकर चलिए। मैं और माला दूसरे रिक्शे से आते हैं।" मम्मी मुस्कराते हुए आंटी के साथ उसमें बैठ गईं और मैं दूसरे रिक्शेवाले की तरफ चल दिया।

मैंने जानबूझकर दूसरा रिक्शा खोजने में थोड़ी देर की, ताकि मम्मी और आंटी वाला रिक्शा आगे निकल जाए। जब वे लोग पर्याप्त दूरी पर चले गए, तब मैंने दूसरे रिक्शे पर माला को बैठाया और खुद भी बैठते हुए रिक्शेवाले से बोला— "बस स्टैंड चलो। जल्दी नहीं है। धीरे चलना।" यह सुनकर माला हँस पड़ी। उसे हँसता देखकर मैंने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा— "अब तुम तो रुकने को तैयार नहीं हो, तो सोचा जितनी देर तुम्हारे साथ बिता सकूँ।" मेरी बात सुनकर माला शरमाकर नीचे देखने लगी।

हम लोग रिक्शे से बस स्टैंड पहुँच गए। सारे रास्ते हम दोनों में से कोई भी कुछ नहीं बोला, हम सिर्फ एक-दूसरे का हाथ पकड़कर बैठे रहे। मम्मी और आंटी पहले से पहुँचे हुए थे और हमारा इंतजार कर रहे थे। बस के जाने में अभी कुछ समय बाकी था। मैंने उस समय का सदुपयोग करने की सोची। मैं मम्मी से बोला— "चलो, पास वाले इस रेस्तराँ में बैठते हैं। आप खड़े-खड़े थक जाएँगी।"

शायद मम्मी समझ गईं कि मैं क्या चाहता हूँ। उन्होंने जवाब दिया— "तू चला जा। हम लोग यहीँ बैठेंगे।" आंटी ने भी हामी में सिर हिलाया।

मैं माला का हाथ पकड़कर एक रेस्तराँ में ले गया। वहाँ मैंने वेटर से दो जूस लाने को कहा। वेटर जाने लगा, तो माला ने उसे बस एक जूस के लिए कह दिया। यह सुनकर मुझे डाउट हुआ कि कहीं मैं फिर से सपना तो नहीं देख रहा हूँ। मैंने अपने आप को जोर से च्यूँटी काटी। इसके बाद एक तेज दर्द के एहसास ने कन्फर्म कर दिया कि यह सपना नहीं था। वेटर जूस का गिलास ले आया। उस एक गिलास से मैंने और माला दोनों ने जूस पिया। जूस आज से पहले तो इतना टेस्टी कभी नहीं लगा था। शायद माला से होंठों से छूकर उसकी मिठास बढ़ गई थी। उस दिन मॉल में देखा हुआ सपना आज सच हो गया था।

उस मीठे पल को जीने के बाद अब हमारे अलग होने का टाइम हो गया था। माला बस में बैठी थी और मैं नीचे से उसे विदा कर रहा था। उसके होंठों का स्पर्श मैं अब भी अपने गाल पर महसूस कर सकता था।

शाम को पापा आए, तो उन्होंने बताया कि शादी की तारीख एक जनवरी को है। अभी चार महीने बाकी थे। मैंने सोचा, इतना समय कैसे कटेगा। पर मैं कुछ कर भी नहीं सकता था। माला अभी 18 साल की नहीं हुई थी। दिसंबर में उसका अठारहवाँ जन्मदिन था। अब मुझे चार महीने काटने थे।

# अगर आप माला हैं तो— SORRY

मैंने सैंडी, ऐडी और अमित को फोन करके अपनी शादी की तारीख बता दी और साथ ही सबको यह इंस्ट्रक्शन भी दे दी कि आज ही टिकट बुक कर लें।

अब ऐसा नहीं था कि माला और मैं सिर्फ रात को ही बात कर सकते थे। अब हमें जब भी समय मिलता था, एक-दूसरे को फोन कर लिया करते थे। जब फोन नहीं कर सकते, तब मैसेज भेजने का सिलसिला चलता रहता था। माला की मम्मी जान चुकी थीं कि हम दोनों आपस में बात करते हैं और उन्होंने उसके पापा को भी बता दिया था। माला ने उन्हें यह भी बता दिया था कि उसने अपने 'अतीत' के बारे में भी मुझे सबकुछ बता दिया है। वो लोग भी इस बात से खुश थे कि मुझे सबकुछ जानने के बाद भी कोई समस्या नहीं है और ये रिश्ता कबूल है। मेरे लिए तो यह कोई बात थी ही नहीं। मैं शुरू से ही जाति और धर्म का विरोधी था। मैं यह सोचता था कि काश ये अलग-अलग जातियाँ और धर्म न होते और सबका एक ही धर्म होता— इंसानियत। अगर ऐसा होता तो कितना अच्छा होता। कई बार ऐडी से मेरी इस बारे में बहस भी हो जाती थी। वह कहता था कि ऐसा होना संभव ही नहीं है कि सब लोग एक साथ मिलकर रहें। यह व्यावहारिक नहीं है। तब मैं उसे समझाता था कि एक ही परिवार में लोग अलग-अलग विचार रखते हैं, उनकी पसंद अलग होती है। उनके शौक अलग होते हैं। अगर बड़े भाई को मीठा पसंद है, तो छोटे को खट्टा। तो क्या हम सब आपस में लड़ते रहते हैं? इतनी विविधताओं के बावजूद अगर हम सब एक साथ मिलकर रह सकते हैं और अपने आप को एक परिवार कहते हैं, तो हम अलग-अलग जाति और धर्म के होने के बावजूद मिलकर रह सकते हैं। हमें बस यह सोचना होगा कि हमारे धर्म अलग नहीं हैं, हमारे विचार अलग हैं। बस सारी समस्या समाप्त।

पर मेरे लिए यह समस्या समाप्त नहीं हुई थी। मेरे पापा इन विचारों से सहमत नहीं थे। वे जाति और धर्म के घोर समर्थक थे। उनका मानना था कि अगर ये जातियाँ हमारे पूर्वजों ने बनाई हैं, तो आवश्य ही कोई कारण रहा होगा। मेरी शादी किसी दूसरी जाति की लड़की से

हो, यह उन्हें कभी मंजूर नहीं होगा। यहाँ पर तो माला का धर्म ही अलग था, इसलिए मैंने उन्हें माला के अतीत के बारे में कुछ नहीं बताया था। मैंने यह सोचा था कि शादी के बाद उन्हें सबकुछ बता दूँगा। मैं भगवान से बस यही प्रार्थना कर रहा था कि तब तक उन्हें कुछ भी पता न चले।

माला ने भी अपनी सहेलियों को अपनी शादी के बारे में बता दिया था। हम बात तो रोज करते थे, पर मिल नहीं सकते थे। मिलने का कोई रास्ता भी नहीं था। वह रोज स्कूल जाती थी और स्कूल से सीधे घर। छुट्टी के दिन अपने घर पर ही रहती थी। अगर कहीं बाहर भी जाना होता था, तो उसका भाई या उसके मम्मी-पापा साथ ही होते थे।

एक दिन जब मैं सैंडी से बात कर रहा था, तो उसने अचानक ही मुझसे पूछा— "तू भाभी जी से कितनी बार मिला है?"

मैंने कहा— "दो बार।"

"बस?" वह बोला— "अबे लानत है तेरे चिरकुट होने पर। यह समय फिर नहीं आएगा। जितना समय एक साथ बिता सकते हो, बिता लो। अभी तुम एक girlfriend-boyfriend के रिश्ते में हो। शादी के बाद पति-पत्नी हो जाओगे। जिम्मेदारियाँ हो जाएँगी। यह तुम दोनों का golden-era है भाई। जा मिल उससे। जी ले अपनी जिंदगी।" उसने चक दे इंडिया के शाहरुख खान की तरह पूरा लेक्चर दे दिया।

"डायलॉग मारना बड़ा आसान है।" मैंने कहा— "पर करना बहुत मुश्किल। दो बार तो बड़ी मुश्किल से पापा को नाराज करके मिल पाया हूँ और तू कह रहा है कि रोज मिलूँ!"

"सब काम पापा से पूछकर नहीं करते हैं। उसके स्कूल चला जा। वहीं मिल ले।" सैंडी ने उपाय बताया।

"ठीक है, देखेंगे।" यह कहकर मैंने इस टॉपिक को वहीं खत्म कर दिया।

उससे बात करने के बाद मैंने जब इस बात पर गौर किया, तो पाया कि यह हो सकता था, क्योंकि उसका स्कूल मेरे घर से अधिक दूर नहीं था। बस फिर क्या था, अगले दिन मैं उसके स्कूल की तरफ चल पड़ा। मम्मी को कह दिया कि मैं अपने किसी दोस्त के घर जा रहा हूँ।

मैं माला से मिलने की एक्साइटमेंट में समय से पहले ही उसके स्कूल पहुँच गया। अभी स्कूल शुरू नहीं हुआ था। स्कूल की कुछ बसें आ गई थीं और कुछ आ रही थीं। सब बसों पर यह लिखा हुआ था कि वह किस रूट से आ रही है। मैं स्कूल के गेट से थोड़ी दूरी पर खड़ा हो गया, जहाँ से सबकुछ देख सकता था। मैं माला की बस को खोजने की कोशिश कर रहा था। मैंने यह सोचा था कि जब वह बस से उतरेगी, तब मैं उसे फोन करूँगा और उसके सामने जाकर उसे सरप्राइज दूँगा। एक बात का डर था कि कहीं उसकी बस मेरे पहुँचने से

पहले ही न पहुँच गई हो। पर ऐसा नहीं हुआ। मुझे माला के रूट की तरफ से आती हुई बस दिखाई दी। एक बार फिर मेरे पेट में तितलियों ने उड़ना शुरू कर दिया। मैंने देखा कि माला बस से उतर रही है। वह अपनी सहेलियों से कुछ बात कर रही थी। उसके चेहरे पर हँसी थी। मैंने उसे इस तरह से हँसते हुए नहीं देखा था। मेरे साथ उसने जो कुछ पल बिताए थे, उस समय उसकी हँसी अलग थी। स्कूल की यूनिफॉर्म में भी वह उतनी ही खूबसूरत थी। उसकी खूबसूरती पर कपड़ों से कोई अंतर नहीं पड़ता था। मैं तो बस उसे ही देख रहा था। मुझे ऐसा लगा, जैसे वह स्कूल के अंदर जाने से पहले एक बार ठिठकी। उसने उस ओर देखा, जिधर मैं खड़ा था। ऐसा लगा, जैसे उसे यह आभास हो गया हो कि मैं उसके आस-पास ही हूँ। मैं तुरंत ही पास के पेड़ की ओट में छुप गया। मैंने ऐसा क्यों किया, यह मुझे भी नहीं पता। माला अंदर जा चुकी थी। मेरी हिम्मत ही नहीं हुई कि मैं उसके सामने जाऊँ। यह अजीब-सी स्थिति थी। हम दोनों मिल चुके थे। मैं उसे प्रपोज भी कर चुका था। हम रोज आपस में बातें करते थे। पर आज जब मिलने का समय आया, तो किसी अनजाने डर ने मुझे रोक दिया। यह सिलसिला छह दिनों तक चला। मैं रोज सबेरे यह सोचकर उसके स्कूल जाता था कि आज तो उससे मिलूँगा ही, पर ऐसा नहीं होता था और मैं उससे बिना मिले ही वापस घर आ जाता था। घर आकर अपने आप पर गुस्सा करता था और यह सोचता था कि कल पक्का माला से मिलूँगा।

सातवें दिन मैं यह पक्का फैसला करके घर से निकला कि आज तो माला से जरूर मिलूँगा और उसे सरप्राइज दूँगा। मैं उसी पेड़ के पास खड़ा था और माला की बस का इंतजार कर रहा था। ठीक समय पर बस आई। सब उसमें से उतरने लगे। मैंने भी जेब से फोन निकाल लिया। जैसे ही माला बस से उतरती, मैं उसे फोन कर देता। मैं माला को खोज रहा था। तभी बस चल पड़ी। मैं हैरान रह गया। माला तो अभी उतरी ही नहीं, फिर बस कैसे जा रही है! फिर एक बार बस रुकी और उसके पीछे से आ रही गाड़ी किनारे से आगे निकल गई। तब मैं समझा कि ड्राइवर ने पीछे वाली गाड़ी को रास्ता देने के लिए बस को थोड़ा आगे बढ़ाया था। मैं फिर से माला के उतरने का इंतजार करने लगा। पर ऐसा नहीं हुआ। वह मुझे दिखी ही नहीं। मैं परेशान हो गया। फिर यह सोचा कि शायद आज वह स्कूल नहीं आई होगी। आज जब मैं यह सोचकर और पूरी हिम्मत जुटाकर आया था कि उससे मिलूँगा ही, तब वह आई ही नहीं।

मैं दुखी मन से घर जाने के लिए पीछे मुड़ा। तभी मैंने जो देखा उससे मुझे डर, खुशी और हैरानी एक साथ महसूस हुई। माला मेरे पीछे खड़ी मुस्करा रही थी। उसके साथ उसकी सहेली भी थी। मैं सकपका-सा गया। कुछ समझ ही नहीं आ रहा था। तभी माला ने हँसते हुए मुझसे पूछा— “और कितने दिन यहाँ खड़े होकर मुझे देखने वाले थे?”

मैं क्या कहूँ, मेरी कुछ समझ में ही नहीं आ रहा था। कहाँ तो मैं माला को सरप्राइज देने

की सोच रहा था और कहाँ उसने मुझे शॉक दे दिया।

“क्यों जीजू, कैसा लगा झटका?” माला की सहेली ने हँसते हुए कहा।

“बहुत जोर से। अगर मुझे कुछ हो जाता तो?” मैंने झूठमूठ का गुस्सा दिखाते हुए कहा। अब मेरी साँसें थोड़े काबू में आ रही थीं।

“सॉरी जीजू, यह मेरा आइडिया था। इसमें माला का कोई हाथ नहीं है।” उसकी सहेली अपने दोनों कान पकड़ते हुए बोली।

“पर तुम्हें पता कैसे चला कि मैं यहाँ पर हूँ?” मैंने पूछा।

“मैंने तो आपको एक हफ्ते पहले ही देख लिया था, जब आप पेड़ के पीछे छुपने की कोशिश कर रहे थे...।” माला ने बताया।

“...और कल जब इसने मुझे यह बात बताई कि आप रोज छुप-छुप कर इसे देखते हो, तब मैंने यह प्लान बनाया।” माला की सहेली ने बात पूरी की।

मैं माला को सरप्राइज देना चाहता था और उल्टे उसने ही मुझे शॉक दे दिया।

माला की सहेली अब हम दोनों को अकेला छोड़कर वापस स्कूल जा चुकी थी।

मैंने माला से पूछा— “कहाँ चलना है?”

“जहाँ ले चलो।” उसने जवाब दिया।

मैं उसे अपनी साइकिल पर आगे बैठाकर मॉल की तरफ ले गया। हम दोनों मैक्डॉनल्ड में बैठ गए। कुछ ऑर्डर किया। वह ऑर्डर तो बस इसलिए किया था कि मैं माला के साथ रहना चाहता था। हम तब तक वहाँ रुके, जब तक माला की स्कूल बस के जाने का समय नहीं हो गया। मैंने उसे बस में बैठा दिया और वह रोज की तरह समय पर घर चली गई।

उस दिन के बाद जब भी हमारा मिलने का मन करता, मैं उसके स्कूल चला जाता। हम लंच साथ में करते थे और फिर वह अपनी क्लास में चली जाती थी। उस दिन के बाद फिर कभी उसने क्लास बंक नहीं की।

सबकुछ अच्छा चल रहा था कि एक दिन अचानक माला का मैसेज आया— ‘अब मुझे मैसेज मत भेजिएगा।’

यह पढ़कर तो जैसे मेरी जान ही निकल गई। मैं डर गया कि अचानक ऐसा क्या हो गया, जिसके कारण माला ने मुझे मैसेज भेजने से ही मना कर दिया है। मैंने तुरंत ही माला को फोन लगाया। रिंग बजती रही, पर उसने फोन रिसीव नहीं किया। अब मेरा डर और बढ़ गया। मैंने कई फोन किए, पर परिणाम एक ही रहा।

मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूँ। कभी सोचता कि उसके स्कूल चला जाऊँ। कभी सोचता कि उसके घर ही चला जाता हूँ। अभी इसी उधेड़बुन में लगा हुआ था

कि मेरा फोन बजने लगा। आखिरकार माला ने फोन कर दिया था। मैंने तुरंत ही फोन उठाया और पूछा— "क्या हुआ?"

"कुछ नहीं।"

"फिर तुमने मुझे मैसेज भेजने से मना क्यों कर दिया।"

"अच्छा वो...। बात यह है कि कभी-कभी मेरा फोन पापा भी देख लेते हैं और अगर उस समय तुमने कोई मैसेज भेजा, तो वे उसे पढ़ लेते हैं। मुझे यह अच्छा नहीं लगता है। इसलिए मैंने तुम्हें मना किया। बस और कोई बात नहीं है।" माला ने सारी बात बता दी।

यह सुनकर मेरा डर जाता रहा। पर यह तो समस्या थी। ऐसा कैसे हो सकता था कि मैं मैसेज न करूँ और साथ ही साथ मैं यह भी चाहता था कि उन मैसेज को माला के सिवाय कोई दूसरा न देखे।

मुझे इसका कोई उपाय करना था। मैंने अपने दिमाग के सारे घोड़े काम पर लगा दिए। और आखिरकार मुझे एक तरकीब सूझी।

यह जानकर मुझे भी आश्चर्य हुआ कि यह सब सोचने में मुझे बस कुछ पल ही लगे थे। प्यार का वायरस दिल के मामलों में दिमाग तेज कर देता है।

मैंने माला से पूछा— "आमतौर पर ऐसा कब होता है, जब तुम्हारे पापा मोबाइल देख सकते हैं?"

"शाम को।" उसने बताया।

"ठीक है। बाय। आई लव यू।" यह कहकर मैंने फोन रख दिया।

मैंने उसी दिन शाम के समय माला को एक मैसेज भेजा और इंतजार करने लगा।

दो घंटे तक जब माला का फोन नहीं आया, तब मैंने ही उसे फोन किया।

फोन उठाते ही माला ने मुझसे पूछा— "तुमने कुछ किया है क्या?"

मैंने कहा— "क्यों, क्या हुआ?"

माला— "नहीं, कुछ नही। पर अभी जब तुम्हारा फोन आया, तब पापा ने उसे देखा तक नहीं जबकि फोन उनके पास ही पड़ा हुआ था। उन्होंने मुझे बुलाकर फोन पकड़ा दिया।"

यह सुनकर मैं हँसने लगा।

मेरी हँसी सुनकर वह समझ गई कि कुछ तो बात है। उसने फिर मुझसे पूछा— "जरूर तुमने कुछ किया है। बताओ मुझे।"

"नहीं, मैंने तो कुछ नहीं किया है। बस एक मैसेज भेजा था।" मैंने बड़ी मुश्किल से अपनी हँसी को सँभालते हुए जवाब दिया।

“कौन-सा मैसेज? मैंने तो कोई मैसेज नहीं देखा है।” माला ने हैरानी से कहा।

“हाँ, वह तुम्हारे लिए था भी नहीं।” मैंने शरारत से कहा।

“ऐसा क्या लिखा तुमने, बताओ मुझे?” अब माला से नहीं रहा गया।

तब मैंने वह मैसेज माला के फोन पर फिर से भेजा, जो मैंने शाम को भेजा था और शायद माला के पापा ने उसे पढ़ने के बाद डिलीट कर दिया था।

वह मैसेज कुछ इस प्रकार था—

“अगर आप माला हैं तो— SORRY। अगर नहीं, तो आप दूसरों के मैसेज क्यों पढ़ते हैं? यह गलत बात है।”

उस दिन के बाद अगर कभी माला के फोन पर कोई मैसेज आता या फोन भी आता था, तो उसके पापा कभी फोन नहीं देखते थे। कभी-कभी तो उसकी मम्मी से कहते थे— “कहाँ है माला। कह दो उसके दीवाने का फोन है।”

दीवाना! यह मैं था।

# वो सबसे अच्छे चार दिन

सैजनवाँ— यह वह जगह थी जिसकी पहचान पहले मेरे लिए बस इतनी ही थी कि यह गोरखपुर के पास है और यहाँ पर मेरे पापा का ऑफिस है। पर अब इसकी पहचान बदल चुकी थी। अब यह वह जगह थी, जहाँ मेरा प्यार था। अब यह ऐसी जगह थी, जहाँ मैं जाना चाहता था। जहाँ माला रहती थी।

प्यार क्या होता है और उसमें कितनी ताकत है, यह मैं पिछले कुछ दिनों में ही जान गया था। मैं जिस माला को जानता नहीं था, आज उसके बगैर रहने की कल्पना करना भी मेरे लिए मुश्किल था। उससे मिलने के लिए जो थोड़े-बहुत झूठ मैं बोल रहा था, मैं समझता था कि यही बहुत बड़ी बात है। कभी यह किया नहीं था न। मम्मी से झूठ बोलकर माला से मिलने जाना। अपने जेबखर्च से पैसे बचाकर मोबाइल रिचार्ज कराना। मैंने कभी ऐसा कुछ किया नहीं था, इसलिए समझ रहा था कि प्यार में इतना कुछ करना पड़ता है। किंतु मुझे नहीं मालूम था कि यह तो बस शुरुआत थी और आगे बहुत कुछ होने वाला था, जो मैंने तो क्या किसी ने भी नहीं सोचा होगा।

जो कुछ भी होने वाला था, वह तो भविष्य के गर्भ में था, पर अभी मैं सबसे बड़े दुख से गुजर रहा था और वह था— जुदाई। सुनने में तो यह एक छोटा-सा शब्द है, पर इसका दर्द वही समझ सकता है जिसने इसे झेला है। जिसने प्यार किया है। हम दोनों ही जुदाई की आग में जल रहे थे। छोटी-छोटी मुलाकातों से मन नहीं भरता था, उल्टे ये मुलाकातें उस आग में घी का काम करती थीं।

एक दिन ऐसा हुआ, जैसे लगा कि शायद ऊपरवाले को हमारी इस हालत पर तरस आ गया और उसने हमें एक मौका दिया। एक मौका हमारी दूरियों को नजदीकियों में बदलने का। बस जरूरत थी तो दुआओं की और थोड़ी-सी हिम्मत की।

यह मौका हमें मिला था छठ पूजा के कारण। छठ पूजा के लिए माला के परिवारवाले हर साल गाँव जाते थे। इस बार भी सब लोग गाँव जाने वाले थे। जब माला ने मुझे बताया

कि उसे चार दिनों के लिए गाँव जाना है, तो मेरे दिमाग में घुसा प्यार का वायरस एक्टिवेट हो गया। उसने तुरंत ही एक खतरनाक प्लान बना लिया।

मैंने माला से कहा कि वह रुक जाए और बाकी सबको भेज दे। पर समस्या यह थी कि वो लोग माला को अकेले छोड़ नहीं रहे थे और उसके रुकने की वजह भी नहीं थी। तब मैंने उसे उपाय बताया कि वह यह कहे कि उसे परीक्षा की तैयारी करनी है, इसलिए वह नहीं जा सकती और अपनी किसी सहेली को बुलाकर उसके साथ रहेगी। इससे रुकने की वजह भी मिल गई और अकेले रहने का डर भी खत्म हो गया। यह तरकीब तो कामयाब रही, पर एक बदलाव हो गया। अब माला के साथ उसकी सहेली नहीं, उसका भाई रुक रहा था। उसका भाई उससे दो साल छोटा था और दसवीं कक्षा में था।

यह सुनकर मैंने सोचा कि कोई बात नहीं, साले को तो मैं सँभाल ही लूँगा।

उधर माला के मम्मी-पापा गाँव जाने की तैयारी कर रहे थे और इधर मैं अपनी तैयारी कर रहा था।

जिस दिन माला के मम्मी-पापा और बहन घर से गाँव के लिए निकले, उसी दिन मैं भी अपने घर से निकल पड़ा। मम्मी से मैंने यह कहा कि मैं चार-पाँच दिनों के लिए अपने दोस्त के पास कानपुर जा रहा हूँ। पापा को दिखाने के लिए मैंने इंटरनेट से कानपुर का टिकट भी बुक करवा लिया था और उसका प्रिंट लेने के बाद उसे कैंसल भी करा चुका था।

मेरे पापा बाइक से मुझे गोरखपुर स्टेशन तक छोड़ने आए आए और ट्रेन में बैठा दिया। एक बात मैं अच्छी तरह जानता था कि पापा चाहे कितने भी गुस्से वाले हों, पर मुझे प्यार बहुत करते हैं। ठीक समय पर मैं ट्रेन में बैठा था और वह ट्रेन मुझे मेरी मंजिल की तरफ ले जा रही थी।

मेरी मंजिल थी— माला का घर। मैं अपने प्यार से मिलने जा रहा था।

वैसे तो मैं माला के घर बस से भी जा सकता था, पर यह प्लान ज्यादा सेफ था। किसी को शक नहीं हुआ कि मैं माला के पास जा रहा हूँ।

मैंने पहले ही गूगल मैप पर माला का घर देख लिया था। जब तक मैं उसकी कॉलोनी के गेट पर पहुंचा, शाम हो चली थी। फिर भी एहतियात के लिए मैंने बैग में रखी अपनी टोपी निकाली और उसे पहन लिया, ताकि मुझे कोई पहचान न सके। तीन गली पार करके मैं उस गली में पहुँच गया, जिसमें माला का घर था। गली के नुक्कड़ पर पहुँचकर मैंने माला को मिस कॉल की। यह एक संकेत था, जिसके बाद माला को अपने दरवाजे पर लगे स्वस्तिक के निशान को उल्टा कर देना था। मैं वह निशान खोजने लगा। गली में चौथा घर माला का था। मैं जानता था कि माला ने दरवाजा खुला रखा होगा और अपने भाई के साथ टीवी देख रही होगी। उसने टीवी की आवाज तेज कर रखी थी, जिससे मेरे घर में घुसने की आहट न मिले। मैं चुपके से सीढ़ियाँ चढ़कर छत पर चला गया। छत पर पहुँचकर मैंने दुबारा मिस

काल की। इसके बाद माला ने घर का दरवाजा बंद कर दिया और वह भी छत पर आ गई। माला से मिलने का एक पड़ाव तो पार हो चुका था। अब बारी दूसरे और कठिन हिस्से की थी। और वह हिस्सा था— अपने साले को मनाना।

छत पर हम दोनों एक-दूसरे का हाथ पकड़े सूरज को ढलते हुए देख रहे थे। आसमान में शाम हो रही थी, पर हमारे जीवन में एक नई सुबह होने वाली थी। माला का सिर मेरे कंधे पर था और मैं उसके बालों को सहला रहा था।

मैंने माला से पूछा— "तुम्हारा भाई ऊपर तो नहीं आएगा?"

"नहीं, मैंने उसे उसकी मनपसंद फिल्मों की डीवीडी लाकर दी है। उनके खत्म होने से पहले वह हिलेगा भी नहीं।" माला ने पूरा बंदोबस्त कर लिया था।

"वाह! मेरे साथ रहकर तुम भी होशियार हो गई।" मैंने चुटकी ली।

"हाँ, मम्मी भी यही कहती हैं कि तुमने मुझे बिगाड़ दिया है।" वह भी हँसकर बोली।

"यह तो मेरे पापा भी कहते हैं कि हमारी बहू अभी से हमारे लड़के को बिगाड़ रही है।" मैंने उसे फिर छेड़ा।

"चलो, तो फिर ठीक है, हम दोनों ही बिगड़ रहे हैं।" यह कहते हुए माला ने अपने होंठ मेरे होंठों पर रख दिए।

यह मेरे जीवन का पहला किस था। इसका एहसास बताया नहीं जा सकता है। इसे तो बस महसूस किया जाता है। पहला किस करने पर जो फीलिंग आती है, उसे बस वही समझ सकता है जिसने किस किया हो।

अँधेरा हो चला था। माला नीचे गई हुई थी और सैजनवाँ के रक्त-पिपासु मच्छरों की पूरी फौज ने मुझ पर हमला बोल दिया था। मैं अकेले ही किसी तरह उस फौज से निबटने की कोशिश कर रहा था, जिसके सैनिक शायद मुझे उठाकर कहीं और ले जाना चाहते थे।

"मच्छरों के साथ ही खेलते रहोगे या फिर नीचे भी चलोगे?" माला ने छत पर आते हुए कहा।

"अच्छा हुआ तुम जल्दी आ गई, वरना थोड़ी देर और करती तो शायद ये मच्छर ही मुझे नीचे ले आए होते।" मैंने मच्छरों के झुंड में ताली मारते हुए कहा। मेरी ताली के कारण दोनों हथेलियों के बीच फँसकर चार मच्छर शहीद हो गए। मैंने उन्हें नीचे गिरा दिया और अपना हाथ झाड़कर साफ कर लिया।

यह देखकर माला ने कहा— "सोचती हूँ, कुछ देर तुम्हें और छत पर ही रहने दूँ। कुछ हजार मच्छर तो तुम कम कर ही दोगे।"

"यहाँ मेरी जान निकल रही है और तुम्हें मजाक सूझ रहा है।" अब मैं इरिटेट हो रहा था।

“ठीक है। जल्दी से नीचे चलो। मैंने धीरज को किसी काम से बाजार भेज दिया है। तब तक चलकर तुम मेरे कमरे में छुप जाओ। बाद में उसे मनाने का कोई उपाय सोचेंगे।” वह मुझे पकड़कर नीचे ले जाने लगी।

उसके बाद सबसे कठिन काम करना था— उसके भाई धीरज को मनाना।

मैंने पापा को फोन करके बता दिया था कि मैं कानपुर पहुँच गया हूँ और यहाँ नेटवर्क नहीं है, इसलिए हो सकता है कि मेरा फोन ना मिले। इतना कहकर मैंने अपना फोन ऑफ कर दिया था।

माला के साथ जब मैं उसके कमरे में गया, तो मेरी आँखे ही चौधिंया गईं। कमरा पूरी तरह सजा हुआ था। हर चीज अपनी जगह पर थी। ऐसा लगता था कि अगर आप अंधेरे में भी कुछ ढूँढ़ें, तो वह मिल जाए। और एक मेरा कमरा था कि अगर दिन के उजाले में लाइट जलाकर भी आप कल के मोजे खोजें, तो भी न मिलें।

शादी के बाद किसी को तो बदलना पड़ेगा। मैंने गहरी साँस लेते हुए सोचा।

अभी हम यह सोच ही रहे थे कि साले साहब को कैसे मनाएँ, तभी एक आवाज सुनाई दी— “दीदी, मैं बाजार से चीनी ले आया हूँ। किचन में रखी है।”

धीरज घर में आ चुका था। माला दरवाजा बंद करना भूल गई थी। अब यह डर लगने लगा कि अगर कहीं वह माला के कमरे में आ गया, तब क्या करेंगे। मैं कुछ सोच ही रहा था कि माला ने अपनी अलमारी खोली और मुझसे कहा— “तुम इसमें छुप जाओ, तब तक मैं धीरज को मनाने का उपाय सोचती हूँ।” यह कहकर वह मुझे धकेलते हुए अलमारी में बंद करके फटाफट बाहर भाग गई। मेरे पास कोई दूसरा चारा भी नहीं था। मैंने चुपचाप अलमारी में अपना मोबाइल निकाला और ‘ऐंग्री बर्ड’ खेलकर टाइम पास करने की कोशिश करने लगा।

वैसे अलमारी में बंद होने का मेरा यह पहला मौका नहीं था। इससे पहले जब मैं इंजीनियरिंग प्रथम वर्ष में था, तब एक बार अपने आप को अलमारी में बंद कर चुका था। हर कॉलेज के अपने कुछ रिवाज होते हैं, जो सीनियर छात्र जूनियर छात्रों को सिखाते हैं और यह परंपरा चलती रहती है। हमारे कॉलेज में ऐसे ही होली का भी एक रिवाज था। हमारे कॉलेज में सीनियर छात्र पहले आपस में होली खेलते थे। उनके शरीर पर सिवाय अंडरवियर के कुछ भी नहीं होता था। अगर किसी ने गलती से कुछ पहनने की कोशिश की, तो थोड़ी देर में वह कपड़ा चीथड़ों मे बदलकर उसके गले में झूलता हुआ दिखाई देता था। जब आपस में सब होली खेल चुके होते थे, तब वे जूनियर छात्रों के हॉस्टल की तरफ चल देते थे, उन्हें भी ऐसी होली खेलना सिखाने के लिए। उस समय तक जूनियर छात्रों को मिलने वाली सिक्युरिटी हट चुकी होती थी। हॉस्टल में सबको यह संदेश भिजवा दिया जाता था कि सारे छात्र दस मिनट में नीचे पहुँचें। दस मिनट बाद सब नीचे जमा हो जाते थे। फिर सबको, सिर्फ

अंडरवियर छोड़कर, अपने बाकी कपड़े अपने आप ही फाड़ने का आदेश दिया जाता था। अगर कोई इसे नहीं मानता था, तो सीनियर उसका अंडरवियर तक फाड़ देते। उसके बाद हॉस्टल के एक पेड़ पर सबको अपने कपड़े टांगने होते थे। उसकी भी एक प्रतियोगिता होती थी। सबको बारी-बारी से मुर्गा बनकर अपने कपड़े उस पेड़ पर फेंकने होते थे और जो सबसे ऊपर की डाली पर अपने कपड़े को फेंक पाता, वह विजेता होता था और उस दिन होली के बाद उसे सीनियर छात्रों की तरफ से पार्टी मिलती थी। उसके बाद सीनियर छात्र सारे कमरों को चेक करते थे और अगर कोई दरवाजा बंद करके कमरे में छुपा हुआ पाया जाता, तो वे दरवाजे को तोड़कर उसे बाहर निकाल लाते थे और फिर उसके चेहरे का वह हाल होता था कि कई दिनों तक वह अपने चेहरे का असली रंग नहीं देख पाता था। उसके दाँत तक रंग दिए जाते थे।

मैं होली नहीं खेलता था। अब मेरे लिए यह संकट था कि अपने आप को कैसे बचाऊँ। तब उस समय भी मैं अलमारी में ही छुपा था। मैंने अपने दरवाजे खुले रखे थे, ताकि जब सीनियर आएँ तो उन्हें शक न हो। सीनियर जब मेरे रूम में आए, तब एक बार पलंग के नीचे देखा और चले गए। इस तरह मैं अलमारी में छुपकर अपने आप को बचाने में कामयाब रहा था।

आज माला की अलमारी में बैठा मैं यही सोच रहा था कि तब तो मैं सीनियर छात्रों से बचने के लिए अलमारी में छुपा था और आज साले से बचने के लिए भी अलमारी ने ही साथ दिया है।

मैं लगभग बीस मिनट तक अलमारी में बैठा रहा। बाहर क्या हो रहा है, इसका मुझे अंदाजा भी नहीं था। मैं सोच रहा था कि कहीं धीरज को पता तो नहीं लग गया? अगर वह नहीं माना तब क्या होगा? अगर उसने अपने मम्मी-पापा को बता दिया तो वे क्या सोचेंगे? अगर कहीं मेरे पापा को पता लग गया, तो वे क्या करेंगे?

अभी मैं इन्हीं सब ख्यालों में खोया हुआ था कि कमरे में किसी के आने की आहट सुनाई दी। मैं दिल थामकर बैठ गया। धीरे से अलमारी का दरवाजा खुला। सामने माला मुस्करा रही थी। उसके हाथ में पानी का गिलास था, जो वह मेरे लिए लाई थी।

“धीरज कहाँ है?” मैंने पानी का गिलास लेते हुए पूछा।

“वह अपने दोस्त के घर वीडियोगेम खेलने गया है। अब वह दो घंटे बाद ही आएगा।” माला ने बताया।

“जरा चाय-नाश्ता भी करा दो। जब से तुम्हारे घर आया हूँ, तब से यह पहला पानी का गिलास नसीब हुआ है। मेहमानों के साथ कोई ऐसा करता है भला।” मैंने माला से मजाक में कहा।

माला हँस पड़ी और कहा— “बड़े आए मेहमान बनकर। तुम तो ‘चोर’ हो। मुझे सिर्फ

चाय बनानी आती है। नाश्ता खुद बना लो और मेरे लिए भी बनाना।"

मैं किचन में खड़ा मैगी बना रहा था और सोच रहा था कि शादी से पहले ही यह हाल है, शादी के बाद न जाने क्या होगा। पर इसमें भी एक तरह का आनंद था, जिसकी बात ही कुछ और थी।

मैं और माला किचन में ही बैठकर मैगी खा रहे थे। तभी माला को याद आया कि वह तो छत का दरवाजा बंद करना ही भूल गई है। वह दरवाजा बंद करने चली गई और मैं वहीं उसका इंतजार करने लगा।

'चोर, चोर...' की आवाज सुनकर मैं चौंक गया।

जब मैं सामान्य हुआ, तब याद आया कि मैंने धीरज को 'चोर-चोर' चिल्लाते हुए किचन से बाहर भागते देखा है। हुआ यूँ था कि बाहर के गेट की कुंडी धीरज बाहर से खोल लेता था और आज उसके दोस्त को कहीं जाना था, तो वह भी जल्दी ही आ गया। किचन में आवाज सुनकर वह सीधा वहीं चला गया। उसने सोचा था कि वह अपनी बहन को डरा देगा। पर किचन में मुझे देखकर वह चोर समझ बैठा और 'चोर-चोर' चिल्लाने लगा।

मैं और माला उसके पीछे दौड़े। माला उसे समझाने की कोशिश करने लगी।

"देख ये तेरे जीजाजी हैं। तुझसे मिलने आए हैं। तू ही तो कहता था न कि तुझे जीजू से मिलना है।" माला उसे समझाते हुए बोली। पर वह भी कम नहीं था, उसने पूछा—"क्या मम्मी-पापा जानते हैं कि जीजू आने वाले हैं?"

"नहीं, और बताना भी नहीं है।" माला ने कहा।

"पर यह तो झूठ होगा ना।" वह भी मानने वाला नहीं था।

मैं समझ गया कि यह ऐसे नहीं मानेगा। अब इसे साम-दाम-दंड-भेद की नीति सिखानी होगी।

मैंने कहा— "यह झूठ नहीं होगा। बस तुम मत बताना। माला बता देगी।" धीरज फिर भी नहीं माना और मेरी 'साम' यानी समझाने की नीति असफल रही। तब मैंने धीरज की पसंदीदा चॉकलेट का बाक्स दिया, जो मैं माला के कहने पर उसके लिए लाया था। यह 'दाम' की नीति थी, पर यह भी असफल रही। अब माला ने उससे कहा कि अगर वह नहीं माना, तो वह उससे बात नहीं करेगी। यह 'दंड' था। पर साला 'स्साला' अड़ियल निकला। वह इससे भी नहीं माना। अब आखिरी हथियार के प्रयोग का समय आ गया था।

अब मैंने उससे कहा— "ठीक है। तुम मम्मी-पापा को बता देना। फिर मैं भी उनको बता दूँगा कि तुम अपने दोस्त के घर जाकर क्या करते हो।" मैंने तो अँधेरे में तीर चलाया था, पर उसके चेहरे के बदलते हुए भाव देखकर मैं समझ गया कि तीर एकदम निशाने पर लगा है।

अब घबराने की बारी उसकी थी। वह बोला— “आप क्या बता दोगे? मैंने तो कुछ भी नहीं किया है।”

“ठीक है। मुझे सब पता है। जब मैं उन्हें बताऊँगा, तब तुम्हें भी पता चल जाएगा।” बस यह भेद काम आ गया। धीरज पूरी तरह बोतल में उतर गया था। अब वह कुछ भी करने को तैयार था। माला से मिलने का आखिरी पड़ाव भी पार हो चुका था। अब धीरज अपने कमरे में बैठा अपनी मनपसंद फिल्में देख रहा था और मेरी लाई हुई चॉकलेट खा रहा था।

मैं माला के साथ उसके कमरे में था। माला ने मुझसे पूछा— “तुम धीरज के बारे में ऐसा क्या जानते हो, जिससे वह डर गया?”

“कुछ भी नहीं।” मैंने हँसते हुए कहा— “यह हमारे चिरकुट गैंग का एक रूल है कि अगर धमकी आधी दी जाए, तो वह ज्यादा असर करती है।”

माला मेरी चाल समझ गई और बोली— “ठीक है। अब ज्यादा मत बनाओ, नहीं तो...”

“नहीं तो क्या?” मैंने पूछा।

“कुछ नहीं। धमकी आधी है, बाद में पता चलेगा।” और वह हँसते हुए किचन में चली गई।

मैं वहाँ पर चार दिनों तक रहा। माला के साथ बिताए हुए वे चार दिन मेरी जिंदगी के अभी तक के कुल 8,275 दिनों में सबसे बेहतरीन दिन थे।

# मैरिज इन चिरकुट्स स्टाइल

माला के घर से आने के बाद मैं दिल्ली चला गया। वहाँ पर अमित और सैंडी ने एक कंपनी शुरू की थी। इतने दिनों तक अलग-अलग कंपनियों में नौकरी की तलाश करते हुए अमित को जब यह समझ आ गया कि हर कंपनी टैलेंट से अधिक महत्व अँग्रेजी को देती है, तब उसने अपनी खुद की एक कंपनी शुरू करने के बारे में सोचा। उस कंपनी में उसने सैंडी को भी पार्टनर बना लिया था। कुछ समय के लिए उसे मेरी मदद की जरूरत थी, तो उसने मुझे कॉल किया। मैं भी खाली ही बैठा था, तो सोचा चलो वहीं चलते हैं। उसकी मदद भी हो जाएगी, मुझे भी कुछ अनुभव मिल जाएगा और दोस्तों से मिलना भी हो जाएगा।

अभी मुझे दिल्ली आए हुए कुछ दिन ही हुए थे कि एक दिन अचानक दोपहर को माला का फोन आया। वह बहुत परेशान लग रही थी। जब मैंने कारण पूछा तो उसने बताया— "अभी कुछ देर पहले तुम्हारी मम्मी का फोन आया था। जब मैंने फोन उठाया और उन्हें प्रणाम किया, तो उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। बस यह कहा कि वो मेरी मम्मी से बात करना चाहती हैं। मैंने मम्मी को फोन दे दिया। उसके बाद न जाने उन लोगों के बीच ऐसी क्या बात हुई कि मेरी मम्मी रोने लगीं और तुम्हारी मम्मी से ऐसा न करने को कहने लगीं। पर थोड़ी देर में ही फोन कट गया। उसके बाद भी मम्मी रो ही रही थीं। जब मैंने उनसे यह पूछा कि वो क्यों रो रही हैं, तो उन्होंने बताया कि तुम्हारी मम्मी ने हमारी शादी के लिए मना कर दिया है।"

सारी बात बताकर वह रोने लगी। मैंने उसे ढाढ़स बँधाया और उससे यह वादा किया कि चाहे कुछ भी हो जाए, हमारी शादी होकर रहेगी। मेरी यह बात सुनने के बाद वह कुछ शांत हुई।

मैंने तुरंत घर जाने का फैसला लिया। अमित मुझे छोड़ने स्टेशन पर आया था। उसने कहा कि अगर किसी भी तरह की मदद की जरूरत हो, तो वह हमेशा तैयार है। मैं कभी भी बेहिचक उससे कह सकता हूँ।

अगले दिन मैं घर पर था। घर का माहौल बिल्कुल बदल गया था। एक अजीब-सी खामोशी थी। मैंने मम्मी से पूछा— "क्या हुआ मम्मी, माला का फोन आया था कि आपने शादी से इनकार कर दिया है। ऐसा क्या हो गया?"

"बेटा, बहुत बड़ी गलती होने से बच गई।" मम्मी ने कहा— "वरना अनर्थ हो जाता। हमसे झूठ बोला गया था। धोखे में रखा गया था बेटा।"

"पर हुआ क्या, यह तो बताओ।" मैंने झुँझलाते हुए पूछा।

"अरे बेटा, वह लड़की हिंदू नहीं है। वो तो इन लोगों की लड़की भी नहीं है। वह मुसलमान घर में पैदा हुई है। हमारा तो धर्म ही भ्रष्ट हो जाता। बुआ तो कह रही थीं कि अच्छा हुआ अभी पता चल गया, वरना कहीं अगर यह शादी हो गई होती, तब तो हम इस समाज में मुँह दिखाने के काबिल नहीं रह जाते। माला या जो भी नाम हो उसका, उसके बाप ने तो कुछ बताया ही नहीं। सोचा होगा कि हम शरीफ लोग हैं, तो हमें कुछ पता नहीं चलेगा। वो तो अच्छा हुआ कि तुम्हारे पापा के ऑफिस में कोई उन लोगों को जानता है और उसी ने यह बात बता दी।" मम्मी ने सबकुछ बता दिया।

"और आप लोगों ने उस बात पर भरोसा करके शादी तोड़ दी?" मैंने पूछा

"नहीं बेटा, ऐसा नहीं है। अगले ही दिन मैंने उसकी माँ से बात की और सच्चाई पूछी। तब उन्होंने भी माना कि यह बात सच है।"

"तो क्या हो गया मम्मी, क्या फर्क पड़ता है कि वह किसके घर में पैदा हुई है? आपने ही तो कहा था कि वह अच्छी लड़की है।" मैंने मम्मी को मनाने की कोशिश की।

"नहीं बेटा। वो धोखेबाज लोग हैं। तुम उन्हें नहीं जानते हो।" मम्मी ने कहा।

"मैं सबकुछ जानता हूँ मम्मी। माला ने बहुत पहले ही मुझे सब बता दिया था।" मैंने भी सारी बात बता दी।

यह सुनकर तो मम्मी का गुस्सा और बढ़ गया। उन्होंने मुझसे कहा— "यह सबकुछ जानने के बाद भी तू उससे शादी कर रहा था! तूने हमें कुछ बताया क्यों नहीं?"

"इसीलिए तो नहीं बताया, वरना जो आज हो रहा है, वह तब हो गया होता। माला अच्छी लड़की है मम्मी।" मैंने उन्हें मनाने की अपनी कोशिश जारी रखी।

"चुप कर! तुझे पता है लोग क्या कहेंगे? समाज हमें निकाल देगा।" मम्मी ने अब जाकर सच्ची बात बताई। असली समस्या यह नहीं थी कि माला मुसलमान है, बल्कि समस्या यह थी कि 'समाज' क्या कहेगा।

यह सुनकर मुझे भी गुस्सा आ गया। मैंने जोर से कहा— "समाज लोगों के लिए होता है मम्मी, लोग समाज के लिए नहीं होते। जब कुछ अच्छा करना होता है, तब यह समाज कहाँ होता है! यह समाज उस समय कहाँ था, जब माला अकेली थी? आज जब सब ठीक

है, तो उसे बिगाड़ने के लिए समाज आ गया है।"

"ये कैसी बातें कर रहा है बेटा! लगता है उस लड़की ने तुझ पर कोई जादू कर दिया है। मैं कल ही तुझे पंडित जी के पास ले चलती हूँ।" मेरी बातें सुनकर मम्मी डरकर बोलीं।

"मुझे कुछ नहीं हुआ है। मैं बिल्कुल ठीक हूँ। और एक बात बता दूँ, मैं सिर्फ माला से ही शादी करूँगा।" यह कहकर मैं अपने कमरे में चला गया।

शाम को जब पापा घर आए, तब मम्मी ने उन्हें सारी बात बताई। पापा का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच गया। उन्होंने मुझे बुलाया और कहा— "मेरी बात ध्यान से सुनो। अगर तुम्हें इस घर में रहना है तो एक बात याद रखना, यहाँ पर वही होगा जो मैं चाहूँगा। तुम्हारी शादी उसी लड़की से होगी, जिससे मैं चाहूँगा। मैंने तुम्हारे लिए दूसरी लड़की ढूँढ़ ली है। कल उसके पापा यहाँ आ रहे हैं और तभी शादी की तारीख भी तय हो जाएगी। अगर तुम्हें मेरी बात पसंद नहीं है, तो तुम्हारे पास कल सुबह तक का समय है, तुम यह घर छोड़कर जा सकते हो। हम समझ लेंगे कि हमारा एक ही बेटा था और तुम भी हमारा पिंडदान कर देना और समझ लेना कि हम मर चुके हैं।"

उनकी बात सुनकर मम्मी रोने लगीं और पापा को समझाने की कोशिश करने लगीं। मैं चुपचाप अपने कमरे में आ गया।

मैं यह सोच रहा था कि अब क्या किया जाए। पापा की बातों से यह साफ जाहिर था कि वो मेरी शादी माला से नहीं होने देंगे और मैं माला के बगैर नहीं रह सकता था। मुझे तुरंत ही कोई प्लान बनाना था। अब मैं जितनी देर करता, माला से मिलना मेरे लिए उतना ही मुश्किल होता जाता।

बहुत सोचने के बाद मुझे सिर्फ एक ही रास्ता दिखा। मैंने उसी रास्ते पर चलने का फैसला ले लिया। बेवकूफी और समझदारी में अंतर समाप्त हो चुका था।

अगले दिन तड़के ही, जब सब लोग सो रहे थे, मैं अपना सामान लेकर घर से निकल गया और रेलवे स्टेशन की तरफ चल दिया। मैंने सब भाग्य के भरोसे छोड़ दिया और ट्रेन में बैठ गया।

थोड़ी ही देर में ट्रेन सैजनवाँ स्टेशन पर पहुँच गई। मैं दरवाजे से बाहर देखने लगा। छोटा स्टेशन होने की वजह से वहाँ पर भीड़ नहीं थी। कुछएक चायवाले अपनी-अपनी केतलियाँ लेकर इधर से उधर दौड़ रहे थे। मैंने स्टेशन पर खड़े लोगों के बीच एक नजर डाली। सबकुछ सामान्य था। जीवन के सफर में हम कितने अकेले होते हैं न! यहाँ मेरी जिंदगी खत्म हो रही थी और किसी को कोई फर्क ही नहीं पड़ रहा था!

यहाँ पर ट्रेन बस दो मिनट ही रुकती थी और दो मिनट पूरे हो चुके थे। गार्ड ने हरी झंडी दिखाई और ट्रेन ने सीटी दी। मैंने एक गहरी साँस ली और एक बार फिर प्लेटफॉर्म पर देखा।

अब धीरे-धीरे ट्रेन सरकने लगी थी। मेरी निगाहें अब भी प्लेटफॉर्म पर ही थीं कि अचानक मुझे सीढ़ियों से उतरती हुई माला दिखाई दी। उसके हाथ में एक छोटा-सा बैग था। वह तेजी से ट्रेन की तरफ दौड़ रही थी। पर अब ट्रेन भी रफ्तार पकड़ने लगी थी। मैंने एक बार फिर उसे देखा। वह पक्का माला ही थी। शायद उसने भी मुझे देख लिया था। उसने अपना हाथ उठाकर कुछ कहने की कोशिश की।

मैं दरवाजे से अंदर चला गया और अपना बैग लेकर बाहर आ गया। मैं माला के बगैर तो जा ही नहीं सकता था। मैंने पिछली रात ही माला को बता दिया था कि अगर उसे मेरे साथ चलना हो, तो आज सही समय पर स्टेशन पर पहुँच जाए। मैं उसे फोर्स तो नहीं कर सकता था, पर मैं जानता था कि वह जरूर आएगी।

ट्रेन से उतरकर मैं उसकी तरफ भागा। वह दौड़कर मेरे गले लग गई। उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे। उसने मुझे जोर से भींचते हुए कहा— "मुझे आने देर हो रही थी, तो यह लग रहा था कि मैं तुम से नहीं मिल पाऊँगी।" वह अब भी रो रही थी।

मैंने उसके गालों पर से आँसू की बूँदों को पोंछते हुए कहा— "अरे पगली, मैं तुम्हें साथ लिए बगैर थोड़े ही जाता! जब तक तुम मेरा साथ नहीं छोड़ोगी, हम अलग नहीं होने वाले। पर अभी ट्रेन पकड़ लें?" यह कहकर मैं उसका हाथ पकड़कर तेजी से ट्रेन की तरफ भागने लगा। ट्रेन भी रफ्तार पकड़ चुकी थी। बहुत कोशिशों के बाद भी हम किसी डिब्बे में नहीं चढ़ सके। हमारे सामने से अब गार्ड का आखिरी डिब्बा भी जा रहा था। अब हम साथ तो थे, पर ट्रेन जा रही थी। अब उसे नहीं पकड़ा जा सकता था।

तभी न जाने कैसे, ट्रेन की रफ्तार कम होने लगी। गार्ड ने हमें ट्रेन में चढ़ने का इशारा किया। शायद उसने हमें ट्रेन के पीछे भागते हुए देखकर यह समझ लिया था कि हमारी गाड़ी छूट गई है और तब उसने रफ्तार कम करवा दी। अभी कुछ देर पहले मैं यह सोच रहा था कि किसी भी इंसान को किसी दूसरे इंसान की जिंदगी से कोई फर्क नहीं पड़ता है और अभी थोड़ी देर में ही मैं गलत साबित हो गया। जब मुझे उस गार्ड की मदद की जरूरत थी, तब उसने मदद की। हम भागकर ट्रेन में चढ़ गए। मैंने इशारों में ही गार्ड को धन्यवाद कहा।

मैंने फर्स्ट एसी में सीटें बुक करा रखी थीं। हम अपने केबिन में गए और दरवाजा बंद कर लिया। अब जाकर कहीं दिल को सुकून मिला था कि हम साथ हैं। मैंने माला से पूछा कि तुम्हें देर क्यों हो गई और तुम्हारा फोन क्यों नहीं लग रहा था? तब उसने बताया— "कल रात तुमसे बात करने के बाद जब मैं फोन बगल में रखकर अपने फैसले के बारे सोच रही थी, तभी अचानक मेरे हाथ से लगकर फोन नीचे गिर गया और टूट गया। आज सुबह मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि मैं घर से बाहर कैसे निकलूँ। अंत में मैंने यह बहाना बनाया कि मैं अपनी सहेली के घर पढ़ाई करने जा रही हूँ और तब जाकर मैं आ सकी। इस समय मैं अपना कुछ सामान तो नहीं ला सकी, बस अपने सर्टिफिकेट ही ला पाई हूँ।"

“तुम ऐसी पहली लड़की होगी, जो घर से किताबें लेकर भागी है।” मैंने मजाक किया। मेरी बात सुनकर वह भी हँसने लगी।

हम एक-दूसरे का हाथ पकड़कर बैठे थे। माला ने मुझसे पूछा—“अब क्या होगा?” उसकी आवाज में डर साफ झलक रहा था। मैंने उसे सीने से लगाते हुए कहा—“कुछ नहीं। मैं हूँ ना। मैं सब संभाल लूंगा।”

मैं जानता था कि जब माला के घर वालों को यह पता लगेगा कि वह अपनी सहेली के घर नहीं गई है, तब वे सबसे पहले मेरे घर पर ही फोन करेंगे और उसके बाद मेरे पास। मैं फोन का इंतजार कर रहा था।

सबसे पहला फोन माला के घर से आया। मैंने माला को फोन दे दिया और कहा कि वह सारी सच्चाई बता दे। उसने फोन पर अपनी मम्मी से बात की और उन्हें सबकुछ बता दिया। यह सुनकर कि वह मेरे साथ है, उसकी मम्मी बहुत खुश हुईं। उन्होंने उसे आशीर्वाद दिया और फोन रख दिया।

थोड़ी देर के बाद मेरे पापा का फोन आया। मैंने फोन उठाया तो उधर से मम्मी की आवाज आई— “यह क्या किया बेटा तूने! तू हमें छोड़कर चला गया। तेरे पापा ने तो वह सब गुस्से में कहा था।” वे रो रही थीं। मैंने उनसे कहा— “मैं क्या करता मम्मी! आप ही कहती थीं ना कि शादी कोई बच्चों का खेल नहीं होता है। फिर आपने इसे खेल कैसे समझ लिया? पहले जो लड़की सबको पसंद थी, अचानक वह खराब हो गई। आपने कहा कि इससे शादी करो, मैं कुछ नहीं बोला। पर अब आप कह रही हैं कि इससे शादी मत करो। यह कैसे हो सकता है! मैं उसे धोखा नहीं दे सकता। अगर मेरे भाग्य में यही लिखा है, तो यही सही। मैं ठीक हूँ। आप मेरी चिंता मत करें।”

“मतलब तू हमें छोड़कर जा रहा है?” उन्होंने रोते हुए कहा।

“नहीं मम्मी, मैं आपको कैसे छोड़ सकता हूँ। पर मैं माला को भी नहीं छोड़ सकता। आप ऐसा समझो, जैसे मैं कॉलेज में रह रहा हूँ।” मैंने उन्हें समझाने की कोशिश की।

वे कुछ नहीं बोलीं। बस रो रही थीं। तभी पापा की आवाज आई— “ठीक है, तुम्हारा यही फैसला है, तो यही ठीक है।” शायद उन्होंने मम्मी से फोन ले लिया था। इसके बाद फोन कट गया।

मैं और माला एक नई शुरुआत करने निकल पड़े थे।

जब हम लोग नई दिल्ली स्टेशन पर उतरे, मेरे तीनों दोस्त हमारा इंतजार कर रहे थे। मैंने पहले ही उनको सारी बात बता दी थी। ऐडी मुझसे बोला— “तुम दोनों के रहने का सारा बंदोबस्त कर दिया है। हम तेरे साथ हैं। तू चिंता मत कर।”

ऐडी ने हमारे लिए एक फ्लैट किराए पर ले लिया था। फ्लैट काफी बड़ा और अच्छी

सोसायटी में था। उसने मुझसे पूछा— “यह ठीक तो है ना?”

मैंने कहा— “अरे यार, इसका किराया तो बहुत होगा... कहीं छोटी जगह पर ले लेता।”

तब वह मुझे समझाते हुए बोला— “छोटी जगह पर सब एक-दूसरे के बारे में खबर रखते हैं। यह हाई सोसायटी है। यहाँ किसी को किसी से कोई मतलब नहीं है। तुम दोनों आराम से रह सकते हो। और किराए की चिंता मत करो, हम सब हैं ना। अब तुम दोनों आराम करो। थक गए होगे। बहुत जल्दी हम तुम्हारी शादी करवा देंगे। अब हम चलते हैं। कुछ काम हो तो फोन करना।” यह कहकर वो तीनों चले गए और हम दोनों भी अपने नए बसेरे में बसने की कोशिश करने लगे।

अगले दिन ऐडी और अमित वकील के पास गए। वे हमारी शादी को रजिस्टर्ड करवाने का procedure मालूम करना चाहते थे।

वापस आकर उन्होंने जो बताया, उसने हमें फिर से चिंता में डाल दिया। शादी को रजिस्टर्ड करवाने के लिए age proof के साथ हमारी शादी की कुछ फोटो भी चाहिए थीं।

“अब हम फोटो कहाँ से लाऐंगे?” माला ने चिंतित होकर कहा। इसका जवाब तो मैं भी ढूँढ़ने की कोशिश कर रहा था। ऐडी और सैंडी भी वहीं बैठे थे। अमित बाहर खाना लाने गया हुआ था। किसी को कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था। जब तक हम शादी रजिस्टर्ड नहीं करवा लेते, तब तक हमें अलग किए जाने का खतरा बना रहता। पर शादी रजिस्टर्ड करवाने के लिए पहले शादी का होना जरूरी था, जो हुई नहीं थी।

हम कुछ उपाय सोच ही रहे थे कि दरवाजे पर दस्तक हुई।

“अमित होगा, मैं खोलता हूँ।” यह कहकर सैंडी ने दरवाजा खोल दिया।

“प्रॉब्लम सॉल्व।” अमित ने अंदर घुसते ही चहकते हुए कहा।

हमें कुछ समझ नहीं आया, इसलिए हम उसका मुँह ताकने लगे।

“देखो समझाता हूँ। अगर हम तुम दोनों की शादी रजिस्टर्ड करवा दें, तब कोई भी तुम्हें अलग नहीं कर सकता है...।” अमित ने आराम से बैठते हुए कहा। अभी वह अपनी बात को पूरा भी नहीं कर पाया था कि माला से उसे टोका— “...पर भैया उसके लिए पहले शादी होना जरूरी है न।”

“नहीं भाभी, शादी होना नहीं, उसकी फोटो होना जरूरी है।” उसने अपनी बात पूरी कर दी, पर अब भी उसकी बात हमारी समझ में नहीं आई थी।

हम चुपचाप उसे ही देख रहे थे और यह समझने की कोशिश कर रहे थे कि वो क्या कहना चाहता है।

“नहीं समझे?” अमित ने हमारे फिल इन द ब्लैंक्स वाले फेसेस देखकर पूछा।

मैंने ना में सिर हिला दिया।

तब उसने खाने के पैकेट से एक कागज निकाला और मेरी तरफ बढ़ा दिया। वह किसी होटल का मेन्यु कार्ड था और उस पर मटर-पनीर की सब्जी की फोटो बनी हुई थी। मैं कुछ पूछता, तब तक उसने पैकेट से सच में मटर-पनीर की सब्जी निकाली और टेबल पर रख दी। फिर मेरे हाथ से वह फोटो लेकर उस सब्जी की बगल में रखकर खड़ा हो गया और बोला— "इस फोटो और इस सब्जी को देखो। क्या दोनों एक जैसे हैं?"

अब ये तो जाहिर-सी बात है कि होटल में मिलने वाला खाना कभी भी मेन्यु की फोटो जैसा नहीं होता है।

"नहीं है ना?" उसने फिर पूछा।

"नहीं है। पर तू कहना क्या चाहता है? मुद्दे की बात कर।" ऐडी ने उसे डाँटते हुए पूछा।

"बस यही मेरा प्लान है। हमें शादी की फोटो दिखानी है, ना कि असली शादी। तुम दोनों मेरे साथ चलो। कुछ शॉपिंग करनी है।" उसने सैंडी और ऐडी से कहा। फिर वह मुझसे बोला— "तुम दोनों खाना खाओ, हम अभी आते हैं।"

वे तीनों बाहर चले गए।

लगभग चार घंटे बाद तीनों कुछ बड़े-बड़े पैकेट लेकर वापस आए।

एक पैकेट अमित ने माला को देते हुए कहा— "भाभी, आप दूसरे कमरे में जाकर ये कपड़े पहन लो और तैयार हो जाओ। आज हम आप दोनों की शादी करा देते हैं।" माला पहले तो उसे देखती रही, पर बाद में मेरे कहने पर पैकेट लेकर अंदर चली गई।

मैंने माला को तो भेज दिया था, पर मुझे अब भी कुछ समझ नहीं आया था। मैं चुपचाप सबकुछ देख रहा था कि वह मुझसे बोला— "तू क्या इन्हीं कपड़ों में शादी करेगा! वह पैकेट उठा और फटाफट रेडी हो जा।" उसने जमीन पर रखे एक पैकेट की तरफ इशारा करते हुए कहा।

मैंने वह पैकेट उठाया और बाथरूम में चला गया। उस पैकेट में दूल्हे की शेरवानी, जूते और पगड़ी थी। उसमें एक पर्ची भी थी, जिससे मुझे यह मालूम हो गया कि सारे कपड़े किराए के थे।

जब मैं वह सब पहनकर बाहर आया, तब तक कमरे का माहौल ही बदल चुका था। हर तरफ सजावट दिख रही थी। एक दीवार के सामने दो सजावटी कुर्सियाँ रखी हुई थीं और उनके पीछे लाल रंग का परदा लटक रहा था। उस परदे पर फूलों की सजावट थी। दूसरी तरफ लोहे का हवन कुंड रखा था। ऐडी हाथ में दो मालाएँ लेकर खड़ा था और सैंडी कैमरा लेकर तैयार था। ऐसा लग रहा था कि किसी फिल्म की शूटिंग है और शादी का सेट बना

हुआ है।

"तो ये है तेरा प्लान। अच्छा है।" मैंने अमित की पीठ ठोंकते हुए कहा।

"चल, अब इधर आकर खड़ा हो जा और भाभीजी को भी बुला ले। आज तुम्हारी शादी है... इन चिरकुट्स स्टाइल।" अमित ने मुझसे कहा। वह पूरी तरह डायरेक्टर लग रहा था।

तभी माला भी दूसरे कमरे से बाहर निकली। वह बिल्कुल सजी-धजी दुल्हन लग रही थी। एक बार तो मैं उसे देखता ही रह गया। किराए के कपड़ों में भी वह बहुत सुंदर दिख रही थी। मैं यह सोचने लगा कि अगर वह सचमुच दुल्हन बनी होती, तब कितनी खूबसूरत लगती। पर शायद हमारी किस्मत में ऐसा होना नहीं लिखा था।

वैसे भी हमारे सीनियर्स कहा करते थे कि 'इंजीनियर्स अपनी किस्मत खुद बनाते हैं'। आज मैं अपनी किस्मत लिख रहा था।

"अरे आप रो क्यों रही हैं?" ऐडी ने माला को रोते हुए देखकर पूछा।

माला की आँखों से लगातार आँसू बह रहे थे। मैं उसके पास गया और पूछा—"क्या हुआ?"

"काश! आज हमारे पैरेंट्स यहाँ पर होते, हमारे भाई-बहन होते। सब साथ रहते तो कितना अच्छा होता न। कहीं हमने गलती तो नहीं कर दी?" माला ने धीरे से कहा।

इसका जवाब मेरे पास नहीं था।

मैंने माला को बैठाया और उसे चुप कराने की कोशिश करने लगा। कुछ देर बाद माला भी सँभल गई। अब वह भी चुप हो चुकी थी और मुँह धोने चली गई थी।

उसे बाथरूम से बाहर आते हुए देखकर मैंने जोर से कहा— "चलो भाई, सब तैयार हैं। चल अमित, बता आगे क्या करना है?"

"मुझे कुछ नहीं मालूम।" अमित ने गुस्से में कहा। वह जाकर एक कोने में बैठ गया।

"अब तू क्यों मुँह फुला रहा है?" सैंडी ने अमित से पूछा।

"यार भाभी तो ऐसे रो रही हैं, जैसे हम उनके कुछ हैं ही नहीं। वे तो हमें पराया समझती हैं।" अमित ने बैठे-बैठे ही कहा।

उसकी बात सुनकर माला, अमित के पास जाकर बोली— "ऐसा नहीं है। आप लोगों ने जो कुछ किया है, वह तो शायद हमारे अपने भी नहीं करते। आज से आप मेरे भाई हैं। बस अब खड़े हो जाइए।" बस इतना सुनना था कि वह मुस्कराकर उठ खड़ा हुआ। माला ने अमित को एक मिनट में मना लिया था।

अमित हँसकर बोला— "फिर मैं आप को दीदी कहूँगा और तुझे..."

"...नहीं, तू मेरा दोस्त ही रहेगा। मुझे रिश्तेदार नहीं दोस्त चाहिए।" इससे पहले कि वह

कुछ और बोलता, मैंने उसे चुप कराकर उसकी बात पूरी की

“नौटंकी साला।” सैंडी ने अमित के पिछवाड़े पर एक लात मारते हुए कहा।

सब हँस पड़े।

अब अमित ने फिर से हमारी शादी को डायरेक्ट करना शुरू किया। पहले उसने हमारी कुछ फोटोज उन सजावटी कुर्सियाँ के सामने एक-दूसरे को माला पहनाकर खिंचवाईं। वह हमें अलग-अलग तरह से खड़ा करता और सैंडी लगातार फोटो खींचता रहता।

“चलो जयमाला की रस्म पूरी हुई। अब शादी की फॉर्मेलिटीज पूरी कर लें।” अमित ने सीन चेंज करते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर ऐडी ने उस लोहे के हवन कुंड में कुछ पुराने अखबार डाले और उनमें आग लगा दी।

अमित ने अपनी जेब से निकालकर माला को सिंदूर और मंगलसूत्र दे दिया और कहा — “चलिए, इसके पहले कि आग बुझ जाए, आप लोगों की शादी करवा देता हूँ।”

फिर उस कागज की आग के सामने मैंने सिंदूर लगाते हुए और मंगलसूत्र पहनाते हुए फोटो खिंचवाई।

सबकुछ होने के बाद अमित ने पंडित और पादरी की तरह डायलॉग मारे—

“और इसी के साथ विवाह संपन्न हुआ। आज से आप दोनों पति-पत्नी हुए। नाउ ग्रूम कैन किस द ब्राइड।”

एक बार फिर से हँसी का दौर चल पड़ा।

शादी की फोटोज तैयार थीं। अब हमें तीन दिन तक और इंतजार करना था, जब तक माला अठारह साल की नहीं हो जाती। इसके बाद शादी रजिस्टर्ड करवाना मुश्किल काम नहीं था। एक सप्ताह के भीतर हम officially पति-पत्नी थे।

जिस दिन हमारा मैरिज सर्टिफिकेट मिला, मैंने घर पर एक मैसेज किया— ‘मुझे माफ कर दीजिएगा। मैंने आपकी बात नहीं मानी। आज मैंने माला से शादी कर ली है। हमें आशीर्वाद दें।’

अगले दिन मेरे दोस्तों ने हमारी शादी की खुशी में एक पार्टी अरेंज की थी। हम सबमें से किसी के पास भी ज्यादा पैसे तो थे नहीं। जिसके पास जितना था वह हमें सेटल करने में खर्च हो गया था। फिर भी वे एक अच्छा-सा केक और कुछ खाने का सामान लेकर आए थे। हम सब जब खाने का मजा ले रहे थे, तभी मेरे पापा का फोन आया। कमरे में सन्नाटा छा गया। मैंने फोन रिसीव किया और बोला— “हैलो...”

“मुझे तुम्हारे दोस्तों से बात करनी है।” पापा ने कहा।

“मेरा कोई दोस्त यहाँ नहीं हैं।” मैंने फौरन जवाब दिया।

“यह नहीं हो सकता। मैं जानता हूँ कि तुम्हारे दोस्तों ने ही तुम्हारा दिमाग खराब किया है, जिसकी वजह से तुमने हमें छोड़कर उस लड़की से शादी कर ली।”

मैंने फोन स्पीकर पर कर दिया और कहा— “नहीं पापा, मैंने किसी के कहने पर कुछ भी नहीं किया है और न ही मैंने किसी को छोड़ा है। आप यह क्यों भूल जाते हैं कि जिस लड़की के बारे में आप बात कर रहे हैं, उसे आपने ही मेरे लिया चुना था।”

“मुझे तुमसे कोई बहस नहीं करनी है। मैं तो बस तुम्हारे उस दोस्त से बात करना चाहता हूँ, जिसने हमसे हमारा बेटा छीन लिया।”

मैं कुछ कहने ही वाला था कि अमित बोल पड़ा— “नमस्ते अंकल। मैं अमित बोल रहा हूँ। मैं आपको यह बता दूँ कि हमने इससे कुछ भी नहीं कहा...”

“...तब इसमें इतनी हिम्मत कैसे आ गई कि यह ऐसा कदम उठा सके? जरूर तुमने ही इसकी मदद की होगी।” पापा ने अमित की बात बीच में ही काट दी और मैंने जो कुछ भी किया था, उसका जिम्मेदार अमित को बना दिया।

मेरा मन हुआ कि मैं फोन रख दूँ, पर अमित ने इशारे से मना कर दिया। वह शायद इस कोशिश में था कि सबकुछ ठीक हो जाए।

उसने पापा से कहा— “देखिए अंकल, बबलू ने घर छोड़ने से पहले हमें कुछ भी नहीं बताया था। इसने हमें तब फोन किया जब यह ट्रेन में था। उस समय हम अगर इसकी मदद नहीं करते, तो यह न जाने क्या कर बैठता। शायद यह हमारे पास भी नहीं आया होता और तब आप और हम, दोनों इसे खो देते। हमने इसकी मदद इसलिए की ताकि यह कोई गलत कदम न उठा ले।” अमित ने बहुत ही जिम्मेदारी से अपनी बात कह दी।

“ठीक है, तब उससे कह देना कि अब वह हमारे लिए मर चुका है।” इतना कहकर पापा ने फोन रख दिया।

पापा ने पार्टी खत्म करवा दी थी। उस पूरी रात माला रोती रही और मैं उसे समझाने की कोशिश करता रहा।

उसके दस दिनों के बाद मेरे भाई का फोन आया। उसने बताया कि मम्मी की तबियत बहुत खराब है। वे मुझे ही याद कर रही हैं। मैं जल्दी से घर आ जाऊँ। गाँव से दादाजी भी आए हैं। पापा मान गए हैं। उन्होंने ही उसे फोन करने को कहा है।

यह सुनते ही मैंने तुरंत टिकट बुक किए और अगले दिन अमित को फोन किया।

घर...र्घर...र्घर्र

फोन की घरघराहट से मेरा ध्यान टूटा। मैंने टेबल से फोन उठाया, जो साइलेंट मोड में होने के कारण घरघरा रहा था। सैंडी का फोन था।

“हैलो।” मैंने कहा।

“बधाई हो दोस्त। अमित ने बताया कि तू घर जा रहा है! साले हमसे मिले बिना चला जाएगा?” वह बनावटी गुस्सा कर रहा था।

“यार मम्मी की तबियत ठीक नहीं है...”

“...पता है। मैं तो मजाक कर रहा था। हम दोनों आ रहे हैं। मिले बिना तुझे कैसे जाने देंगे। चल, अब भाभीजी को फोन दे।”

“वह तो बाहर गई है। आती है, तब बात करवाता हूँ।” मैंने सैंडी को बताया।

“कोई नहीं। शाम को मिलते हैं। बाय।” उसने फोन रख दिया।

फोन रखने के बाद मुझे ख्याल आया कि माला को बाहर गए हुए बहुत देर हो चुकी है। इतनी देर के लिए तो वह कभी भी बाहर नहीं जाती है— मैंने सोचा। अब मैं डर गया था। मैं फौरन बाहर निकल गया। कुछ दुकानों पर पूछा, जहाँ मेरे अनुमान से माला गई होगी। किसी को कुछ भी नहीं पता था। मैंने अमित को फोन किया।

“यार माला नहीं मिल रही है।” जैसे ही अमित ने फोन उठाया, मैं बोल पड़ा।

“क्या!!” उसकी समझ में ही नहीं आया कि मैं यह क्या कह रहा हूँ।

“.....” मैं कुछ नहीं बोल सका।

“मैं अभी पहुँचता हूँ।” अमित ने फोन रख दिया। मैं पत्थर की तरह खड़ा था। अब कुछ सूझ ही नहीं रहा था। मैं उस जगह पर जम-सा गया था।

“मुझे देर हो गई क्या?” माला ने मेरे कंधे पर हाथ रखकर पूछा। वह मेरे पीछे खड़ी थी।

जैसे ही मैंने पीछे मुड़कर माला को देखा, मेरे आँसू निकल पड़े। मैंने सड़क पर ही उसे गले लगा लिया।

“कहाँ चली गई थी?” जब साँसें वापस आईं, तो मैंने पूछा।

“मम्मी-पापा के लिए गिफ्ट लेने गई थी। वापस आते समय किसी गलत गली में मुड़ गई और मुझे रास्ता ही नहीं मिल रहा था। कुछ देर इधर-उधर भटकने के बाद सही रास्ता मिला। इसलिए थोड़ी देर हो गई।” माला ने पूरी बात बताई।

“यार, ऐसे ही बुला लेता। झूठ बोलने की क्या जरूरत थी?” अमित ने हम दोनों को देखकर ऑटो से उतरते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर माला मेरी तरफ देखने लगी।

“अब मैं यहीं रुक जाता हूँ।” उसने सारी बात सुनने के बाद कहा और हमारे कमरे की तरफ चल पड़ा।

शाम को मैं और माला ट्रेन में बैठे थे। ऐडी और सैंडी भी आ चुके थे। अमित हमेशा की तरह मसखरी कर रहा था। वह खिड़की के बाहर खड़ा होकर मुझे समझा रहा था—"don't put your hand outside train. After reaching home send a letter. Don't take anything from strangers and don't talk with them also. Next to door toilet is available, use as much as you want. Don't hesitate. And one more thing..."

"ओ मेरे चिरकुटचंद, छोड़ दे उसे...।" सैंडी ने उसे टोका। "बेचारा वैसे ही परेशान होगा और तू और नौटंकी कर रहा है।"

मैंने सैंडी से कहा— "कहने दे यार। कान सूख गए थे इसकी ये बकवास सुनने के लिए। मेरी वजह से तुम सब भी बहुत परेशान हो गए थे।"

"हाँ यार, तूने तो बहुत तंग किया है हमें। हम तेरे दोस्त तो हैं नहीं।" यह ऐडी की आवाज थी, जो हाथ में चिप्स और कोल्ड ड्रिंक्स लेकर मेरे पास आया था। उसने वह सबकुछ माला को देते हुए कहा— "ये आप रख लो भाभी। अब इससे हमारा कोई रिश्ता तो है नहीं। यह बस हमें तंग करता है।"

मैं समझ गया कि वह भी मुझे ताना मार रहा था।

सैंडी मेरी तरफ मुड़कर बोला— "देख आराम से घर जा। जो हो गया सो हो गया। और यह परेशान करने वाली बात अपने मन से निकाल दे। अब जब पापा मान गए हैं, तो सब ठीक हो जाएगा। कोई गलत काम थोड़े ही किया है। शादी की है और वह भी उससे जिसे तेरे मम्मी-पापा ने सिलेक्ट किया था।"

"Happy journey!!!" तीनों एक साथ चिल्लाए। ट्रेन चल पड़ी थी।

मैं माला के साथ वापस अपने घर जा रहा था, पर मन में एक डर था कि न जाने वहाँ क्या होगा।

# जनरेशन गैप

## कुछ महीने बाद

"चीयर्स टु चिरकुट्स।" चार लिम्का से गिलास एक साथ टकराए।

हम बीयर का इस्तेमाल सिर्फ गम के माहौल में ही करते थे। पर आज तो बस खुशियाँ ही थीं। चिरकुट्स के सारे सपने पूरे हो गए थे।

सैंडी को फिर से प्यार हो गया था।

ऐडी अमेरिका जा रहा था। गूगल का इन्विटेशन कार्ड उसके हाथ में था।

अमित और सैंडी की कंपनी भी ग्रो कर रही थी। अभी हाल ही में उन्हें एक बहुत बड़ा प्रोजेक्ट मिला था। अभी कुछ ही दिनों में वो दोनों हमारे ही कॉलेज में अपनी कंपनी के फ्यूचर एंप्लाइज सिलेक्ट करने जाने वाले थे। अमित ने निर्णय लिया था कि वह ऐसे स्टूडेंट्स को लेगा, जिन्हें अँग्रेजी की नॉलेज हो न हो, पर इंजीनियरिंग का ज्ञान जरूर हो।

मेरा जॉइनिंग लेटर आ गया था। मैं भी बेंगलुरु जा रहा था। ऐडी के अमेरिका जाने से पहले मैं एक बार उससे मिलना चाहता था, इसलिए मैं घर से पहले दिल्ली आया। कल ऐडी के जाने के बाद मेरी फ्लाइट थी।

"चलो भाई, सब अपना-अपना गिलास जल्दी-से खाली करो।" सैंडी ने हँसते हुए कहा।

"हाँ यार, बहुत दिन हो गए हैं साथ पिए हुए।" ऐडी ने पुराने दिन याद किए।

अमित को खामोश बैठा देखकर मैंने पूछा— "तू आज इतना चुप क्यों बैठा है, क्या हुआ?"

"कुछ नहीं यार। मुझे अभी भी तेरी कहानी समझ नहीं आई। तू एक बार detail में बताएगा कि तेरे घर जाने के बाद क्या हुआ?" अमित ने मुझसे पूछा।

मैंने अपना गिलास खाली किया। एक बार गहरी साँस ली और कहना शुरू किया— “जब मैं माला के साथ घर से आया था, तब भी मम्मी को उम्मीद थी कि सबकुछ ठीक हो जाएगा। पर मेरी शादी के बाद जब पापा ने मुझसे बात की और कहा कि मैं उनके लिए मर चुका हूँ, तब मम्मी को बहुत बड़ा सदमा लगा। यह झटका उनका दिल बर्दाश्त नहीं कर सका। धीरे-धीरे उनकी हालत बिगड़ने लगी थी। जब वे बहुत सीरियस कंडीशन में पहुँच गईं, तब मेरे दादाजी को भी गाँव से बुला लिया गया। मेरे दादाजी बहुत बूढ़े होने के कारण गाँव में ही रहते हैं, इसलिए उन्हें यह नहीं पता था कि मैंने क्या किया है। घर आने पर जब उन्हें सारी बात पता लगी, तब उन्होंने मेरे पापा से बात की और मेरे भाई को मुझे फोन करने के लिए कहा।”

“यह तो तू हमें पहले ही बता चुका है। जब तू घर पहुँचा, तब क्या हुआ?” अमित ने पूछा।

“मेरे घर पहुँचने से पहले ही सबकुछ हो चुका था। जब तक मैं पहुँचा, तब तक दादाजी पापा को समझा चुके थे। मेरे घर आने की खबर सुनकर ही मम्मी की तबियत ठीक होने लगी थी। ऑलमोस्ट सब नॉर्मल हो गया था।” मैंने कहा।

“नहीं यार, उसका क्या हुआ?”

“किसका?”

“वो था न। जिसने तेरी शादी तुड़वाई थी।”

“कौन?”

“अरे यार, वो है न, बड़ा अच्छा-सा नाम है उसका...”

“क्या नाम है?”

“हाँ याद आया— समाज। समाज का क्या हुआ?” फाइनली अमित को उसका नाम याद आ ही गया।

“वो प्रॉब्लम ‘जनरेशन गैप’ की वजह से थी। दादाजी के आने के बाद सॉल्व हो गई।” मैंने बताया।

“मतलब?” अबकी बार सैंडी ने पूछा।

“देख, समझाता हूँ। हर अगली जनरेशन को अपनी पिछली जनरेशन की लगभग हर बात गलत ही लगती है।”

सबने हाँ में सिर हिलाया।

“इसका मतलब यह हुआ कि हर पिछली जनरेशन को अपने से अगली जनरेशन की बात गलत लगती है। इस हिसाब से समाज वाली बात मुझे अच्छी नहीं लग रही थी, पर मेरे पापा को वही सही लगता था और उनकी पिछली जनरेशन यानी दादाजी को भी समाज की

बात अच्छी नहीं लगी। वे यह जानते हैं कि समाज को कैसे हैंडल करना है। बस, उन्होंने मेरे पापा को सब समझा दिया। आखिर उन्हें भी अपने बेटे से प्यार है। वे मान गए और माला को accept कर लिया। सारी समस्या समाप्त।"

"पर समाज को कैसे हैंडल किया?" अमित को अब भी डाउट था।

"खाना खिला के। शादी में आखिर बाहरी लोग क्यों आते हैं— खाना खाने ही ना। बस, दादाजी ने हमारे रिसेप्शन के नाम पर सबको बुलाकर खाना खिला दिया। जब लोगों के पेट भर गयाए, तो मुँह खुलने का सवाल ही पैदा नहीं होता है।" मैंने समाज का सारा गणित उसे समझा दिया।

तभी माला रूम मे आई। उसको देखकर अमित ने पूछा— "कहाँ गई थी दीदी?"

"पिछली बार मम्मी के लिए गिफ्ट में जो साड़ी ली थी, वह उन्हें बहुत पंसद आई। तो अभी वैसी ही एक और साड़ी उन्हें पार्सल करके आ रही हूँ।" माला ने बताया।

"वही गिफ्ट ना, जिसे खरीदने के चक्कर में आप खो गई थीं?" अमित ने याद किया।

"येस, भेरी राइट, भेरी राइट।" माला ने अमित की नकल उतारते हुए कहा।